तुलसी साहिब की शब्दावली

(हाथरस वाले)

भाग २

All Rights Reserved.

प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद–२

सन १९३८]

[मूल्य ३.००

तुलसी साहिब

(हाथरस वाले की)

शब्दावली

भाग २

पद्मसागर सहित

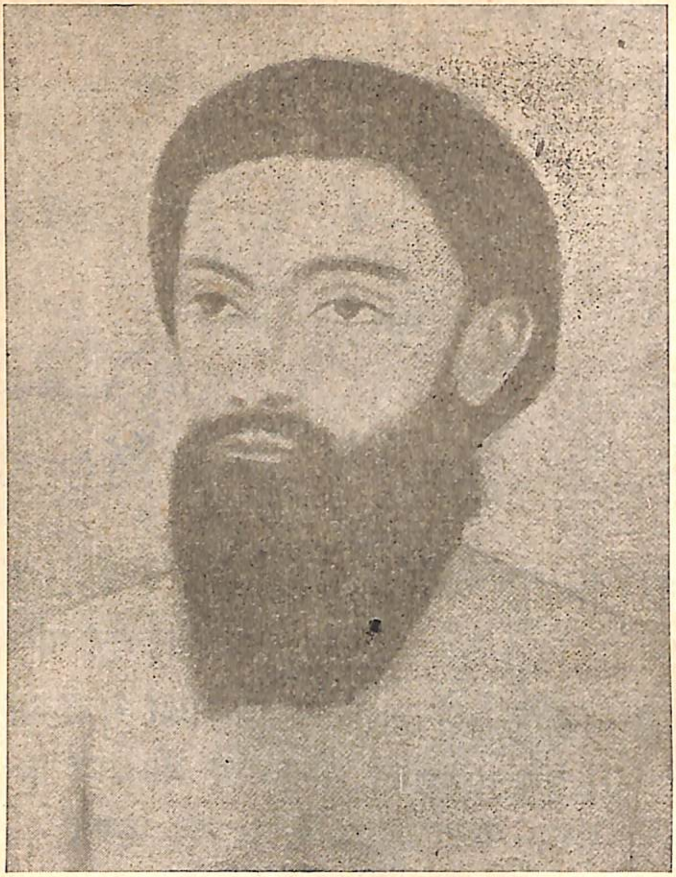
शब्दावली का तीसरा एडिशन दो और प्राचीन लिपियों से जो पहिले छापे के पीछे हाथ आईं बड़े परिश्रम से शोध कर दो भागों में निकाला गया था, और पद्मसागर का छोटा ग्रंथ भी उसी के साथ छापा गया था। यह छठवाँ एडिशन इसी पाँचवें एडिशन का दूसरा छाप है।

मुद्रक व प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद।

छठवाँ एडिशन] सन् १९७८ [मूल्य ३ रु०

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan.

★ सरूप संत तुलसी साहब हाथरस वाले ★



सूचीपत्र

राग	पृष्ठ	राग	पृष्ठ	राग	पृष्ठ
टप्पा	१—१६	बैत	७१—७२	परवंद	१०६—१०७
बरवै	१६—१७	तिल्लाना बिहाग	७२	लटका	१०७—१०९
कलंग राग	१७—१८	मलार	७२—८१	घटवारी	१०९—११०
धमार	१८—२२	मलार इकताला	८१—८४	हिंडोला	११०—११२
होली	२२—३८	ठुमरी	८४—८९	हिंडोला परज	११२
होली मारफत	३८—४३	सोरठ	८९—९६	परज	११२—११४
होली दीपचंदी	४४—४९	बिहाग	९६—१००	पालना	११४—११५
होली तिल्लाना	४९—५८	बिहाग हंसावली	१००—१०१	कमोद	११५—११८
तिल्लाना	५८—६०	परभाती	१०१—१०३	आरती	११८
,,	६०—६१	श्लोक	१०३	गौरी	११९—१२०
,,	६१—६७	यमन ख्याल	१०३—१०४	रारँग	१२१
तिल्लाना धमार	६७—६८	धनासरी ख्याल	१०४	धुरपद	१२१—१२९
तिल्लाना बसंत	६८—६९	हमीर ख्याल	१०५	संगीत	१२९—१३०
तिल्लाना मलार	७०	कानरा ख्याल	१०६	फुटकल	१३०
,,	७०—७१	कहरवा	१०६	पद्मसागर	१३०—१३८

तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली

(भाग २)

॥ टप्पा ॥

(१)

नेहड़ा निहारियाँ प्यारी पिया प्रेम दा ॥ टेक ॥
बिरह बेल चित चीन्ह चमेली, नर तन नरगिस मन मरुवा ।
गो गुन गूँथ सूत स्रुत माला, नौ मन नाफिर गुललाला ।
गुर हिये हरवा सम्हारियाँ ॥ १ ॥
दोहा--चीन्ह चंप रस रीति को, भँवर बास नहिं लेत ।
चेत चलो मन मालती, गूँजे मधुकर हेत ॥ २ ॥
मोरसली मन मोगर कहिये, मन तन बन की फुलवारी ।
न्यारी निरत सुरत के नैना, ऐन चैन लख घर धारी ।
गुर पर तन मन वारियाँ ॥ ३ ॥
दोहा—गगन डोर पद पोढ़ को, सब स्रुति संत समान ।
जान अगम असमान को, कीन्हा बरनि बखान ॥ ४ ॥
करनफूल स्रुत सेत दावदी, गुलाबाँस गुल गुलजारी ।
डारी डगर केल कँवलन की, सुरजमुखी मग चढ़ चारी ।
गुर पिय सँग कर यारियाँ ॥ ५ ॥
दोहा--यार अगम अली देस को, भेष भवन सोइ जाय ।
जिवत मरे फिर फिरि जिवे, पिय पिव अमीं अघाय ॥ ६ ॥
बिरह बंद बस चंद कमोदन, वोदन रवि करि करि कँवला ।
करनफूल करुना गुर केरी, करिया पर बस नेह नवला ।
अस पिय पीर गोहारियाँ ॥ ७ ॥
दोहा—चंदा करन कमोदनी, कवल बिरह रवि रीत ।
सिष्य समझ गुर मिलन की, तुलसी अटपट रीत ॥ ८ ॥

(२)

करि ले री गुइयाँ बदन सँवारिया ॥ टेक ॥
यह तन मन तज तनक बड़ाई, गुर गति मति सत सुरति लगाई ।
अगम अलोक मोष मत मरजें, सरजे सब जग पद पाई ।
सोइयाँ सोइ मदन खुमारियाँ ॥ १ ॥

दोहा--देख दृगन मन मिरग को, छिन छिन छलँग कराय ।
कँवल बास तज भर्म भव, पल पल आवे धाय ॥ २ ॥
प्यारी परख प्रेम के अच्छर, छर तत तन बिच मन मच्छर ।
ऐसा अराम काम करमन के, भर्म भर्म जम भव भच्छर ।
जइयाँ पिव पदन पर वारियाँ ॥ ३ ॥
दोहा--आप अपनपौ परख से, निरखो नैन निहार ।
सार समझ स्रुति संध को, उतरो भवजल पार ॥ ४ ॥
समझ सोच सुन गुन मन प्यारी, धार धरन में दुख पाई ।
आई काल कराल जुगन में, मैं तैं रस बस तरसाई ।
दिस दइयाँ कदम में वारियाँ ॥ ५ ॥
दोहा--करम काल बस जुग भये, दुख सुख भर्म अधार ।
सरम न राखी पीव की, ताते सिर भव भार ॥ ६ ॥
सिष लख लीक सीख सखि हिये में, पीव परख सर समझाई ।
तुलसी तार धार दुरबीना, जीना चढ़ तहँ पिव पाई ।
धोइयाँ सखि मदन खुमारियाँ ॥ ७ ॥
दोहा--सिष्य समझ पिव पद गहो, रहो दुरबीन लगाय ।
जाय जमक जीना लखो, चखो अगम रस खाय ॥ ८ ॥

(३)

साँडी स्रुत सैलों दी अधर अधारियाँ ॥ टेक ॥
नगर नौर इक सहर सिरोमन, भान भवन के पिछवारे ।
पारे परम धाम पद पुरियाँ, कुरियाँ करि करि सम्हारे ।
तारों दी कदर कदारियाँ ॥ १ ॥
दोहा--अधर अलख इक सहर से, न्यारा बरन बखान ॥
जान जनक नृप रीति की, सज्जन सुरति रकान ॥ २ ॥
सीस सरोसर समझ बिचारी, न्यारी करि करि ले लारी ।
गाढ़ी गूढ़ मूढ़ नहिं जाने, माने मन मध अधिकारी ।
सत्त नहिं सधर सधारियाँ ॥ ३ ॥

दोहा-सत सत मत परतीत को, जीत न जाने कोय।
खोय खलक जग पलक में, अलख लखा नहिं सोय ॥ ४ ॥
तुलसी तीर गुरन से पावे, को गावे अड़गुड़ बानी।
जाने सूर मूर मत काढ़े, गाड़ि गगन मन जिन जानी।
पानी पै धर दधारियाँ ॥ ५ ॥

(४)

अरज गुजरियाँ दी मेरे मियाँ प्यारियाँ दी ॥ टेक ॥
दर्द दिवानी अन्न न पानी, बिथा बिरह बस नहिं भावे।
तन बिच पीर धीर नहिं मन को, पिया पिया की रट लावे।
हियों दी मरज निहारियाँ ॥ १ ॥
दोहा--नैन नीर ढुरि ढुरि बहै, गहै न तन मन होस।
दोस कहा कहूँ करम के, मरत पिया के पोस ॥ २ ॥
पिंजर बदन भयो झुरि झुरि के, कोटि कोटि काया गारी।
जरजर चाम हाड़ बिन लोहू, कोऊ कटारी धरि मारी।
जिवों दी हरज सिहारियाँ ॥ ३ ॥
दोहा--पिया पीर दुख दर्द की, का से करूँ गोहार।
मारि कटारी मरि रहूँ, गहूँ बिपत सिर भार ॥ ४ ॥
पिया दरस दुखड़ा जिव तरसे, बरसे अबर हिये दुखदाई।
सैयाँ कसक पीर की बातें, सोइ सोइ तुलसी अस गाई।
कियों दी लरज जियारियाँ ॥ ६ ॥

(५)

पिया मुझे मारियाँ दी, अब न जियोंदियाँ ॥ टेक ॥
कामिनि काज लाज धुर घर की, परखी मति बुधि चित बानी।
जानी जनम जीत की बातें, लातें धरि धरि करि मारी।
जान दे जहर पियोंदियाँ ॥ १ ॥
दोहा--माहुर प्याला घोरि के, पियूँ कटोरा झारि।
नारि कहे मन खसम से, भसम करूँ तन जारि ॥ २ ॥
जुगन जुगन जाहिर भइ जग में, पिता बीर की बदनामी।

पाड़ पड़ोस पास सखियन में, भखिहौं भर भर मन मानी ।
सुन सब कहर कियोंदियाँ ॥ ३ ॥
दोहा--जगत लोग सब सोग को, कहि कहि कहूँ पुकार ।
मार करन की बातियाँ, सो सब सुनो गोहार ॥ ४ ॥
अब तो अरज आस अबिनासी, बासी घर हुइ हूँ दासी ।
फाँसी काल जाल धरि मारी, तारूँ कुल छूटे स्वासी ।
तुलसी कहन कियोंदियाँ ॥ ५ ॥

(६)

पीर बुझाइयाँ प्यारे पिया दीदों दी ॥ टेक ॥
बार बार तन मन बलिहारी, ताप तपन तीनों खोई ।
जोई निरख नैन से प्यारी, दुख सुख सम्पति सब धोई ।
गल बहियाँ धीर सजाइयाँ ॥ १ ॥
दोहा--पिया प्रेम रस रीति की, प्यारी मिलन मिलाप ।
आप अपनपौ खोइ के, तब टूटी तन ताप ॥ २ ॥
नगर नारि ढिंग सहर सेत के, पार पदम धुन सुनि लागी ।
भागी भरम जाल तज डोरी, मोरी सुरति अनुरागी ।
समुँद तीर जुझाइयाँ ॥ ३ ॥
दोहा--सिंध समुँद स्रुत स्याम से, न्यारा सेत ठिकान ।
भान भूमि पर पदम है, जहँ पिया पदम स्थान ॥ ४ ॥
अगम सहर सूरति की बातें, सात समुँद न्यारी बोली ।
खोली खोज चढ़े चढ़ि समता, आदि अंत गति मति तोली ।
सर स्रुत गिरिये गुझाइयाँ ॥ ५ ॥
दोहा--आदि अन्त की सैल को, गुर स्रुति संत लखाव ।
चाव चमक चढ़ गगन में, तुलसी तोल अथाव ॥ ६ ॥

(७)

सैंइयाँ तोरी यादड़ी में बदन बिसारियाँ ॥ टेक ॥
हर दम मेहर हिये में सूरति, मूरति मन तन सब हारी ।

न्यारी नाद साध सुन बानी, जानी जग बस बस भारी।
संध से सब्द सिहारियाँ ॥ १ ॥
दोहा--गगन गरज नित नादड़ी, खड़ी सुरति सुन कान।
मान मनोहर रीति को, समझें चतुर सुजान ॥ २ ॥
धुन सुनि सजी सीस पर सुंदर, हो दर करि करि कर कँवला।
धवला धुरा धोय कर धारी, प्यारी पद पूरन अमला।
चंदा दी जोत निहारियाँ ॥ ३ ॥
दोहा--धुनि सुनि के सम दम लाई, गई गगन के माहिं।
नाहिं रही हिये होस में, सकल सोस नस जायँ ॥ ४ ॥
अरज अली भली भल करि भाखी, राखे रस बस पिउ प्यारी।
सारी समझ सील के साथी, माती रंग रस मतवारी।
फँदोदा फंद निकारियाँ ॥ ५ ॥
दोहा--फंद फाड़ि बाहर गई, लई जो सतगुर बाँह।
जहाँ धूप रबि ससि नहीं, तुलसी पहुँचे ताँह ॥ ६ ॥

(८)

सिकल कराइयाँ पिया हिये नैनों दी ॥ टेक ॥
सिकलीगर गुह सिकल कराई, तन तलवार मलामल जाई।
काई क्रूर दाग अन्दर के, खंदर करके दरसाई।
परखत पिव ले खिराइयाँ ॥ १ ॥
दोहा--मन मरजादा मुसकिला, दीन्हा जौहर निकार।
सार तत्त तन तेल से, छूटे बिकल बिकार ॥ २ ॥
गगन गवन गइ प्रेम प्रीति से, हित चित करके घर धाई।
साईं समझ सुरत की बातें, साथे सूरत अपनाई।
अली अस अकल अराइयाँ ॥ ३ ॥
दोहा--सुन्न द्वार दुरबीन में, भकर सुरति के तार।
पार पदम के कंज में, मंजन निकर निहार ॥ ४ ॥
सतगुर सुरति समझ की साँची, काँची कलमल सब धोई।

सोई जुगन जुगन की जागी, भागी सब रस भव खोई ।
तुलसी दुख ले जशइयाँ ॥ ५ ॥

(९)

अली मुख खेलो सारँग सुधारी, यह दुहेली प्यारी ॥ टेक ॥
भँवर भवन गुंजे री गगन स्यामा धारो री ।
यह बिध कीन्ही साधन प्रीत ॥ १ ॥
अंड अकार नील चक्र चढ़ द्वारे री ।
तुलसी कह दीन्ही यह सब रीत ॥ २ ॥

(१०)

नैनों दे नजारे मारो गोसा तानी वे बिरह[1] बानी ॥ टेक ॥
धनुवाँ बान धनुष सूरति मुख जानो री ।
सो रन दीन्ही यह रन पीठ ॥ १ ॥
सुंदर बन बाट कमठ मग मोड़ो री ।
तुलसी तत तारी यह दुहेली प्यारी ॥ २ ॥

(११)

केहि बिधि कीजे पिया के दीदार, यह दुहेली प्यारी ॥ टेक ॥
ललकित गात बात सुन साधन करो री ।
तन मन सुरति सिधार ॥ १ ॥
राग जगत बैराग बिषय निकारी री ।
तुलसी लख पाऊँ जिया को किदार ॥ २ ॥

(१२)

आली मुख बानी अगम निसानी वो सुजानी जानी ॥ टेक ॥
गोलाकार अकार अंड दिस दस नारी ।
नारी संत बखानी ॥ ३ ॥
तत मत पाँच पिंड करता नहिं रचना री ।
तुलसी अकथ कहानी ॥ २ ॥

(१३)

हेली सुन माहिं धड़कत छाती वो बसाती नाहीं ॥ टेक ॥

---

(१) एक लिपि में "बिरह" की जगह "बिचारे" है ।

बन फल फूल मूल मिल घर पाती री, कुबति करो दिन राती ॥१॥
अब सुन सीख ताक तक सिस्त भरो री, तुलसी अगम घर जाती ॥२॥

(१४)

कौन बिधि कहा करों री दइया, हियरे उठत हिलोर ॥ टेक ॥
पिय की पीर नीर मछरी ज्यों, मैं तड़फों बिन तोर ॥ १ ॥
तुलसी मौत देवे बिरहन को, जियरा सहे दुख मोर ॥ २ ॥

(१५)

बहुर मोरी कौन सुने रे सैयाँ, दुख जग में घनघोर ॥ टेक ॥
बिष की बेल बढ़ी करमन से, यह पापी मन चोर ॥ १ ॥
तुम बिन बिदित करे को तुलसी, पावे न ठीका ठौर ॥ २ ॥

(१६)

नैना बिन चैन नहिं पिया, बिरह लागो दुख देन ॥ टेक ॥
गुर की मेहर बिना दुख जिय के, वे दरसावें ऐन ॥ १ ॥
तुलसी सुरत बाट सुन्दर में, जो कोइ माने कहन ॥ २ ॥

(१७)

सुरत मोरी छाय रही री गुइयाँ, गगना में करत किलोल ॥टेक॥
निरखत नैन खुले नेहड़े के, मगन मधुर सुन बोल ॥ १ ॥
गाउँ री गवन भवन तुलसी का, अधर अकंथ अमोल ॥ २ ॥

(१८)

मुकर चढ़ि झाँक रही रे सैयाँ, सूरज किरन करोड़ ॥ टेक ॥
पूरन ब्रह्म कहत पद जा को, जहँ रजनी नहिं भोर ॥ १ ॥
अमर अखंड बिदेह बिराजत, तुलसी मोर न तोर ॥ २ ॥

(१९)

गुमठिया गैल दरसानी, जानी हो खेली अलबेली ॥ टेक ॥
अड़बड़ आठ पहर अरथाइलो, अष्ट कँवल को धर ध्यानी ।
एरी सत मत हेली हठ मानी ॥ १ ॥
सुरत मतवाली आली हरख पठाइलो ।
भँवर भवन ये रीत सानी, तुलसी अटपट फैली बयानी ॥ २ ॥

(२०)

सुरतिया एरी नभ छाई, आई हो सुन्न में बोल ॥ टेक ॥

भामिन भमन ममन मन भइलो, दस दिस देखि दृगन दरसइलो ।१।
बिरह बेत एजी उठ बानी, तुलसी तन मन गगन समाई ॥२॥

(२१)

रूप दे रस रहदा गंदे ॥ टेक ॥
यह अंग अगिन जरे मन मूरख, बारू बदन बनाया वे ।
धाया कीट करम रंजक तन, भट्ठा बुरज उड़ाया वे ॥
ज्यों काया महताब हवाई, जल बल खाक मिलाई ।
जम की जाल जबर नहिं छूटे, छूटे अंग इलाही ॥ १ ॥
खाविंद का कर खोज खदी कुल, खिलकत खोज न पाया वे ।
पैदा किया खाक से पुतले, यारी यार भुलाया वे ॥
सब जहान दोजख दुनियाई, साहिब सुधि बिसराई ।
जब लेखा लें ज्वाब फिरस्ते, हाजिर होस हिराई ॥ २ ॥
गाफिल गुनह गजब की बातैं, कुछ फहमीद न लाया वे ।
आतस हवा जिमीं जिन कीन्हो, आब और ताव बनाया वे ।
मालिक मल मेहर बिसराई, आलिम इलम सोहाई ।
आदम बदन बनाया जिनने, उनका कुफर कहाई ॥ ३ ॥
खिलकत फना फिरे दोजख में, यों कुफरान कहाया वे ।
भिस्त राह बुजुरुग बतलाव, सो कुछ ख्याल न लाया वे ।
हकताला[1] कर पेच पसारा, तुलसी पकड़ मँगाई ।
तोबा तोब गले नहि फुरसत, मुरसिद यों समझाई ॥ ४ ॥

(२२)

नाम दी रटि ले रे बंदे ॥ टेक ॥
अजब खवारी खलक खेल में, खूबी खूब बनाई वे ।
नूर जहूर हाल से वाकिफ, रहबर[2] रमक जनाई वे ॥
फादे फजल फरक फहमीदे, इल्लति दूर बहाई ।
कहर कुफर काफर कूँ बूझा, जुलमो राह छुड़ाई ॥ १ ॥
रजा मेहर मुरसिद मालिक की, चौखट चमक चिनाही वे ।

(१) सर्वोपरि स्वामी । (२) गुरू ।

चौबारे के निकर निसाने, दीन्हा अलफ लखाई वे ॥
अन्दर अबर पार पौड़ी के, डोरी डगर लगाई ।
जो कामिल उस्ताद अरस के, असली ऐन बताई ॥ २ ॥
लासरीक[1] अल्ला आलम से, कीन्ही सफर सफाई वे ।
पर बिन परा करी असवारी, मेहर इनायत[2] पाई वे ॥
मूल झलक झरने के ऊपर, सन्मुख मुकर मझाई ।
सँग महबूब खड़ी खाहिस कर, रूह में रूह मिलाई ॥ ३ ॥
पल पल प्रेम प्यास प्रीतम ने, नैनों नजर छकाई वे ।
अधर नीर अमृत की धारा, दीन्ही नदी बहाई वे ॥
प्यारे पुरुष यार आसिक ने, लीन्ही अंग लगाई ।
तुलसी ताके नैन झरोखे, नूरी छबि दिखलाई ॥ ४ ॥

(२३)

भृङ्ग दी गति गहो रे बंदे ॥ टेक ॥
कीन्ही कीट कर्म से कीड़ा, भृङ्गी नाम सुनाया वे ।
सरवन सब्द नाद जब निरखा, अपना रूप बनाया वे ॥
यहि बिधि संत अंत मत मारग, अन्दर अधर मिलाया ।
सादर सुत मरत को तजि के, भज भव भर्म छुड़ाया ॥ १ ॥
सतगुरु दया भया मन दृढ़ के, जब हिये हर्ष जुड़ाया वे ।
सिंध बिच बुन्द धसा सुन्दर में, आपहि आप कहाया वे ॥
मेहर मलूक ऊख रस प्याला, मुरसिद घोट पिलाया ।
अन्दर अमल अरस में भीने, हो आसिक अस आया ॥ २ ॥
भृङ्गी कहन कीट नहिं माने, मूरख मर्म न पाया वे ।
सतसँग समझ रमज नहिं बूझो, जुग जुग जन्म बुड़ाया वे ॥
अन्ध असार सार सुधि भूले, पार परख नहिं पाया ।
जग रस रंग संग में उरझे, बादे जन्म गँवाया ॥ ३ ॥
अलल पच्छ पच्छिम के माहीं, उलट अकास समाया वे ।

(१) जिसका कोई साझी नहीं है । (२) दया ।

भुइँ पर आय धाय धुर पहुँचा, जब अपनी सुधि लाया वे ।
जब परिवार परख घर अपना, सुत पित मात समाया ।
जीव तजे जड़ताई तुलसी, जब वह ब्रह्म कहाया ॥ ४ ॥

(२४)

दृग नैनन बिच बाट अटारी ॥ टेक ॥
सूरति चटक चली नभ ऊपर, नित नित सैल सँवारी ॥ १ ॥
सतगुर अधर अगम अति सागर, चढ़ि चढ़ि निरख निहारी ॥ २ ॥
सुखमन घाट सुन्न मत मारग, पाया पुरुष अपारी ॥ ३ ॥
मिलि ले लार पार परदे बिच, अन्त पुनि आदि अगारी ॥ ४ ॥
प्रति प्रति प्रीति परम पद पूरन, भई सत संत अधारी ॥ ५ ॥
सत सतसंग बिमल मति न्यारी, सूरति सुख सुख भयो भारी ॥ ६ ॥
यह जग अन्ध धुन्ध भव सागर, भूले बहुत अनारी ॥ ७ ॥
तुलसीदास आस सतगुर की, सन्त चरन बलिहारी ॥ ८ ॥

(२५)

चरनन हित चेत सिधारी ॥ टेक ॥
दीदा दरस परस पद सीतल, भव कृत कर्म बिसारी ॥ १ ॥
यह जग जाल काल कुल काया, माया मदन बिचारी ॥ २ ॥
यह तन झूँठ छूट छर छाया, निरख निकर होय न्यारी ॥ ३ ॥
यह मत मान जान जिव कारज, स्वारथ सुरति निकारी ॥ ४ ॥
तुलसी तत्त मत्त सत मारग[1], आगर अरध उधारी ॥ ५ ॥

(२६)

प्यारे पिया परदेस हो गुइयाँ री ॥ टेक ॥
सइयाँ देस बिदेस बिरानी, का से मैं कहो री सँदेसा ॥ १ ॥
कौन उपाव करों मोरी सजनी, करिहों मैं जोगिन भेसा ॥ २ ॥
हिये नहिं चैन रैन नहिं निद्रा, बिरह बिथा तन लेसा ॥ ३ ॥
भेजों भौन कौन बिधि पाती, गानी गुन उपदेसा ॥ ४ ॥
तुलसी निरखि जात नर देही, जोबन गये अली ऐसा ॥ ५ ॥

(१) एक लिपि में "सागर" है ।

(२७)

प्यारे पीर तड़फ हो जियरा ॥ टेक ॥
नैन बेचैन बहे जल नोरा, हर दम हिये री धड़का ॥ १ ॥
कजरा बिंदुली न सिंदुरवा सुहावे, अँगिया का बँद तड़का ॥ २ ॥
जस जल रहन कहन कहु कछुवा, अँड सम सूरति खड़का ॥ ३ ॥
अरी बेहाल बिलख बिन सइयाँ, रहो मत मौन मड़का ॥ ४ ॥
तुलसी सतगुर भेद लखाई, पावे सूरति सड़का ॥ ५ ॥

(२८)

प्यारी सतगुर ने दीन्हा भेद, जहँ सुन्न न स्वासा बेद ॥ टेक ॥
पाँच तत्त तन मन नहीं, काया करम न खेद ।
जाव जनम मरना नहीं, नहिं बन्धन नहिं कैद ॥ १ ॥
सुरति सिखर अंदर धसो, आली अधर अनी नभ छेद ।
ता बिच पैठ निहारि के, जहँ अद्भुत अलख[1] अभेद ॥ २ ॥
गद्दी गुमठ के द्वार को, जिमि फाटक तोड़त गेंद ।
मूरति में सूरति भरी, मानो पोहप मोती बेध ॥ ३ ॥
गगन गली गरजत चली, अली उर हिये हरष उमेद ।
तुलसी घट परिचय भई, जहँ बीज बृच्छ नापैद ॥ ४ ॥

(२९)

प्रीतम प्रीति लगन मन फसियाँ ॥ टेक ॥
निरखत नैन चैन चितवन में, दीप दृगन चढ़ि चसियाँ ॥१॥
पल पल लगन लगी वोहि मारग, सुरति सिखर पर बसियाँ ॥२॥
दृढ़ करि डोर पोढ़ पद परखो, लखि गुर गगन परसियाँ ॥३॥
तुलसी तलब तलासी पावे, धार अधर धर धसियाँ ॥४॥

(३०)

तिल दे अन्दर मिलदा यार, अरस अवाजा ॥ टेक ॥
गगन मगन अमल अधर, गुन हटावत नैन नगर ।
अदली अबर खोज ले खबर, मंदर में बिराजा ॥ १ ॥

---

(1) एक लिपि में "अलभ" है।

अनँद सनँद घुमर घोर, धुन उठावत बिमल ठौर।
धवल पदर परख परख, सुन्दर में समा जा ॥ २ ॥
सबर जिगर लखन लोक, पुनि सुनावत निगम नोक।
निरत नैन सुरत पैन, झमक में झमा जा ॥ ३ ॥
तुलसी लख तक न बोल, भर्म भुलावत मग अतोल।
अजर आज फिर न काज, खिड़की खुला जा ॥ ४ ॥

(३१)

जमदा जुलम दम दे द्वार डगर बचा जा ॥ टेक ॥
सहस गुञ्जार भँवर गुञ्ज, पवन चढ़ावत अधर पुञ्ज।
सेत फोड़ गगन मगन, नगन हो चला जा ॥ १ ॥
जैमन चंद केत सूर, येही भुलावत जुगन मूर।
जुगल बाट घर न घाट, गाँठ गुन गसा जा ॥ २ ॥
जड़न चेतन गाँठ खोल, जाही से पड़ी न परख तोल।
भरम करम जुगन जीव, जोनि में परा जा ॥ ३ ॥
गुर सनंद बिन अनंद, छूटत नहिं नरक फंद।
सुरत साफ कर मिलाप, सब्द में समा जा ॥ ४ ॥
सब्द सब्द भेद चीन्ह, जैमन जम के अधीन।
ओअं सब्द निरंकार, जाल से न भाजा ॥ ५ ॥
भुगतत सब सृष्टि भोग, ... ।
तन मन बैराट मनुष, नैन में निवा जा ॥ ६ ॥
आवा गवन गुन की गैल, जैमन जिन कीन्ह सैल।
सरगुन मन गो निवास, गरभ में बिराजा ॥ ७ ॥
केत लगन सब्द पवन, अनहद सुन भवत भवन।
चंद सूर स्वास फेर, फाँस में फसा जा ॥ ८ ॥
रवि ससि अँड अगिन बास, पौन पानी पिरथी अकास।
जैमन केत रहत कहाँ, खोज को लगा जा ॥ ९ ॥
नेह तत दरबार बूझ, जा से परत समझ सूझ।
चरन चिन्ह बिन अकास, आस का उड़ा जा ॥ १० ॥

बिगर संत नहिन अन्त, पावत नहिं डगर पंथ।
मेहर मूल लख अतूल, लगन को लगा जा ॥११॥
सुन को सब्द बेहद नगर, सतगुर की गैल डगर।
पावे सुत सुन बिलास, अगम की अवाजा ॥१२॥
तुलसी तन्त लख बृतन्त, यहि बिधि सब कहत संत।
संगत कर खोज रोज, साध की समाजा ॥१३॥

(३२)

साँडे नाल तैडियाँ महबूब ॥ टेक ॥
मंडप महलाँ वे आवे अबे छुप बैठा मियाँ।
तेरी कुरबानी जाऊँ खूब ॥ १ ॥
तुलसी एक नालाइक बन्दा मियाँ।
फजली अहल अजूब ॥ २ ॥

(३३)

साँडे नाल कीदियाँ वे दिलदार ॥ टेक ॥
तेरी तौ खातर सानूँ बन बन ढूँढ़ा मियाँ।
मिले गुर दीद तिल तार ॥ १ ॥
दिल दधि दा मथना कीदा मियाँ।
तुलसी दा रूह लोलार ॥ २ ॥

(३४)

कहाँ सब रहदाँ वे सानू यार तैंडे।
महबूब तलासी में करदो वे ॥ टेक ॥
दर्द दीदारों का दर्द दिलों में वे।
तड़फ हियों दे मैंडे हर दम उठदी वे ॥ १ ॥
तुलसी सब्द तन तीर खटकदा वे।
अंदर में मैंडो भाल कसकदी वे ॥ २ ॥

(३५)

सानू कित होदा वे, साडे नाल ढूँढत देस।
डगर बिसराँदी वे ॥ टेक ॥
पतियाँ लिखों वे तैंडा भेद भुलाँदी वे।

मारग तुझ नू मैं खोज हिराँदी वे ॥ १ ॥
सुकर गुजारूँदा दोद दरगाह में वे।
जट्टी दिल दर्द अरज गुजराँदी वे ॥ २ ॥
मैंडी तो पुकार पंथ दा मिलना वे।
तुलसी तन ब्याकुल पीर पिव दी वे ॥ ३ ॥

(३६)

लाज कहा कीजे री, घूँघट खोलो आज ॥ टेक ॥
लाजहि लाज अकाज भयो है, सुन्दर यह तन साज ॥ १ ॥
सब तन अंग निहंग निहारे, परदे प्रगट बिराज ॥ २ ॥
स्वामी सब अंतरगति जाने, ब्याकुल सकल समाज ॥ ३ ॥
तुलसी तन मन बदन सम्हारो, सोई साहिब सिरताज ॥ ४ ॥

(३७)

बात वोहि कीजे री, जेहि बिधि आवे हाथ ॥ टेक ॥
मन गुन प्रान पतंग उड़ावत, नैन निरंजन साथ ॥ १ ॥
जिन जग में भवजाल पसारा, जोव बिबस बिष खात ॥ २ ॥
माने न हटक कहन काहू की, मैं बूड़त उतरात ॥ ३ ॥
यह मन नीर मिरग त्रिसना को, बिन जल तरँग समात ॥ ४ ॥
और उपाव करे बहुतेरे, सतगुरु कूँ पतियात ॥ ५ ॥
तुलसी दर्द घटे यहि भाँती, औषध से दुख जात ॥ ६ ॥

(३८)

प्रीतम प्रान नैनों बिच बसे री ॥ टेक ॥
टेढ़ी तनक मगन मन मारग, बंधन बेद बेचैन ॥ १ ॥
गो गुन गढ़न बदन बैराटा, बुझै न करतब कहेन ॥ २ ॥
सतसँग रंग रीति नहिं जाने, माने न सतगुर बैन ॥ ३ ॥
यह जम जाल जुलम अति दारुन, तुलसी तिमर तन पैन ॥ ४ ॥

राग बरवै

(१)

कोई साधो संतो सुरति लखाय दीजो रे ॥ टेक ॥
अधर अगम रस रीति की रे, बूटी देउँ बताय ।

जनम मरन छूटे सोई रे, घूँटी देउँ पियाय ॥ १ ॥
घाट बाट ब्रह्मंड की रे, पता न जानूँ भेद ।
सतगुर के परचे बिना रे, भई करम की खेद ॥ २ ॥
नाव पुरानी केवट मन रे, बिष रस भया अलीन ।
सिंध समुँद दरियाव में रे, डार भँवर बिच दीन्ह ॥ ३ ॥
मन तन मूरख मूढ़ की रे, गढ़ गलो गति गाय ।
जाय गुरन सतसँग करे रे, जब थिर थोब थिराय ॥ ४ ॥
अधर भूमि पिय पार की रे, दीजो लखन लखाय ।
दाँव देह अबकी मिली रे, सो उतरो अगम अथाह ॥ ५ ॥
तुलसी नीच निहारि के रे, बीच न राखो कोय ।
सरन बरन बरवे कही रे, होनी होय सो होय ॥ ६ ॥

(२)

दया कीन्ह सूरज किरन कियो भास ॥ टेक ॥
गगन मँडल मंदर नहीं रे, जब नहिं जिमीं अकास ।
ससी सूर जब ना हते, जब रबि कीन्हा बास ॥ १ ॥
पुरुष तेज रबि मद्ध में, कस कस उतरो आय ।
जब अकाय कहो कह रहे, जिन काया कीन्ह बनाय ॥ २ ॥
जल पावक और पवन को, कीन्हो कौन बिधान ।
जीव तत्त तन पाँच में, कस कस आयो निदान ॥ ३ ॥
सतगुर से चेला भयो, गयो छूट घर धाम ।
नाम बिना भटकत फिरे, एक अनेकन ठाम ॥ ४ ॥
तुलसी तोल अतोल, बूझि संत कोइ पद लखे ।
चखे अधर रस मूल, जो अमोल हिये में पके ॥ ५ ॥

॥ राग कलंग ॥

(१)

ले लो लोचन चीन्ह एरी लै लो ॥ टेक ॥
निज अनरूप दरस दरपन में, दृष्टि को मिलाप करिये ।
कँवल केल सूरज मुख मेलो खेलो ॥१॥

मंदर मठ सुमिरन सुन्दर में, घट बिलोकि लखिये ।
पदम पार जगमग उजियेलो गैलो ॥ २ ॥
पूरन पुरुष पाखड़ी अंदर, अज अधार चलिये ।
सेत घाट सूरत झकझेलो पेलो ॥ ३ ॥
तुलसी तोल अतोल अधर घर, सत्त को सरूप धरिये ।
पद मिलाप धुर गुर मिलि चेलो भैलो ॥ ४ ॥

(२)

एरो दीदे नदीदे दरस बिना ॥ टेक ॥
भटकत भँवर पिया बिन प्यारी ।
तोल के तहकीक कीन्हा बिषय बास ।
मन भव रस बीधे गोधे ॥ १ ॥
बद मलोन पल पल में धावत ।
हटक न माने मोरी ।
चलै कुपंथ नहिं मारग सीधे गीधे ॥ २ ॥
बारम्बार कहन नहिं माने ।
अरे अचेत नर नहीं सुधार ।
सूरत रस होदे पोदे ॥ ३ ॥
तुलसीदास आस अपने में ।
रूप में अरूप चीन्हे ।
बिन दीदार कारज नहिं जीदे कीदे ॥ ४ ॥

॥ धमार ॥

(१)

अहो बस कान्हा गो माहीं हो ॥ टेक ॥
गो की गोप करम कही ऊधो, गुन सँग गैल गुवाल ।
नित नित चाल चलै मधुबन की, इन्द्री रस खान बसाई ॥ १ ॥
अच्छर रमत राह भई राधे, नंद नाद सुत कान्ह ।
खेलत खेल मेल फरफूँदी, बूँदी तन रुचि सुहाई ॥ २ ॥
सब बृज बनिता बिंद बन कीन्हा, जसुमत सोमत जान ।

जो जस बुन्द सिंध में आये, ता की करि खोज लगाई ॥ ३ ॥
अरी अरजुन भव खान भीम बस, नकुल भये जग आई ।
सहदेव देह देख आपन को, दो दृष्टि दो दृष्टि लखाई ॥ ४ ॥
सूर सुधार पार तोहि कीन्हा, सुन बिधि बात बिचार ।
छूटै मान खान चौरासी, सूरत सत द्वार लगाई ॥ ५ ॥
तुलसी तोल बोल मन भूला, मूल मरम नहिं जान ।
मन गुन ग्वाल गोप गोपी सम, नित नित बिधि भवन समाई ॥ ६ ॥

(२)

अहो सत सुरत सहेली खुल खेली हो ॥ टेक ॥
गरज घुमर घनघोर सोर सखि, घट पट चटक चढ़ाई ।
पल पल पलक पार दल अंदर, चितवत नैन पट पेली ॥ १ ॥
घर घर से सब गवन सुहागिल, भेंट भवन सब आईं ।
जिन मोहिं गैल सैल समुँदर की, कीन्ही दृढ़ भान से भेली ॥ २ ॥
गगन गिरा गुन गाँठ छुड़ाई, भिन भिन बाट बताई ।
सूरत सब्द समझ सुन माहीं, भइ गुर मारग चेली ॥ ३ ॥
मैं मतिमंद फंद फँसी खाना, जाना न भेद भुलाई ।
बिष रस बिषम बिषय मन माहीं, धोई तुलसी बुधि मैली ॥ ४ ॥

(३)

अहो रँग राती रँगीली रस माती हो ॥ टेक ॥
सजत सिंगार सार सुख सागर, दुख सुख दूर बहाई ।
चढ़ि कर महल टहल सतगुर की, निरखा भिनि भिनि पिय भाँती ॥ १ ॥
पिय पद परस पलँग पिउ प्यारी, सब बिधि सेज सम्हार ।
रस कस समझ सुरत पिया पद को, मो सों कछु कहत न जाती ॥ २ ॥
रैन चैन रस रीत जीत करि, नित नित सैल सुनाई ।
जोइ जोइ सखियाँ समझ घर आई, कीन्हा पिय के सुख साथी ॥ ३ ॥
तुलसी पोढ़ जोड़ सम सूरत, सोइ सोइ भेद लखाई ।
जो बेमुखी दुखी दुनियाँ में, जुग जुग जम मारत लाती ॥ ४ ॥

(४)

अहो नभ निरख निहारी पिउ प्यारी हो ॥ टेक ॥
सेत बरन सम सुरत समानी, कारे कँवल निकार।
पारे पवन भवन सुत लागी, भागी भिन सबद बिचारी ॥ १ ॥
दल पर नल निज नन नगर में, चली चढ़ सुन्न मँझार।
लै की लगन जाय जिन साजी, भाजी लखि लोक निनार ॥ २ ॥
नल की नाल चाल चींटी सम, भँवर गुफा सम धाम।
ता के पार परम पद देखा, लेखा निज जनम सुखारी ॥ ३ ॥
मिलन मिलाप साफ सुत घर में, सर सम सब्द सुधार।
सार समझ सुन मारग आई, तुलसी चढ़ि सुरत हमारी ॥ ४ ॥

(५)

अहो अज आदि अतूला पद मला हो ॥ टेक ॥
भवन चतुरदस से पद न्यारा, निरगुन जोत न जाई।
सुन्न न गगन धरन नहिं तारा, न्यारा कँवल कहुँ फूला ॥ १ ॥
रवि नहिं चंद फटक उजियारा, खुल गये अजर किवाड़।
महल माहिं सुनि धुन धधकारी, या से न्यारी चढ़ि झूला ॥ २ ॥
सब्द न सार लार नहिं सूरति, मूरति मन नहिं जाई।
जहँ रहें संत अंत कछु नाहीं, औघट घाट खिड़की खोला ॥ ३ ॥
अगम अपार पार कहा गाऊँ, जाऊँ नित नित धाय।
कंथ को पंथ बेअन्त बिचारो, जिमि फाटक पर गज हूला ॥ ४ ॥
तुलसी तोल बोल नहिं आवे, जावे जो देत जनाई।
गूढ़ गुप्त परगट नहिं खोली, गावत सब्दन सँग भूला ॥ ५ ॥

(६)

अहो सतसंग अमोला जिन तोला हो ॥ टेक ॥
करि करि संग रंग नहिं जाना, कित बदरी कित काल।
हाल के हेत हरख सब भूले, या से परिहै झकझोला ॥ १ ॥
कहि कहि अन्त संत सब हारे, बूझैं न सब्द सुधार।
पर की खबर सुनत उठि भागे, लागे जिमि माँगत मोला ॥ २ ॥

नहिं कछु दाम धाम धन माँगें, करि पर हेत सुनावें ।
लेत न देत हेत साईं के, परमारथ की गाँठ खोला ॥ ३ ॥
सुनत सुनाय गाय बहु भाँती, साधो न समझ बिचार ।
कस कस जार लार भव छूटे, लूटे जम जानत पोला ॥ ४ ॥
तुलसी समझ कूर कूकर सम, छाड़े न सूकर चाल ।
ता से बेहाल काल नित मारे, पारे पद चीन्ह न चोला ॥ ५ ॥

(७)

अहो सतसंग समाना जिन जाना हो ॥ टेक ॥
सतगुर मरम भरम गढ़ तोड़े, मोड़ भये मन दीन ।
लीन्हे चरन सरन सतगुर के, भीने रस रीति सिराना ॥ १ ॥
जिन के इस्क इष्ट संतन को, प्रति प्रति दरसन लार ।
पार का सार धार दरसावें, दुख छूटत भव भ्रम खाना ॥ २ ॥
दरस परस मन मंजन पाना, सूरत रुचिर निकार ।
देत निहारि ताल कर कूँची, ऊगे निरखत घट भाना ॥ ३ ॥
उमँगी लहर सहर सूरत की, लखि लखि अगड अकार ।
चढ़ि चढ़ि चटक फटक उजियारो, तुलसी निज निरख ठिकाना ॥ ४ ॥

(८)

अहो मन भरम भुलाया बिष खाना हो ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तीस तेंतीसा, तिन की तरँग तुलाई ।
जाय जो जोनि भवन चौरासी, बासी बस बास निदाना ॥ १ ॥
ज्ञान न ध्यान जान नहिं माने, मन मत की दिस जाई ।
ता से करम ईस सिर ऊपर, बाँधत जग जग फिर ताना ॥ २ ॥
तपन सिला जिय तपन जरावे, तड़फ तड़फ दुख पाई ।
वा बिधि वक्त सखत कहि गाऊँ, जाने जोइ भोग समाना ॥ ३ ॥
तुलसी आज काज नर देही, फिर नहिं नर तन हाथ ।
सोवत खात सैन सुख माहीं, बिनसे घट बीत सिराना ॥ ४ ॥

(९)

अहो आली होरी लख बौरी हो ॥ टेक ॥

सूरत रंग रँगो मन केसर, लै पच पाँच निकार ।
सखिया पचीस पकड़ि पिचकारी, मारो मन को मुख मोड़ो ॥ १ ॥
भरम अबीर गुलाल गुनन को, कर सतसंग उड़ाई ।
ज्ञान को छान छड़ी भर सूरत, सन्मुख नैना नित जोड़ी ॥ २ ॥
चोवा चित्त अरगजा आसा, कुमकुम कुमति बिसार ।
धरि धरि धूर कूड़ सब काढ़ो, करमन कर कीचड़ धो री ॥ ३ ॥
नर तन नगर बिंद बिंदाबन, तन मन चीन्ह बिहार ।
होरी अङ्ग भंग करि जानो, तुलसी सज साज मिलो री ॥ ४ ॥

॥ होली ॥

(१)

पानी में मीन पियासी, कोइ जानत संत बिलासी ॥ टेक ॥
ससि सम अगिन सूर सम सीतल, जहँ नहिं तत्त निवासी ।
जल बिच अगिनि ताल बिच तारे, ज्ञानी गुन गन बासी ॥ १ ॥
जग में बन्द फंद सब फैला, माया मन की दासी ।
बिधि बैराट ठाट सब उरझा, डाल गले बिच फाँसी ॥ २ ॥
परमहंस बैरागि गुसाईं, मानी जोग सन्यासी ।
यह जग जाल काल बिलछानी, सब जग जात निरासी ॥ ३ ॥
सतसँग सार लार संतन के, सतगुर चरन निवासी ।
तुलसी तरक फरक घर ध्यानी, तब पाया अबिनासी ॥ ४ ॥

(२)

देखा बिधि बाग बिलासा, ता में तरु ताल तमासा री ॥टेक॥
अनि अनि बिटप बेल बन फूले, कंजा कँवल निवासा ।
नाना गंध सुगँध सुखकारी, भृङ्गी भँवर हुलासा री ॥ १ ॥
दादुर मोर घोर घन छाये, खग पंछी बृछ बासा ।
यह घट मूल फूल फुलवारी, तो निरखा खेल खुलासा री ॥ २ ॥
सतगुर ने दल कँवल लखाये, काटे करम निरासा ।
सूरत दौड़ि फोड़ि दस द्वारे, दीन्ही पुरुष दिलासा री ॥ ३ ॥
तुलसी सैल महल घर अपने, आई पिय पद पासा री ।
हिलिमिलि प्यार दियो सुखसागर, मिटिगइ जग अभिलाषा री ॥४॥

(३)

तन में तत मूल समाना, सब खोजत बेद पुराना री ॥ टेक ॥
यह तन में ब्रह्मंड बखाना, भाखत संत सुजाना ।
परमहंस बैरागि गुसाईं, सब ढूँढ़त भेष भुलाना री ॥ १ ॥
ऋषी मुनी अवधूत मिले सब, भाखें सास्त्र पुराना ।
ता में भूलि पड़े जग पंडित, सब करि करि कुल अभिमाना री ॥२॥
तिरथ बरत पुन दान दृढ़ाया, दुनियाँ दिल उरझाना ।
करि अस्नान महातम भाखा, सब ता ते लेत कुधाना री ॥ ३ ॥
बन्धन धरम करम करि बूड़े, लगे न एक ठिकाना ।
यह गति जगत जीव चौरासी, भूलि परे सब खाना री ॥ ४ ॥
तुलसी अन्त संत कोइ पावे, छूटा जग जिव जाना री ।
पंडित भेष टेक मद माते, यह सब फैल फुलाना री ॥ ५ ॥

(४)

सब जब बिधि बेद बुड़ाया, या से कोइ पार न पाया री ॥ टेक ॥
कहत बेद इतिहास पुराना, स्रुति सब नेत सुनाया ।
सिम्रित समझि बूझि सोइ भाखा, सोइ स्रुति ने साफ उड़ाया री॥ १॥
बिधि बेदांत ब्रह्म बतलाया, परमहंस मत भाया ।
निरंकाल काल जग डारा, सोइ काल को ब्रह्म बताया री ॥२॥
दीनदयाल काल से न्यारा, सो कोइ संतन पाया ।
जोगी परमहंस भ्रम भूले, सोइ नाहक मूड़ मुड़ाया री ॥३॥
जग संसार लार सब लागा, तीरथ बरत दृढ़ाया ।
निरंकाल काल को थापा, पद पुरुष की राह छुड़ाया री ॥४॥
तजि कोपीन चीन्ह चित नाहीं, जड़ बस ब्रह्म बँधाया ।
छूटे गाँठ बाट तब पावे, मिलि सतगुरु गगन फोड़ाया री ॥५॥
दसवें द्वार पार चढ़ि सूरत, तब बिधि ब्रह्म कहाया ।
सास्तर बेद[1] ज्ञान सब झूठे, जड़ इन्द्री मिलि मन माया री ॥६॥

(१) एक लिपि में "बेद" की जगह "बैन" है ।

मन को ब्रह्म भाव कर गाया, बालक रूप बताया ।
जग सब झूठ लूटि करि खाया, धृग पिंड पेट बढ़ाया री ॥७॥
पंडित कूड़ मूढ़ नहिं जाने, पढ़ि पढ़ि जनम गँवाया ।
बेद बिबाद उपाधि लगाया, तुलसी तन तार तुड़ाया री ॥८॥

(५)

साधू मति बेद न पाया, निरंकार अकार न माया ॥ टेक ॥
काले जाल निरंकार कहावे, या को नेत गुहराया ।
संतन पंथ अंत मति न्यारा, जिन आदि अनादि सुनाया ॥ १ ॥
पाँच तत्त बैराट बनाया, पिरथी जल पवन समाया ।
अगिनि अकास भास मिलि पाँचो, सो यहि बिधि अंड कहाया॥ २ ॥
निरंकार आकार भया जब, या से उपजी माया ।
बन ब्रह्मंड अण्ड सब कीन्हा, रज तम सत उपजाया ॥ ३ ॥
ब्रह्मा बिस्नु नाम गुन केरा, सरगुन गाँट बँधाया ।
सास्त्र पुरान कीन्ह मुनि कारन, बिधि ब्रह्मा ने बेद चलाया ॥ ४ ॥
रच्यो बैराट स्वास बिधि ब्रह्मा, नाद से बेद कहाया ।
नाभी कँवल खोजि पचि हारे, सोइ ब्रह्मा आप हिराया ॥ ५ ॥
अंड ब्रह्मंड तत्त नहिं कीन्हा, नहिं बैराट न काया ।
जब का अन्त संत समझावें, सोइ तुलसी संत सुनाया ॥ ६ ॥

(६)

साधू मत मूल बखानी, कँवला दल सहस समानी ॥ टेक ॥
सूरत अष्ट कँवल दल दौड़ी, फोड़ा गगन रकाना ।
सिंधा सरक फरक भइ न्यारी, चढ़ि दल चार पिछानी ॥ १ ॥
ता में सैल खेल लखि भाखो, अंडा अलख निसानी ।
चल दल कँवल जुगल जस गाऊँ, सतगुरु दमक दिखानी ॥ २ ॥
पिंड ब्रह्मंड निरखि लखि पारा, आगे अगम अनामी ।
निरगुन पार ब्रह्म नहिं जावे, संतन सो मति मानी ॥ ३ ॥
तज करि कहर मेहर घर अपने, महल मझब[1] जब जानी ।
पाया पुरुष पलँग लगि बैठी, लिपटी तज लाज निदानी ॥ ४ ॥

---

(१) मजहब, मति ।

तुलसी बेद पुरान ग्यान सब, तजि घर घाट समानी।
सूरत धाय पाय पिउ प्यारे, छानी दूध और पानी ॥ ५ ॥

(७)

नर से निकसी इक नारी, कोइ बूझैं साध बिचारी ॥ टेक ॥
हाथ न पाँव सीस नहिं काया, खाया सब जग झारी।
माई न बाप आप से उपजी, खुद खसम की कीन्ह खुवारी ॥ १ ॥
बारी न बूढ़ी तरुन तन नाहीं, सोवत सब जग मारी।
आवे न जाय मरे नहिं जीवे, जुग जुग रहत करारी ॥ २ ॥
ऋषी मुनी सब झारि बिगारी, सब जग त्राहि पुकारी।
रवि ससि सूर चंद तारागन, यह सब खाय बिडारी ॥ ३ ॥
चर और अचर सकल चर लीन्हा कीन्ह ब्रह्मंड पसारी।
चेतन जाग भाग सोइ बाचे, जिन सतगुर सरन सुधारी ॥ ४ ॥
चीन्हे नारि पार सोइ पावे, तब उतरे भव पारी।
तुलसीदास फाँस तजि भागे, संतन साथ उबारी ॥ ५ ॥

(८)

होरी खेले सोहागिल नारि, पिया सँग ले झकझोरी ॥ टेक ॥
केवल माट भरो रँग केसर, ज्ञान गुलाल भरो री।
पाँच पचीस प्रेम पिचकारी, तीन गुनन मद मोरी ॥ १ ॥
भव कर भरम भाव भव डर को, आस अबीर उड़ो री।
कुमति को काढ़ि कढ़ाव भरो रँग, लोभ मोह छिड़को री ॥ २ ॥
आपन अंत पंथ पिया मारग, प्रीति पार पकड़ो री।
प्यारी प्यार यार प्रीतम बस, छिन छिन बीड़ी धरो री ॥ ३ ॥
प्रीति के पान चित्त कर चूना, लौ की लौंग धरो री।
करमन काढ़ि करो मन कत्था, सुरत सुपारी धरो री ॥ ४ ॥
तुलसी फाग लाग लग लारे, छड़ियन लार लड़ो री।
करि असनान धूर धरि धोई, संत सरन पकड़ो री ॥ ५ ॥

(९)

होरी खेले रँगीली नारि, सैयाँ सँग अब न तजूँगी ॥ टेक ॥

मन कर माट चित्त कर चहला, कछनी काछ कछूँगी ।
धीर की धूर गोय का गोबर, मारत मैं न भजूँगी ।
सखी मन मैल मँजूँगी ॥ १ ॥
गुन को गुलाल मोह को मारग, सत से सोग हरूँगी ।
ज्ञान बिबेक एक करि राखूँ, इनके संग मँजूँगी ।
सखी पिया दाज दजूँगी ॥ २ ॥
भूली भेद भूमि मत मारग, गुर संग ज्ञान गहूँगी ।
संतन साथ हाथ हिये मारग, जग सँग मैं न लजूँगी ।
सखी पिया पैज पजूँगी ॥ ३ ॥
पिया मोरे महल सैल स्रुति कारज, लाजन भूलि मरूँगी ।
चढ़ करि चैन ऐन अंदर को, खुलि के तुलसी गजूँगी ।
सखी गुर धीर धिजूँगी ॥ ४ ॥

(१०)

बिन सैयाँ सूना सिंगार, सखी मोरे हिये बिच हरख न आवे ॥टेक॥
पिया की सेज तजी जा दिन से, भटकत भेद न पावा ।
होरी संग सखी सब खेलें, मोर परो नहिं दावा ॥ १ ॥
नर तन नगर बनी बिधि मारग, तिमर को तेल लगावा ।
मैं को माँग बनाइ सँवारी, ता से भेद भुलावा ॥ २ ॥
पाँच पचीस सखी रङ्ग राती, इन सङ्ग नूर गँवावा ।
रसिया तीन लीन मद माते, इन ले दाव चुकावा ॥ ३ ॥
अब तो नैन चैन चित नाहीं, पिया की पीर सतावा ।
तुलसी तोल बोल सतगुर के, खोजत खोज लगावा ॥ ४ ॥

(११)

उमँगत झझक झकोरी, झमाझम खेलूँगी होरी निठोरी ॥टेक॥
पिया की लहर लटक टक आवे, जेहि बिधि चंद्र चकोरी ।
उठि के जाग लाग मन मारग, ले पिचकारो भरो री ॥ १ ॥
रंग गुलाल अबीर अरगजा, डारत मन मटको री ।
सैयाँ के सँग रँग झकझोरी, केसर माट ढुरो री ॥ २ ॥

प्यारी पिया रँग रूप भये हैं, जैसे काँच कटोरी।
माँजत नैन बैन सतगुर के, संत सरन पकड़ो री ॥ ३ ॥
सूरति सैन ऐन पिउ प्यारे, आगे न खेल करो री।
डारो रंग सङ्ग सुख सागर, तुलसी बाँह गहो री ॥ ४ ॥

(१२)

होरी खेल साध सुजान, अगम गम सुरति लगाई ॥ टेक ॥
काया कोट किले दरवाजे, मन मथि चाल चलाई।
फहम की फौज ज्ञान का गोला, गरजत गढ़ को गिराई ॥ १ ॥
मन को पकड़ि जकड़ि सब सङ्गी, राज बिबेक कराई।
सील को सहर दया की दुनियाँ, सत संतोष दुहाई ॥ २ ॥
पाँच प्रधान पचीस प्रपंची, तीन को मारि भगाई।
लै की लगन लगी मन राजा, सूरति सरन समाई ॥ ३ ॥
सूरति साज सजी सत द्वारे, गगन में तार तनाई।
लागी लहर सैर तुलसी को, सब्द में सुरति समाई ॥ ४ ॥

(१३)

लिये जात मसरुवा मटकती, पिया ना डर सोच खटकती ॥टेक॥
घूँघट खोलि चली अलबेली, ऐंठत जात अटकती।
तजि पिया प्यार यार सँग अटकी, चलै दैया पाँव पटकती ॥ १ ॥
जग की कान जानि नहिं माने, लागि लगन में लटकती।
फिरत बेफहम नेम नित नेहरा, लिये पिया हाथ झटकती ॥ २ ॥
नैहर सोच ससुर सुधि नाहीं, देवर संग सटकती।
जागत जेठ जिठानी ने जानी, दिवरानी जो रही रे हटकती ॥ ३ ॥
तुलसी तरक तोल मन माया, काया करम तटकती।
घर का सोध बोध बिन मारग, बागन फिरत भटकती ॥ ४ ॥

(१४)

कस फिरत पिया बिन भूली, तेरे नैनन पड़ गई फूली ॥ टेक ॥
डगर नगर पिया पंथ लखे बिन, सहिहो जनम जम सूली।
खुलि है अंत निबाह न जानो, चालत मेटि अदूली ॥ १ ॥

तजि मतिमंद अंध अकड़ाई, परत जनम बिच धूली।
गुर की कान मान लखि लज्या, ज्ञान पकड़ पद मूली ॥ २ ॥
सागर जाय भरो रस गागर, कूड़ यार संग भूली।
तन कर नास बदन बिच अगिनी, जरत घास जस पूली ॥ ३ ॥
तुलसी नीर निरखि नित गागर, जल भर जाय अतूली।
पानी भरत लाज कस आवे, काज करो हिये हूली ॥ ४ ॥

(१५)

कैसे जल भरत गगरिया, तेरी भींजी न नेक अँगुरिया ॥ टेक ॥
सतगुर घाट गई बिन जाने, पैरो न चीन्ह पकड़िया।
सागर थाह अथाह अगम को, कोइ भर नहिं जात अनड़िया ॥१॥
सासु ननद के अनँद पिया मोरे, डारेंगे फोड़ बगरिया।
रीती जाति फिरो बिन पानी, मानत नाहिं बहुरिया ॥२॥
सासू ससुर जेठ जुलमाई, साईं ने सील सँवरिया।
बीतत दिवस रही अब रजनी, खुलत न प्रेम किवरिया ॥३॥
तुलसी ताव दाव यहि औसर, पिया सँग पैठ नगरिया।
सूरति साज सजो नभ मंदर, अंदर बीच डगरिया ॥४॥

(१६)

कैसे पानी भरूँ बिन रैनी, नहिं घाट मिले बिन दैनी ॥ टेक ॥
करनी कीन्ह हीन हम हारी, प्यारी भाग जस लैनी।
सतगुरु चरन सरन सुधि भूली, नहिं राह मिले सुख चैनी ॥१॥
अब केहि भाँति भरे मोरी गागर, भूल मिटे गुर गहनी।
सैनी सुरति निरति नभ घाटी, बाट लखो कहा कहनी ॥२॥
सिंध अगम गम गैल न जानूँ, भाखूँ अगम की ऐनी।
जेहि बिधि राह रीति भरने की, जा से सुरति सज पैनी ॥३॥
ताला कुफल किवाड़ खुलन की, कुञ्जी दया दिल दैनी।
तुलसी धमकि चढ़ो सुख सागर, देख पिया हिये नैनी ॥४॥

(१७)

गगरी जल गगन भराऊँ, तेरी सुरति अधर घर छाऊँ ॥टेक॥

गंगा गगन घाट है संगम, जंगम जल बतलाऊँ।
करि असनान ध्यान धरि धीरज, छीर समुँद मथराऊँ ॥ १ ॥
धधकत घोर गम्हीर लखाऊँ, सरु तरु तंत दिखाऊँ।
सुन्न सुमेर सार से न्यारी, पार के पदम पठाऊँ ॥ २ ॥
गुर दरियाव गगन के पारा, धारा नीर बहाऊँ।
सूरत साजि चलो नभ अंदर, मंदर जल झरन झराऊँ ॥ ३ ॥
तुलसी अकथ अकह की बानी, जानि समझ समझाऊँ।
गागर सागर सिंध समझि के, बुन्दे सिंध समाऊँ ॥ ४ ॥

(१८)

जा से जिव अपनपौ पावे, सखी कोइ सतगुर संध लखावे ॥टेक॥
यह जम जाल काल कुल छाया, खाया खलक खुटावे।
संत बिबेक संत कोइ पावे, भवजल पार लगावे ॥ १ ॥
यह नौ द्वार पार नहिं जावे, दस दिस देस न पावें।
कुञ्जी कुफल काल कर दीन्हा, संत जो कुफल खुलावे ॥ २ ॥
नाली नगर सैल स्तुति पावे, आले में ताख दिखावे।
पुल के पार दुरबीन लगावे, आदि अजर घर पावे ॥ ३ ॥
तुलसी ताख भाख सम सूरति, सार के पार समावे।
जोइ घर घाट बाट बिधि चावे, लखि लखि आप कहावे ॥ ४ ॥

(१९)

कोइ करि करि खोज लगावे सखी, सोइ भरम की भूल मिटावे ॥टेक॥
आदि अनादि बादि बिधि बीता, कीता न एक उपावे।
यह भव खानि जानि लौ लावे, पाहन प्रेम बढ़ावे ॥ १ ॥
सतसँग अंत सन्त नहिं सूझा, बूझ न बैस बितावे।
भरि भरि पेट लेट कर खावे, मन का भरम न पावे ॥ २ ॥
तन पर भार सार नहिं जाने, बादहि जनम गँवावे।
जब जम जकड़ि पकड़ि कर बाँधे, तौ मारत कौन छुड़ावे ॥ ३ ॥
अब हुसियार हारि बिष मारग, तुलसी ताव बुझावे।
सतगुर सार पार नहिं जाने, भव रस खानि समावे ॥ ४ ॥

(२०)

हिये नैन नगर नभ पावे, सखी सोइ आदि की आदि लखावे ॥टेक॥
जिन जिन मरम परम पद पाया, सोइ सोइ सैन सुनावे ।
सतगुर बैन नैन निज देखा, सब्द में सुरति समावे ॥ १ ॥
जिन जिन अधर धार धसि देखा, लेखा अगम लखावे ।
भिन भिन मरम बरन बिन बानो, खुल खुल खेल जनावे ॥ २ ॥
जिन जिन जान मान मन माहीं, साईं का खोज लगावे ।
सतगुर मेहर कहर सब टूटे, अलख और खलक छुड़ावे ॥ ३ ॥
कोइ कोइ साध आदि लख पावे, सन्त सरन समझावे ।
नभ पर सैल खेल जिन खेला, तुलसी तलब बुझावे ॥ ४ ॥

(२१)

पिया ना लखि सुरति बहोरी, सखी जासे आवागवन की डोरी ॥टेक॥
करि करि भोग सोग सङ्ग साथा, मन मिलि मान करो री ।
जा से काल जाल जग माहीं, सोइ सुधि बुधि लीन्ह निचोरी ॥१॥
ब्रह्मा बिस्नु देव मुनि नारद, सारद सेस चरो री ।
जग जिज्ञास सकल चरि खाये, सो जम जग जानि न जोरी ॥२॥
कीट पतंग सङ्ग सब जाती, भाँतिन भाँति भरो री ।
कहँ लग भाँति जाति जिव गाऊँ, खाये धरि काल मरोरी ॥३॥
बिन सतसंग रंग नहिं पावे, पुनि पुनि खान परो री ।
तुलसी सन्त अंत बिन बूझे, सोइ छाड़त साँझ न भोरी ॥४॥

(२२)

होरी लखन जुगत, जासे निरमल मुक्ति मिलै री ॥ टेक ॥
उठत अवाज बदन बिच बानी, बोल अबोल सुनै री ।
धुन धधकार अकार अलख में, पल पल उक्त खिलै री ॥१॥
अगम सिहार समुँद के नाके, थाके मन मति मोरी ।
चोर चुगल लखि सुरति सिधारो, समता पुखत पिलो री ॥२॥
जुगन जुगन बिछुड़े पिया प्रीतम, सत पति सोध करो री ।
सुरति सम्हारि चलो री हगन पर, चढ़त न पैर हिलो री ॥३॥

तुलसी तीर भीर भव सागर, भरमन भूल परो री।
सतगुर सरन परन पद चूकी, निज नभ भगति मिलै री ॥४॥

(२३)

होरी नगर नाद, कोइ खेलत साध सखी री ॥ टेक ॥
सूरत निकरि सिखर गइ जब से, सकल उपाधि थकी री।
निरगुन जोति पार इक साहिब, सोई अज आदि तकी री ॥१॥
अंडा अलख खलक सँग छूटी, पढ़ि पढ़ि बाद बकी री।
सतगुर पदम कँवल लखि लागो, अटल समाधि अखै री ॥२॥
अगम मिलाप आप पिया प्रीतम, महल मुराद रखी री।
पुरुष पियार परख लखि नगरी, सगरी मुराद भखी री ॥३॥
रँग रस रीति जीति पिया पद को, सूरत स्वाद चखी री।
तुलसीदास बिलास बरनि कहे, आदि अनादि लखी री ॥४॥

(२४)

होरी अधर लखे, जा को पदर न पकरि सकै री ॥ टेक ॥
भट्ठी प्रेम पिये भरि प्याला, अमी रस अँदर चखै री।
एक अनोह अरूप अमाया, काया कँदर तकै री ॥ १ ॥
पल पल अष्ट कँवल दल सोधे, कंज मँज मँदर रखै री।
धौलागिर पर सेत ठिकाना, सूरति सदर[१] पकै री ॥ २ ॥
आगे अगम आदि मिलि मारग, रबि ससि चंद थके री।
पंथी भेष अनेक मूल भूले, करि करि भदर अकहेरी ॥ ३ ॥
कोइ कोइ संत अंत पिया पद को, परखि सो पार धके री।
तुलसी तेल फुलेल फूल को री, काढ्यो जो अतर अधैरी ॥ ४ ॥

(२५)

होरी अगम पंथ, पिया परसत सन्त सुने री ॥ टेक ॥
बदन बिदेह देह रचि कीन्हा, सब जिव जंत बने री।
ब्रह्मा बिसुन महेस काल धरि, खाये जो अंत उन्हें री ॥ १ ॥
दस औतार पार नहिं लागे, पायो न पंथ पुने री।
परमहंस बैराग राग जम, काढ़ा[२] जो कंथ कुने री ॥ २ ॥

---

(१) एक लिपि में "सदा" है। (२) एक लिपि में "कड़ा है"।

निराकार आकार जार बस, आये जो ग्रंथ गुने री।
पाँच तत्त तन बिस्व बैराटा, बन्द अनन्त उने री ॥ ३ ॥
काल तवा तुलसी बस कीन्हा, सिर सिर महंत धुने री।
पिंड ब्रह्मंड परम पद ऊपर, महल अतंत चुने री ॥ ४ ॥

(२६)

सुपना जग जागि चलो री, अपना कोइ चाहो भलो री ॥ टेक ॥
गुर बिन ज्ञान ध्यान बिन धीरज, बीरज बदन बन्यो री।
बौरी काल हाल धरि खावे, बेबस बदन बलो री।
जगत जम जाल जलो री ॥ १ ॥
यह जम जोर जबर बहुतेरा, हेरा न हाथ परो री।
मुनि मन भूत पकरि धरि खावे, चावे केहि भाँति छलो री।
नजर से न नेक टरो री ॥ २ ॥
सब जिव जंत अंत धरि मारे, पारे न मरम मिलो री।
पिया बिन ध्यान धुवाँ को तिमर, सेमर सुवना फलो री।
सोचि फल फोड़ि खलो री ॥ ३ ॥
येहि बिधि जीव जतन जगहो में, पुनि पुनि जनम धरो री।
आसा अन्त संत बिन सोवे, तुलसी नहिं अन्त हिलो री।
पकड़ि पछपात पिलो री ॥ ४ ॥

(२७)

कायागढ़ काल किलो री, माया डर डारि मिलो री ॥ टेक ॥
पाँच पचीस मुकद्दम या में, ले समसेर चढ़ो री।
करि नर खेत दया सतगुर की, धुर की कुमक पिलो री।
फतेह रन हट न हिलो री ॥ १ ॥
तीन मुसाहिब मुसद्दो मिलि के, मुलक मैदान करो री।
लिखि लिखि भरम करम कागज के, रैयत सब निकलो री।
धूल सब कीन्ह जिलो री ॥ २ ॥
यह बटपार बसे नगरी में, मनमति चलन चलो री।

जुग जुग जुलम करे जबरी से, ठगि ठगि खेल खिलो री।
किये जग पान गिलौरी ॥ ३ ॥
राय बिबेक चढ़े दे डंका, ज्ञान निसान धुरो री।
जोग बैराग लिये उमरावन, तुलसी गढ़ राव मिलो री।
करे मानो हा हा चिरौरी ॥ ४ ॥

(२८)

थिर ना कोइ या जग मे री, सौदागर लादि चलो री ॥ टेक ॥
जो कुछ माल भरो भरती में, दुख सुख करम करो री।
भीषम करन द्रोन जरजोधन, भावी बस भरमि मरे री।
राज रन खेत लरे री ॥ १ ॥
रावन लंकपती पै हती, सो रती नहिं बास बसे री।
पंडौ पाँच गये तजि देही, सोई हाड़ हिमाले गले री।
डगर जम ने घट घेरी ॥ २ ॥
जो जो देह धरे तन धारी, राजा रंक रचे री।
को नर नारि पसू गति गावे, भव सुख सोक पके री।
लखे नहिं आदि अजे री ॥ ३ ॥
पंडित भेष भगति नहिं जाने, ज्ञान के मान भरे री।
सतगुर सोध बोध बिन मारग, जमपुर फाँस फँसे री।
भली तुलसी मति फेरी ॥ ४ ॥

(२९)

हम को जग क्या करना री, टुक जीवन पै मरना री ॥ टेक ॥
इक दिन देख बदन बिनसेगा, अगिनि अंग जरना री।
यों बरबाद नसै नर देही, भोग उमर भरना री।
दई गति से डरना री ॥ १ ॥
नारि निहारि जुगन बिधि बाँधा, मुनि मन को हरना री।
जग परिवार सकल दुखदाई, इन सनमुख से टरना री।
बिपति बस क्यों परना री ॥ २ ॥

काया कलप काल नहिं छूटे, नर तन में तरना री।
सतगुर मूल मता जुगती से, गुप्त ध्यान धरना री।
मुक्ति हिरदे चरना री ॥ ३ ॥
औसर आज बिदित बनिवे की, संतन की सरना री।
जो कोइ तोल तरक तुलसी को, पोढ़ पकरि धरना री।
लखो चित से नर नारी ॥ ४ ॥

(३०)

खेलो री हिरदे हर होरी, पल में पल सुरति बहोरी ॥ टेक ॥
उनमुनि संग पवन पिचकारी, सुखमनि मार मचो री।
बंकनाल रंग माट भरो है, पिया पै ले छिरको री।
आज ऐसो मेल मिलो री ॥ १ ॥
चंद सुरज सुन संजम कीन्हा, इँगल पिंगल पट पौरी।
आसा अबीर गुलाल गुनन को, कर सतसंग उड़ो री।
मुक्त नर देह धरो री ॥ २ ॥
मेरु डंड तत तारी लागी, स्वासा सिमट भरो री।
उठत अवाज बिमल अनहद की, धधकी धुन संख बजो री।
सखी चित चेत चलो री ॥ ३ ॥
तुलसी जोग जुगति सब जाने, करम टकर उतरो री।
इंद्री पाँच प्रपंच पचीसो, लै इनको पकरो री।
ज्ञान गुर बाँह मरोरी ॥ ४ ॥

(३१)

झूले री सुख सेत हिंडोले, सुनि के अघ आसन डोले ॥ टेक ॥
मन चढ़ि गगन मगन दो खम्भा, गाड़े अजर अडोले।
सूरत साजि कसी दृढ़ डोरी, चढ़त अधर झकझोले।
जबर जम बन्धन खोले ॥ १ ॥
गावत राग सखी सुन होरी, बोली अनुभव बोले।
प्रीतम पार परम पद घर की, कहत नेक नहिं ड़ोले।
हरख हिये हेर अबोले ॥ २ ॥

आली अगम संधि सतगुर की, भाखी बस्तु अमोले ।
सज्जन सूर अपूरब बोली, तरक तराजू तोले ।
आली अति अन्त अतोले ॥ ३ ॥
तुलसी तलब करे कोइ साँचे, सोइ सतगुर के चेले ।
कठ मठ माठ मथे माखन को, धरत ध्यान दिन धोले ।
मिले पिया के पद जोले ॥ ४ ॥

(३२)

जग में जम फाग रचो री, होरी हर मार मचो री ॥ टेक ॥
ब्रह्मा बिसुन कृस्न सिव नारद, सुकदेव ब्यास नचो री ।
ऋषि मुनि सहित दसो अवतारी, भारी काछ कछो री ।
इष्ट तप जोग जचो री ॥ १ ॥
करम कड़ाह पतंग रंग अस, औंटत अनल पचो री ।
भव सिंध माट भरो भरमन को, दुख सुख ले छिरको री ।
तजे मनसा रस चोरी ॥ २ ॥
गुन गोबिंद बिंद बन खोजन, भोजन खाँड कचोरी ।
छप्पन भोग भटक पाँचो में, जुग जुग काल भखोरी ।
निकरि कोइ भागि बचो री ॥ ३ ॥
लखि लगे वार पार पिया तुलसी, डारि डगर चित चोरी ।
सूरत गगन गई सतगुर पै, धुर पै ध्यान खिचो री ।
लई मन मूल निचोरी ॥ ४ ॥

(३३)

देखो री खुद खेल बनायो, भव में जग जिव उरझायो ॥टेक॥
पँच रँग तत्त बदन रचि कीन्हा, तीन गुनन भरमायो ।
पाँच पचीस भई भ्रम जाला, काल कसौटी लगायो ।
सखी मन राह न पायो ॥ १ ॥
द्वादस द्वार किये मंदर में, नौ पर कुलफ लगायो ।
दो पर एक तीन पर तेरह, हेरा हिये हरष बढ़ायो ।

गगन चढ़ि चकर चलायो ॥ २ ॥
प्रीतम दरस खोल दसवें को, सोइ निज ब्रह्म कहायो।
सूरत डगर द्वार की डोरी, अलख खलक धरि खायो।
जनम जग बादि गँवायो ॥ ३ ॥
चर और अचर चराचर खानी, घानी में डारि पिलायो।
सतगुर संध अन्ध बिन चीन्हे, तुलसी जनम नसायो।
बहुरि भवसागर आयो ॥ ४ ॥

(३४)

भयो मोरे मन में री अन्देसा ॥ टेक ॥
काह कहूँ सखि सोच पिया को, कबहूँ न खबर पठाई।
रही री बनाय बिदेस बिदेसी, नहिं देस की मरम जनाई।
करूँ कहो क्या री कैसा ॥ १ ॥
कासिद की कोइ खबर न लावे, डाकन डगर निवासी।
ब्रह्मा बिसुन महेस न सेसा, बेद हु नेत बतावे।
सखी घर गूढ़ री ऐसा ॥ २ ॥
दस औतार भार सिर लादे, आदि की खबर न पाई।
निरगुन सरगुन गोगुन बासी, फाँसी काल लगाई।
जगत जग बन्धन जैसा ॥ ३ ॥
तुलसीदास बिलास गुरन से, गुप्त गैल लखि पाई।
संत चरन धरि धूर चरन की, सूरति अगम चढ़ाई।
अधर घर कहे री सँदेसा ॥ ४ ॥

(३५)

भये सखी कोइ संत सनेही ॥ टेक ॥
सतगुर भगत जगत रस ज्ञानी, भागी करम कनेही।
लखन लखाव दीन दरियाबी, यह सब सूझ सुझाई।
पिया घर भये री धनेही ॥ १ ॥
आपा आप पाप सब खोई, धोई मन गुन देही।

गाँठ खुलाय जाय जड़ चेतन, ये तन सुरति समाई।
अगम गम आप अनेही ॥ २ ॥
यह बैराट ठाठ ब्रह्मण्डा, अण्डा बिलग बिदेही।
सोई सुरति निरति निज जाना, माना संत सदेही।
सखी जिन दृष्टि चिन्हेही ॥ ३ ॥
तुलसी तोल बोल संतन की, साखी सीस चढ़ाई।
आँखी हेरि हिये बिच देखी, दृष्टि में दृष्टि मिलाई।
बिप्र पद तोड़ि जनेई ॥ ४ ॥

(३६)

अली चली चढ़िके जो अटारी ॥ टेक ॥
नभ केरी उमँग कहूँ सब सारी, प्यारी प्रेम घटा री।
उड़ि उड़ि सुरति निरति नभ नाली, आली अंबर फटा री।
गठा मन गगन गली री ॥ १ ॥
डोरी डगर दृग द्वार नगर में, घट घृत काढ़ि मठा री।
धारी धरन सरन सतगुर की, धुर की हेर हटा री।
चटापट पीर खली री ॥ २ ॥
बिरह बैराग उमँग उर माहीं, मन तन मरब कटारी।
अली री हिलोर मोर मन आवे, भावे न पंच भटी री।
लटी लखि टेक टली री ॥ ३ ॥
तुलसीदास बिलास सुरति की, अंदर जाय अटी री।
नैना निरखि परखि पिउ प्यारी, सजि फिर नाहिं नटी री।
मठी धसि मगन मिली री ॥ ४ ॥

(३७)

अली सुपेदी में स्याम तिली री ॥ टेक ॥
लौ की लाट सुरति घट घानी, कोल्हू करम पिली री।
तिल्ली तेल पेलि जिन काढ़ा, गुर दीपक चास चली री।
बिलग तन तेल खली री ॥ १ ॥

मंदर माहिं भया उजियारा, प्यारा परखि मिली री।
प्रीतम प्यार यार लखि पाया, रँग रस भाँति भली री।
अगम घर घाट गली री ॥ २ ॥
जब से कँवल धरन धस धारी, नेक न सुरत हली री।
दृढ़ पद जकरि पकरि जब डोरी, जोरी नित पदम पिली री।
सखी नहिं सुरत हिली री ॥ ३ ॥
तुलसी तोल अबोल पुरुष का, रूप न रेख अली री।
जानत संत अगम लखि मारग, सतसँग द्वार मिली री।
जले सब करम बली री ॥ ४ ॥

होली मारफ़त

(१)

एरी दृगन पर दमके दामिनी, चमके चंद उजियास री ॥टेक॥
अलख पलक पर झलक दिखानी, लागी लगन पिउ प्यास री ॥१॥
स्रवन सबद सुन अनहद बाजे, ज्ञान धमक परकास री ॥२॥
स्याम बदरिया छिटकन लागी, फटिक भवन भयो भास री ॥३॥
सूर ससी नल नभ के द्वारे, तुलसी तकत निवास री ॥४॥

(२)

फाट फटक के फाटक टूटे, छूटे भटक भ्रम जाल री ॥टेक॥
अटक अली चली फोड़ि निसानो, भान उदय छर काल री ॥१॥
अच्छर आदि अपनपो पाई, सोई[1] सुरत निहाल री ॥२॥
तुलसी तपन गुनन गो न्यारी, चारोइ खटक निकाल री ॥३॥

(३)

एरी पलन पर अनल अकास, दीपक जरत निवास री ॥टेक॥
पाँचो तत्त दलन पर राजे, कँवल कंज पर स्वास री ॥१॥
लखि लघु द्वार सुई सम नाके, पिया के बाक बिलास री ॥२॥
जागी जोति रैन दिन तुलसी, तजत सकल बिस्वास री ॥३॥

(४)

एरी सिखर पर सुरत समानी, संत लखन पद पार री ॥टेक॥

(१) एक लिपि में "साइँ" है।

जोगी जोति होत लखि जाने, पाँचोइ तत्त पसार री ॥१॥
या से सार संत गति न्यारी, पारे परखि निहार री ॥२॥
तुलसी तोल बोल जब पावे, करें कृपा निरधार री ॥३॥

(५)

अरी सखी नैनों में रँग लागो, पिया की लगन हिये लागि लखनको।टेक
गोगुन गैल फैल सब सारी, डारी डगर भ्रम भागो ॥१॥
सुरति सील संतोष मोच्छ से, हरष हिये बिच जागो ॥२॥
ज्ञान ध्यान धरि धार धरन को, गुर चक चरनन पागो ॥३॥
तुलसीदास बिलास बिमल पक, लखि पिया भीख न माँगो ॥४॥

(६)

एरी सखी पिया पट खोल किवारी, नैन नगर दृग द्वार डगर घट ।।टेक॥
नभ के री केल कँवल दल द्वारी, अलख पलक हट हारी ॥१॥
मन तक तोल बोल लखि सूरत, चढ़न गगन गढ़ गाढ़ी ॥२॥
अगम अवाज साज सजि पुनि कै, सुनि धुनि अबर फटा री ॥३॥
तुलसीदास निवास चरन में, चढ़ि चलु अटल अटारी ॥४॥

(७)

उठत प्रेम रस भीनी, होरी की तरँग मो रे उमँग हिये बिच ॥टेक॥
केसर घोरि घिसो मन चन्दन, डारो पकरि पिया चीन्ही ॥१॥
पँच रँग पाँच तत्त पिचकारी, प्यारी परखि भरि लीन्ही ॥२॥
मारो गैल गुना गिर गागर, सागर धसि जस मीनी ॥३॥
तुलसी सूर मूर गति गवना, पिया से फाग रचि कीन्ही ॥४॥

(८)

सुरत सखी सजि फाग रचोरी अलख पलक सोइ भागि बचो री॥टेक॥
तत रँग पाँच पकरि पिचकारी, सुभग अरग मुख मारि मचो री ॥१॥
गगन गुलाल थाल भरि ठाढ़ी, कुमकुम को लखि काछ कछी री॥२॥
अधर चूर घर मूर निहारी, कूर तूर नभ नाच नची री ॥३॥
तुलसी सतगुर सुरति सुधारी, प्यारी पकरि दृग डोरि सची री॥४॥

(९)

सुरति सुहागिल जाग, जनम सब सोय गँवायो री ॥टेक॥
नाद बिंद बिस्तार, सार कछु खोज न पायो री ।
रही री बिषय सुख स्वाद, आदि बिन खोय खुटायो री ॥ १ ॥
जुगन जुगन रही भूल सूल, तब दुख सुख पायो री ।
आवा गवन निवास, आस ने भव भटकायो री ॥ २ ॥
काल कला परचंड, अंड सब घेर घुमाये री ।
रही री बिषय बिष बाद, साध कोइ संग न पाये री ॥ ३ ॥
औसर बीतो दाव, साह से पूँजी लाये री ।
तुलसीदास बिन संत, अंत नहिं छेव छुड़ाये री ॥ ४ ॥

(१०)

घेरि घुमर घट लाव रे, सूरत समझाई ॥ टेक ॥
दृष्टि द्वार पर गाड़ि के, गुर इष्ट लगाई ।
तिल भर भीतर फेर के, निरखो मठ माहीं ॥ १ ॥
चाँद सुरज दोउ दीप से, पीछे हट जाई ।
सुंदर स्वासा सुन्न में, सहजै रट लाई ॥ २ ॥
गगन किवाड़ी खोलि के, फिर फटक मझाई ।
मानसरोवर काग से, सठ हंस कहाई ॥ ३ ॥
अंदर के असनान से, छूटै झट झाँई ।
तुलसिदास दृढ़ मान ले, भटकै मत भाई ॥ ४ ॥

(११)

अलख अधर लौ लाव री, घट सब्द सुनावे ॥ टेक ॥
अनहद नाद निहारि के, मन को ठहरावे ।
चित चंचल हित ज्ञान को, थिरता करवावे ॥ १ ॥
गगन गिरा धुन होत है, सुनि के लौ लावे ।
संध सुमन पहिचान ले, आली अधिक सुहावे ॥ २ ॥
किंगरी संख मृदंग की, धधकारी आवे ।
गुर चरनन बलिहार, बिमल मति यों समझावे ॥ ३ ॥

मन की मौज बिलास, समझ चित से चित चावे ।
तुलसिदास तत रंग समझ, भिन भिन दरसावे ॥ ४ ॥

(१२)

दृढ़ मिलन दया दिल डोरी, क्या जानूँ कौन कल मोरी ॥टेक॥
परम पिया खुद खेल रचो है, पल पल देत झकोरी ।
सूरत द्वार डगर पद रोकत, जुगन जुगन फल फोरी ॥ १ ॥
बिन सतगुर घर घाट न पावे, जलत जनम जिन जोरी ।
बिंद बन बेलि बढ़ी बिन मारग, करम ब्याल बिष बोरी ॥ २ ॥
सतसँग रंग अंग बुधि बाढ़ी, जित जित खेल खरो री ।
केहि बिधि प्रीत करूँ प्रीतम से, टुक रहत नहीं पल पोरी ॥ ३ ॥
यह घन घोर मिटे संतन से, देत दवा बंदी छोरी ।
तुलसी तलब करे कोइ रोगी, सतगुर में मल तोरी ॥ ४ ॥

(१३)

धुर धाम गगन गुर गैली, कित पाऊं कौन बिधि हेली ॥टेक॥
संत सुधा रस भेद भूमि को, सतसँग संग सहेली ।
सो सुनि बात साथ सखियन के, सूर स्याम भँवर मंज मैली ॥ १ ॥
सूरति अंज मुकर चढ़ि देखे, अधर अलख खुल खेली ।
द्वै पट पार समुँद सुन मारग, उर नाम मगन बन बेली ॥ २ ॥
आगे अगम आदि घर घाटी, बाट बिकट घट पेली ।
सो अली री सतगुर को पावे, तुलसी सुरत फुर चेली ॥ ३ ॥

(१४)

मेरे उर में उमँग छवि छाई, कहा कहूँ हरष बधाई ॥टेक॥
मैं तो अचान खड़ी अँगना में, सुंदर सुरत लगाई ।
निरखि परी हिये में उजियारी, प्यारी सुरत समाई ।
दृष्टि पिया परख लखाई ॥ १ ॥
नित नित सैल करूँ मंदर में, अन्दर अलख जगाई ।
जोगिनि होय भभूत रमाऊँ, पिय पद भेष बनाई ।
धूनी धर ध्यान लगाई ॥ २ ॥

सेली सैल सुरति नभ पैनी, बेनी में पैठि अन्हाई।
गाई गैल गवन सतगुर ने, चढ़ि धुनि धधक सुनाई।
जाय सोई मरक जनाई ॥ ३ ॥
तुलसी तार तरक तन तारी, कुलफ किवाड़ खुलाई।
महल मिलाप आप पिय प्यारी, धर करि कंठ लगाई।
पिया रस गरक सदाई ॥ ४ ॥

(१५)

पिया परसत भई री अमोल, खेल खुद आप कहाई ॥ टेक ॥
अटल अडोल बोल नहिं जाके, सो पिय ने अपनाई।
आऊँ रि आय आय फिरि जाऊँ, कोऊ लखन नहिं पाई।
जगत बिच रहूँ री सदाई ॥ १ ॥
मैं अपना अली भेद छिपावा, कोऊ सुपने नहिं पाई।
रहूँ री बिदेह देह दरसाऊँ, ता से सूझ न आई।
अलख बस पलक बसाई ॥ २ ॥
करता काल खलक से न्यारी, प्यारी पुरुष दुलारी।
स्वास बिनास अकास नसावे, मैं परले नहिं जाई।
गले पिय बाँह लगाई ॥ ३ ॥
तुलसी अतोल तुले अबिनासी, बासी बरन बताई।
पासहिं पुरुष पिया पद दासी, नित नित रहूँ री निवासी।
संत सोइ पंथ लखाई ॥ ४ ॥

(१६)

गगना चढ़ूँ कहो कैसे, मोहिं उपजत लाख अँदेसे ॥टेक॥
डगमग पाँव होत पौड़ी पै, सोच उठै जिय में से ॥ १ ॥
केहि बिधि गैल चलूँ मारग को, भटक भई हियरे से ॥ २ ॥
पल पल पीर खलै प्रीतम की, मीन तड़फ जल जैसे ॥ ३ ॥
बिन दीदार दुखी जियरे में, जनम पसू तन तैसे ॥ ४ ॥
तुलसी मूल भूल भरमानी, रहि चेत चरन बिन लैसे ॥ ५ ॥

मोरे मन में गगन चढ़ि जाऊं, पिया परसत पीर बुझाऊँ ॥ टेक ॥
सतगुर गैल डगर की डोरी, संत बिना कहँ पाऊं ॥ १ ॥
पौड़ी न पोढ़ मिले मारग की, जुगन जुगन भरमाऊँ ॥ २ ॥
कोटिन काल भटकि भरमानी, फिर नर तन कहाँ पाऊं ॥ ३ ॥
औसर आज बनै कोइ कारज, तौ भवजल तर जाऊं ॥ ४ ॥
चौपड़ खेल रच्यो तुलसी ने, अब की नरद बचाऊं ॥ ५ ॥

(१८)

बिदेसन कहो कित भूली री ।
या चमन में फूल भाँति भाँति के रंग,
तैं पिया के पौ पै करत अदूली री ॥ टेक ॥
तू तो बिसारी धृग तोहि ताहि को, सुरति सुहाग भाग सो नसाय को ।
औसर बीति गई लखत न वा को, तेरे मुख धूली री ॥ १ ॥
घर की डगर छूटी तन बीतो जात है, याही नगर में समझ तू ले री ।
पिया के पदर को पकर पद औसर, जनम सुफल सोई चलत पंथ पर ।
हरख हजर भइ परख न वा को, तुलसी अज मूली री ।

(१९)

पड़ोसन क्यों कर जाऊँ री ।
या भवन में भूल जुग जुग में मूल,
मैं मँदर घर को कित पाऊं री ॥ टेक ॥
तू तो दुलारी दृग महल भवन की, नेक लखन प्रिय पाऊँरी पवरकी ।
दवा दरद मोकूँ चेरी चीन्ह, तोरा जस गाऊँ री ॥ १ ॥
भेद भाव भिन मरम लखावो मोकूँ,
तो सों तौ पिया की प्यारी हित लाऊँ री ।
पुखत की पोढ़ डोर दृढ़ चित चाऊं,
भाली की झलक बिच जोत झलक पाऊँ री ।
मेहर नजर मो को डगर लखाऊं, तुलसी धर धाऊँ री ॥ २ ॥

होली दीपचंदी

(१)

घट में मन मैला सूरति सैल करो री ॥ टेक ॥
रसिया रोज खोज करि जावे, सखियाँ सहेली सारी ।
भारी भेल भयो नभ अंदर, मंदर धरन धरो री ॥ १ ॥
आलम अलख लोग सब दुनियाँ, पुनि धुनि सुनि सब धाई ।
काया बीच बाग बन माली, खग मृग भँवर भरो री ॥ २ ॥
दादुर मोर चकोर चुगन को, ठौर ठौर जुथ जोरी ।
सरवर पास बिलास बनन में, तन मन लखन लखो री ॥ ३ ॥
तुलसी ताल भाल बिच जानो, मार मनोरथ सारी ।
आतम जोति होत उजियारी, भव भ्रम जाल जरो री ॥ ४ ॥

(२)

गगरी जल चंद छिपाना, घट लाग लखो री ॥ टेक ॥
मारग समुँद सिंध सत द्वारा, सब सब संत भखो री ।
स्याम धाम स्त्रुति सेत कँवल पर, अमी रस चेत चखो री ॥ १ ॥
दीप दिसा बिच देखि उजाली, ससि सर छान छको री ।
मनमत मौज खोज में मारो, हिये बिच हेर पको री ॥ २ ॥
पुल पल पार धार बहे पानी, सूरति साज सको री ।
लै लौ डोरि चकोर पोढ़ करि, चक जोरे इसक रखो री ॥ ३ ॥
तुलसी लगन लगे यहि भाँती, कैसे न पार नखो री ।
जोइ जोइ ज्ञान ध्यान मन सूरति, टकटक चंद तको री ॥ ४ ॥

(३)

मोरी परि गयो गैल गुसइयाँ, एरी गगन गुफा की गली में छली।टेक।
जात हते मारग में घनेरे, कोइ न मिलो मोहिं हटक हरैया ।
अगम उहाँ पै चली री अली ॥ १ ॥
सब टेढ़ी कही री सही सुनि कै, डरपै न नेक निलज्ज रमैया ।
झझक झकोर डोर मोरी झझकी, डगर ढिठाई करते एरी दैया ।
संग न झूमा जो भई री भली ॥ २ ॥

बाट बटाऊ कहत बहुतेरी, मोरी न माने तनक एरी गुइयाँ ।
हार थकी री भकी मैं कह करि, कोटि करैं नहिं माने मनैया ।
आठ पहर सँग रहत बली ॥ ३ ॥
हार पुकार सुनो सतगुर मोरी, लेन पठायो पार की नैया ।
तुलसी मनहिं मवासिन घेरो, मोरी मदद के हो कुमक करैया ।
प्रीतम तुम बिन पीर खली ॥ ४ ॥

(४)

सतगुर मोरी बाँह गहैया, चढ़ि जाऊँ अधर की अटारी अटा ॥टेक॥
करूँ फरियाद दाद सब सुनि हैं, जाय पड़ूँगी चरन गहि पैयाँ ।
मोरी सहाय बनाय करैंगे, मारि निकारैं बिकार करैया ।
अमल अलख जब जोर घटा ॥ १ ॥
जब सरसाय हाय करि तोबा, तुम्हरी डगर हम नाहिं रोकैया ।
अब तकसीर माफ मोरी कीजे, तुम सतगुर के हो पास जवैया ।
हुकम जबर के अबर फटा ॥ २ ॥
धाय चली सतगुर की सँध ले, अलग भये मारग अटकैया ।
सबहि उपाधि आदि की छूटी, लूटे सबन ये बाट चलैया ।
मैं सुमिरन कर नाम रटा ॥ ३ ॥
गगन गुफा में धसी री बसी जब, आगे मिले मोहिं गैल बतैया ।
अंग लगाय संग कर लीन्ही, अगम अभय पद पार पठैया ।
जब तुलसी हिये हेर हटा ॥४॥

(५)

आली आन छुड़ाई जग की सकल आस री ।
सखी धुर गुर दीन्हा भेद भास री ॥ टेक ॥
सतसँग रँग रस छुटी कामना, दीदा दरस मन भयो है दास री ॥१॥
बिरह बियोग नैन ढुरै पानी, बरसि झड़ी जस चार मास री ॥२॥
ज्ञान भान गुर ध्यान दया से, करम भरम भव कीन्ह नास री ॥३॥
मंदर गगन मगन चढ़ि चाली, आली अधर घर दीप चास री ॥४॥
तुलसी तोल बोल बस जोती, होत जगामग सुन्न पास री ॥५॥

(६)

आली आन लखाई गुर ने अगम आदि री।
सखी सत मत सूरति गगन नाद री ॥टेक॥
पिव को निरखि पद परखि पुकारी, संत बिना नहिं लगत दाद री॥१॥
सुन्न महल पर धुन धधकारी, प्यारी पकड़ि लख सुगम साध री॥२॥
रूप रेख बिन देख निसानी, रोम एक रबि कोट बाद री ॥३॥
तुलसी चरन धूर सतगुर की, लै लखि धुर की कही अनादि री॥४॥

(७)

कोइ पूछो री या सतगुर से।
बाल तरुन बिरधापन बीता,
प्रीत करी सोइ रीत रखी नहिं धुर से ॥ टेक ॥
जोग ज्ञान बैराग बिरह नहिं, घटत स्वास नित सुर से ॥ १ ॥
बीतत बदन बिषय रस माहीं, भेंट नहीं पिया पुर से ॥ २ ॥
हिये में हिलोर पिया बिन प्यारी, उठत अगिनि जिया झुर से॥ ३ ॥
तुलसी ताप तपै दिक माहीं, मरत दवा बिन जुर से ॥ ४ ॥

(८)

कोइ हंसा भवन सिधारो रे, बार बार सतगुर गोहरावैं ॥ टेक ॥
सरवन सुनत नहीं, दुख सुख गवन बिडारो रे ॥ १ ॥
सूरति भूलि मूल पद या से, तन मन पौ नहिं धारो रे ॥ २ ॥
समुँद सोत पर जोति तिवारी, जगमग जोति उजारो रे॥ ३ ॥
सेठ सब्द घट पट की कुंडी, हुंडी हरष सकारो रे ॥ ४ ॥
तुलसीदास बास घर अपने, पिउ पिउ पकरि पुकारो रे॥ ५ ॥

(९)

होरी हो खेलन हम गैयाँ ॥ टेक ॥
गुइयाँ निरखि नित पूछे साँची मैं कहूँगी।
सखियाँ सहेली सँग स्रुत से रहूँगी ॥
मन के मजीरा धीर की ढोलक लहूँगी।
बरजे रोज मो को रोकी रहूँ न मोरे सैयाँ ॥ १ ॥

राग दोष सोग सँग अब न सहूँगी ।
इंद्री पाँच खोटी मोटी मारि के रहूँगी ॥
मन को कैद करि सुरति से पिलूँगी ।
नभ सैल सुरति नित नित नित कै समोइयाँ ॥ २ ॥
पिया नित प्रति पत पैयाँ मैं पड़ूँगी ।
प्रीत पुराने मोरे सैयाँ से करूँगी ॥
जनम मरन दुख सुख लै हरूँगी ।
कोटि कोटि कहे कोइ लखै न लखैयाँ ॥ ३ ॥
मोरे तौ लगन लागी चित में मरूँगी ।
उलटी अधर घर ध्यान मैं धरूँगी ॥
हिये दृग दीदा बिन काहे को जियूँगी ।
तुलसी तत मत सत सुरति से लखैयाँ ॥ ४ ॥

(१०)

देखो री जग हटक न माने ॥ टेक ॥
तीरथ तीर तरन मन मुकती, मग अँग धोवत पानी ।
जाना न जनम खोय जल पाहन, पूजत भटक भुलाने ॥ १ ॥
करि असनान मगन मन मंदर, मूरत मरम अजाने ।
धरि धरि लात सिला बटि गढ़ि के, धरि मंदर झटक पुराने ॥ २ ॥
छप्पन भोग भाव जेहि कारन, दुनियाँ देव बखाने ।
पिवत न खात हाथ मुख में कोइ, खात न निकट दिखाने ॥ ३ ॥
घंट बजाय अँगूठा बतायो, खायो प्रसाद पुजारी ।
सेव करी पर भेव न कोई, झूठे लखि हटक न आने ॥ ४ ॥
चेतन चीन्ह यकीन अनाड़ी, आतम अंग समाने ।
बोलत बदन चीन्ह कर तन में, तुलसी लखि लटक पिछाने ॥ ५ ॥

(११)

खुल खेलत होरी रे ॥ टेक ॥
सुरति सिंगार साजि सिर सुंदर, मंदर मगन मिलो री ।

गगन गुलाल थाल भरि केसर, बेसर भाँति भली री।
चली नैना मुख मोड़ी ॥ १ ॥
चमचम चमक धमक धधकारा, कारा कँवल निकारी।
भइ झट सुरति निरति नित न्यारी, प्यारी पिया काछ कछी री।
बची मन की मति मोड़ी ॥ २ ॥
सुंदर सासु ससुर सुख सागर, साईं का सबद सुनो री।
पौरी पवर भँवर दृढ़ देवर, नेवर सुनि साजि चली री।
मिले मग कर झकझोरी ॥ ३ ॥
सुन करि सोर घोर लख भागी, लागी लगन लखो री।
होरी भरम सरन सतगुर को, सूरति सत द्वार चली री।
खड़ी चक से चक जोरी ॥ ४ ॥
धरि धरि ध्यान ज्ञान सतगुर को, मुरका मन सूरति सारी।
भारी भरम करम दृढ़ डोरी, तोड़ी तुलसी जिन जोड़ी।
पलटि पद पायो बहोरी ॥ ५ ॥

(१२)

सखी री सुख सेज पिया बिन कैसे रहूँगी ॥ टेक ॥
मगसर मास बिलास बसंत, घर घर गाय रिझावत कंत
हमरे पिया परदेस निवास, आवत होरी न फागुन मास
दई दुख दीन्ह सहूँगी ॥ १ ॥
सब री सखी सजि करत सिंगार, पिया सँग खेलत कुमकुम मारि
अबिर गुलाल अरगजा सोई, झक झक देखि रही हम रोई
आली गुर ज्ञान गहूँगी ॥ २ ॥
नित नित निरखि करूँ सतसंग, तन मन जार करूँ सब अंग
सत मत सोधो साध सुजान, मान मनी जग मोटी कान
नेक नहिं चैन चहूँगी ॥ ३ ॥
तुलसी तोल बोल मन केर, मारुँगी झारि पकरि सब हेरि
सुरति कँवल सखि लखन लखाव, दुरलभ देह मिला अस दाव
लाग लखि लगन कहूँगी ॥ ४ ॥

(१३)

पिया के सँग खेलूँगी होरी, मोरी डोरी लगी ॥ टेक ॥
केसर माट भरूँ मन सूरति, गुन गुलाल बरजो री ।
पाँच पचीस पकरि पिचकारी, ले सनमुख छिड़को री ॥ १ ॥
आसा अबीर चित्त कर चोआ, कुमकुम तीनि ठो री ।
अगर अनूप अरगजा मारूँ, पकड़ करि बाँह धरो री ॥ २ ॥
सील सुहाग सुमति की झारी, दीपक ज्ञान लड़ो री ।
सबद अवाज अधर घर बाजे, गरज गगन मुख जोड़ी ॥ ३ ॥
तुलसीदास बिलास सखी सब, पिया सँग ले रँग दौड़ी ।
नैना निरखि परखि चित चोरी, पकड़ि सुरत झकझोरी ॥ ४ ॥

(१४)

आपा न सम्हार, नर तन दुरलभ देह में ॥ टेक ॥
नौतम सेज सम्हारि के, पौढ़े बेबिचार ।
लोभ नहर नदिया बहे, बूड़े मँझधार ॥ १ ॥
दस रस के बस में रहे, सहे गोरख भार ।
सार समझ सूझे नहीं, होय क्योंकर पार ॥ २ ॥
ज्ञान उदय बिन बास के, स्वासा न करार ।
छिन छिन में घटती रहे, छ सै इक्किस हजार ॥ ३ ॥
जोग जुगत जोगी कहे, रहे तत्त निहार ।
प्रानायाम अधार को, तुलसी निज सार ॥ ४ ॥

तिल्लाना होली

(१)

धाय के चटक चलो री या गगन में । पुजपरकास तेज लेख लखाई पाई ॥
पुनि फटक घट देख उजियारी प्यारी । मानो हटक की राह मोड़ी ॥ टेक ॥
अंड खंड जो जो सुरत चढ़ाइयाँ । निरत निरताइयाँ ॥
चंग में चंग संग उड़ो उतंग रंग ।
लखन लख चक पिउ अगम पद ।
पट की लटक लोरी ॥ १ ॥

अजर अधर घर गुर से परख पी को लखन लखाइयाँ।
तन में तरंग मन होय अपंग जब॥
डोरी डगर लख नैना नगर।
भज भटक की राह छोड़ी॥ २॥
तुलसी तोल तक बोल सुरत संग।
धरन धराइयाँ॥
बिरह बिहंग संग ज्ञान बैराग जान।
ध्यान में धीर धर पीर पिया की॥
लखि अलख अटक तोड़ी॥ ३॥

(२)

प्यारी पलक में अलख लखो री या अबर को।
रूह की रमज रंग समझ सुरत संग॥
कंज को मंज मिलि द्वार डगर जाई।
झमक झलक जोड़ी॥ टेक॥
कही सो गही कर काज लई।
नाव चटक चढ़ चमके चतुराई॥
मीन मरज धरि धार चढ़ाई।
पाई अडोल बोल अमल अमोल मोल॥
चंग में चंग मिलि संग में संग प्यारी।
भान भवन घट नैन से नैन जोड़॥
जग ख्वाब खलक खोरी॥ १॥
जो दई में रही भव भार सही।
ये जाल जगत तजि नेह की निठुराई॥
काल कराल खुल डाले कुठाई।
साईं सुमिर धुर गुर पिया के पुर॥
गंग में गंग[1] मिल पंग अपंग धारी।

(१) एक लिपि में "रंग में रंग" है।

नभ निकट घट पट को खोल प्यारी ॥
तक तुलसी ललक लोरी ॥ २ ॥

(३)

अरी लख लाय के भवन भरो री या सुरत को ।
पल में नास मन होय बिनास जाई ॥
तन सराय बिच बास कराई ।
पिया कवन जवन जोरी ॥ टेक ॥
गगन गिरा की जो बिरह कराइयाँ जग बिसराइयाँ ।
गुरु बचन बोल तोल तरक जाई ॥
नील में तिल तक नभ निकरि ।
धसि पवन किवारी तोरी ॥ १ ॥
अलख अगम लीजै पलक समाइयाँ ।
जोती झलकाइयाँ ॥
नभ निरख चक द्वार दिखाई पाई ।
धुन धधक लख सुन्न समझ ॥
गुन गवन की गाँठ छोरी ॥ २ ॥
तुलसीदास रबि भास भवन में ।
लखन लखाइयाँ ॥
प्यारी पकर करि पिव को परखि धाई ।
सेज सुहाग भाग भव नसाई ॥
घर अधर में निलोरी ॥ ३ ॥

(४)

चमक पै धमक सुनो री ये अधर में ।
गगन फट मठ मगन मंज माहीं ॥
पाई सुंदर सुन मंदर सत्त टक टमक झमक जोरी ॥ टेक ॥
चक चाई तक ताई ।
लख लाग लई गढ़ गरज रज सज समझ ॥

भज अज उधर घर पिउ को पाई ।
गगन फट झटपट पकर पद ॥
जद झकत तक हद हिराई जाई ।
ढाई थिरक लख पिउ पदर ।
बेनी बाम बमक लोरी ॥ १ ॥
दरबार चढ़ी सो खटि कड़का री ।
प्यारी प्रयाग पग पुरुष रस बस ॥
अस अली री पल परख पाई एरी अनैन आई ।
नैना निरख नाहीं सुरत सत्त माहीं ॥
तत पद मझाई मन मरज नाहीं ।
तुलसी तमक रट रमक जमक जोरी ॥ २ ॥

(५)

अचल में मचलि रहो री ।
आज आली लै लटक से ॥
सुरत सिंगार कर हार हिये में धर ।
बिंदली टीका पिया लाड़ लड़ाई ॥
कर नेह निछल लोरी ॥ टेक ॥
सजि साज सच्यो रँग रीत रच्यो ।
तत्त की सारी पहनी घँघरा सिर बेनी ॥
ललक लटकन नभ लगाई ।
नथनी झलकाई मोती झलक झाई ॥
कजरा नैन निज चाल चमक बीज ।
घूँघट केरी पल खोलि के चल ॥
गज गेंद ले चल नौरी ॥ १ ॥
सुनि नाद आदि आली अजर भई ।
कंज करनफूल मंज मरम मूल ॥
हिरदे हमेल धुकधुकी लखाई ।

पग नेवर जग जेवर जस गाई ॥
बिछुआ अनवट चुटकी चमकत ।
प्यारी सिंगार कर पीरी छलन बस ॥
करन को चली यों री ॥ २ ॥
सजी सो भजी घर घाट गजी ।
रंग के रस बस पाँच पकर अस ॥
गुन गुसाइँ गो गाँठ छुड़ाई ।
फस अलख बस खलक खोट चाई ॥
चढ़ो सुरत पल झलक देखो जाई ।
ललक लख पिउ बस बेसक ॥
तुलसी बिरध बछवो री ॥ ३ ॥

(६)

अरी चटक लै लटक रहो री भय भटक से ।
ज्ञान बिज्ञान जी जोग लखाई जाई ॥
बिरह बैराग सिल समझ सुख दुख ।
ख्वाब खटक खोरी ॥ टेक ॥
आली ये गली चढ़ि चाक भई ।
काम कुटिल दाम दाम निकारी प्यारी ॥
मोह मलीन दुचिताई मिटाई ।
क्रोध कुबुधि बस काल को काढ़ि डारी ॥
लोभ लबार लख सक निकार न्यारी ।
जान झटक झट गाँठ से गाँठ खोली ॥
घाट अटक कोरी ॥ १ ॥
पिया को लिया लख लाग जिया ।
नर की तन धर करि मुकत जाई ॥
भव भटक बिच रहे भुलाई ।
साँचे री सतगुर मूल लखाई पाई ॥

अमर अजर घर बास कराई जाई ।
तुलसी तरक लख पिया से ॥
प्रीत यहि भाँति सटक वोरी ॥ २ ॥

(७)

अरे नर जीव जनम नहिं रे ये बिनस तन ।
महल अटारी झार झूठी सकल सारी ॥
नारी निदान सुत पित बिधान ।
छूटे संग सही रे तेरा ॥ टेक ॥
खान पान सुख सेज गही ।
मान मनी धर सीस लई ॥
तेल फुलेल मल माया के मद कर ।
काया करम फल जाल जुड़ाई ॥
जम के दूत पूत मारें पकरि जूती ।
चोटी पकरि करि बाँधेंगे मजबूती ॥
काल कराल करे कहर कठिनाई ।
कोई जतन चही रे ॥ १ ॥
जग जहर जोई बिष बेल बोई ।
भर नींद सोई डर नाहिं कोई ॥
निडर पाजी काल सीस पर गाजी ।
नरक रे बिराजी राजी एक न पाई ॥
आँख सलाई जग करम के दाग दागे ।
कुंड नरक बिच डारत दुख लागे ॥
भाग भरम तुलसी तज करम ।
डर दाऊ दई रे ॥ २ ॥

(८)

अरे नर स्वास की आस नहीं रे देह नसन को ।
है रे हबूब तन बिनस अस मन ।
धर धरम कर करम काई बल बास गही रे ॥ टेक ॥

काम क्रोध मद लोभ भरे, ज्ञान ध्यान सब दूर करे।
ख्वाब खलक एक पीर अधीर धर, भव में मरन जुग जुग जनाई ॥
जम की तक त्रास भास भवन जाई, दुख नरक करक कर कठिनाई।
दूत डगर बिच बाँधेंगे फिर, फल फाँस रही रे ॥ १ ॥
प्रान गये तन निकट चढ़े, जाति पाँति सब आन खड़े।
खेस[1] कुटुम्ब सब रोवत सिर कूटी,
हिये तड़फ त्रिया हाथ की चूड़ी फूटी ॥
तन बदन बन खाक जलाई जाई, बास पकरि पूत सीस कूँ मारे आई ॥
तुलसी ये पल भल खान में चल, खल नास भई रे ॥ २ ॥

(९)

अरे नर नकल की अकल तजो रे ले असल को।
तत बदन बिच मद मदन नीच काया ॥
करम कीच बंध बँधाई, दुख सकल भजे रे ॥ टेक ॥
भूल भटक घर घाट लई, जाल जबर जम बाट गई।
आदि अधर तन बीच मँदर सज, भज भरम खोज रोज कराई ॥
प्यारे पकरि जोऊ पिउ परख जाई, घट के पट खोल बोल बिचारि माहीं।
तोल तरक तक लख जखम जाई, दवा दरद मद मधुर लघु।
दिल दखल मँजे रे ॥ १ ॥
अंध अचेत की धरन धारी, बूझी न जड़ सँग प्रीत करी।
चेतन तन मन सुन्न बदन माहीं, सुरत संग रँग देख रमज जाई ॥
चक में चित धर मीत अपन कर, प्रीत परम एक लख अपन आई।
मान मरज झट पट के तट, तक तुलसी अजै रे ॥ २ ॥

(१०)

आज नर वतन[2] की जतन करो रे, ये हतन तन।
घट भटक भूल आदि अपन मूल, जाल जबर सूल बंध बँधाई।
मन मत न मरो रे ॥ टेक ॥

---

(१) खेश = नातेदार। (२) निज घर।

दो दिन जग बिच बास बसे, घर बिचार जम फाँस फसे।
गुरु को ध्यान धर करि बिधान काया, माया को मान तक तोड़ जराई।
सूरत सज भज भरम अपनाई, द्वार डगर सम समुँद सत साईं।
मछ मथन कढ़ि कढ़ि निकरि आई, काल धीमर केरी जाल निकाल।
वही पत न डरो रे॥ १ ॥

उदर बास बस कौल दियो, धर नर तन नहिं भजन कियो।
गरभ करि करि मर मरन जुग, सुग सरम पिया पद न चाही॥
नाद अचल बिंद बिमल बिन वाही, आस अरँब कर बाट भुलाई जाई।
पवन तत मत अरल असर आई, काली में मन मग चित चलन।
सुन सत न अड़ो रे॥ २ ॥

(११)

अरे सब ख्वाब का खेल खुसी रे, कुल खलक मोखाना।
पकाना खुस नान पुलाव कर, जोर जबर जबराईल गरूरी॥
मारे काढ़ि भूसी रे॥ टेक॥

जबर फिरिस्ते पकरि धरे, दोजख गंदगी माहिं पड़े।
नूर सहूर न जहूर में दिल धर, कर गरूरी सुधि सब भुलाई॥
फ़हम करज जिन राह को पाई जाई, रूह मुरीद दिल गवर गवराई।
मंजिल मुरसिद से फजल, जावे राह उसी रे॥ १ ॥
खोई खुदी जब जमक जगै, सबर यार घर खबर लखे।
चढ़ि मुनारे पर मन मिलन जाई, अमल काबिल परख पाई॥
राह रफैयत में बकसाई, सुकर धर करि खूब ये कुफराई।
तुलसी हवस आतस हवा, घर घाट घुसी रे॥ २ ॥

(१२)

मौला मंजिल की फजल अली रे इल्लल्ला।
आब अबर घर फिरि सबर कर, फहम फरक नबी अल्ला।
अलफ साईं गजब गली रे॥ टेक॥

बन मुरीद दिल डगर चले, मुरसिद से जब राह मिले ।
खुद खुदा कर खोज मुदामज, रूह रमज हू हक्क जनाई ॥
आई अबर पर भिस्त कत पाई, गई मुकर चढ़ि अमर थिरताई ।
ला पै रब जब जमक धस कोई, लखत वली रे ॥
चौदा तबक चक चसम भये, सुरमा अंजन दीद दये ।
अदीद आदम दम दरस माहीं, चून बेचून बेनमून दिखलाई ॥
खुद बदन बिच हद हरख जाई, पट अबर आफताब अधर माहीं ।
नूर जहूर तुलसी तै तरक, अरवाह चली रे ॥ २ ॥

(१३)

अरी नैना गगन गुमठ गिरवो रे, संध सुरत नीको द्वार जनैया ।
जो आवै निज कर न्यारो ॥ टेक ॥
होत वोही सुधि समझ न जानी, वाही को जनम जग जारो ।
करि मंजन मन मारी बिचारी, घर वारी सुरत घट धारो ॥१॥
प्रीत वोही पिया परखि पहिचानी, साईं की सरन में सम्हारो ।
हरि हरिजन सँग यारी निहारी, पद पारी की निरत पट सारो ॥२॥
दीद रही जो अदीद न जानी, संत सरन निरवारो ।
जिन चरनन मन वारी तुम्हारी, तुलसी तारी तरक मत न्यारो ॥३॥

(१४)

एरी आली चसम चमन गुलजारी, पँच रँग फूल गुल गगन गुँधारी।
जो सेत सुरख जरद हारी ॥ टेक ॥
करिया हरा अस पाँच कहाये, यह बिधि बदन बिचारी ।
तन दुरलभ दिन चार निहारी, पिय प्यारे बिन दुख भारी ॥१॥
करम काल जुग जाल पसारी, गुरु बिन को उपकारी ।
तरक फरक तत तुलसी निहारी, पत नेह प्रभु पद वारी ॥२॥

(१५)

पन बीते री आज कोइ भेदिया मिलत, गाढ़ो कलि में काल ।
धरि धरि के डारत जाल, जग में पिलत ॥ टेक ॥
जाहि को चाहत जा को दाढ़ में दरोरत, दैया करोरत ।

करम की राज देखो याही को खिलत ॥ १ ॥
जागो री अंत वही राह को पंथ गहो ।
मूल लई सो सही न हिलत ॥
सुरत समझ कीन्ही आदि को अपन लीन्ही ।
पिया को तकत अली हिया उमगत ॥
तन लखो री ललित ॥ २ ॥
कोइ धारो री धरन प्रिय पिय को परन ।
जा की सरन काल केरी कला को मरन ॥
गुर से गगन चीन्ही । मरम मझब लीन्ही ॥
तुलसी तलब तोड़ी ।
मोड़ी मन मत खुल कँवल खिलत ॥ ३ ॥

तिल्लाना

(१)

जी जो सतगुरु चेला है ।
चढ़ि नभ कहे सब गुरु भेद बताऊँ । ज्ञान गिरा कहे गगन खेल ॥
व्हाँ एकहि एक अकेला है ॥ टेक ॥
सुदर पर फेर सुरत मूँ । जहँ चंचल मन चूरत है ॥
हिये के दृग नैन निरख सो । जहँ चढ़ि के कहे सोइ सूरत है ॥
धन वा मुरसिद को कहिये । जिन चेला पंथ धकेला है ॥
गुरु गैल मेल करि केल खेल । जहँ पदम नाभ पर सैला है ॥१॥
जहँ सम अरूप अंदर विहार । पीहर घर के पद पार लखा ॥
हुइ सूर मूर धुर मेला है ॥ २ ॥
पार ब्रह्म रमज की रख रूह । जहँ संत बिना क्या जूरति है ॥
उनकी दृढ़ डोर दया सों । कोइ पहुँचत लै लख नूरा है ॥
धन जो पिया पावे उसको कहिये । जिन पीरा सिंध सकेला है ॥
करि भान मेल गहिये अमेल । जहँ तुलसी तक अलबेला है ॥३॥

(२)

लै लखाव संतन में प्यारे जी । जहँ तेज पुंज जगमग परकास ॥

कहि सम नहिं हम करि कँवल बास । जहँ पद निवास कंजन में ॥टेक॥
घट के पट पैठि परख तूँ । हुआ कौन कौन क्या कहना है ॥
जहँ बोल बाक नहिं बानी । जिन जानी कही सुन सैना है ॥
अन उसकी कुदरत को कहिये । नहिं पाया अंत अनंतन में ॥
लखि भेष पंथ खोजा अतंत । तिल तक बेसक तैं तन में ॥१॥
धर दीन भाव रहनी उपाव । सत सील लील सूरत अपील ॥
मन मत उमाह ग्रंथन में ॥ २ ॥
दृग डोरी पोढ़ परख तूँ । उस डोरी से गठ छोरी है ॥
पदमन के पार पकर के । जहँ सत परयाग धुन धोरी है ॥
धन वे सत साधू को कहिये । जिन साजी सुरत की रतन में ॥
मन मरज भाव जिव कर उपाव । चढ़ तुलसी दाव दरपन में ॥३॥

(३)

मन तन बस माया में । अरे नाहक जिव जावे ॥
तू अहंकार करत है गुन सँग धाम धारी ।
ताही से फिरत नित खिंचत खलक में ।
मूल धूल भव भरती में ॥ टेक ॥
अड़ी अड़ी करमन तप घेरी ताव ।
अरे कौन घर को रे गयो तेरो घाट ॥
वा को बिसारि गयो सुरत सत राह को ।
अरे पूरो बोल गयो कर मट याही में ॥ १ ॥
वाही गुरु राह की सुरत निरत में संत करत हैं ।
वोही लखत हैं नौ पारी ॥
नाम निरख सुधि तत तूल मत मूल । लख भवन भान घर घट में ॥
जा दिन निस्तार तेरो होयगो भरम से ।
गगन मगन दिल देख लेगो सगरो ॥
जब तो तेरी सुरत अड़ेगी अब तो तूँ करत करम ।
अरे याही जोन में मोह में कटत निस दिन फस बन में ॥२॥

सुत बित दार लखि प्यार करत है। घर ही ब्याध ने मोह डारी ॥
दाव की बखत बूझ निज नर देह धर। ये बाद जात तन जग में ॥
जा दिन पकरि काल मारैगो लात की।
बस बिपता जम सहेगो सो झगरो ॥
जब तो तोहि सूझ परैगी।
अब तो तूँ करत खूब खुस माहीं कुटँब संग ॥
तुलसी भरक येही पन में ॥ ३ ॥

(४)

पकड़ गुर बहियाँ सभी तजि, अरे बार बार जम भरम डार।
दैया हरखैया करत हो ॥ टेक ॥
तीन गुनन से जग बूड़त है, संत सभी कहिया।
चीन्ह चरन सतगुर के प्यारे, पैया ढुरकैया धरत हो ॥ १ ॥
धरनि धार तज करि बिकार, पार परन लइया।
चार चुगल चुगली के कारन, चैया भरकैया भरत हो ॥
तुलसी तार पौ को निहार, निज नैन पार पैया ॥ २ ॥

तिल्लाना मलार

(१)

लख लेरी एरी पिया। गुन दौर डागर छाड़ो चित से।
हित पीव परखि हरखो री हिया ॥ टेक ॥
गगन मगन अजईल अबर पै, धसि घर घाट अनंद अगम को।
महल टहल अपनावत हैं, सोइ साम सुबह रट के जो लिया।

॥ शेर ॥

गुल गोर में फँसी, दिल दे पसार के।
कर बेवफा को दूर, उस में नफा न है ॥ १ ॥

॥ ग़ज़ल ॥

अरी भवसिंध में फँसी, पिया बिन बिदेस में।
एक जिंद है बड़ा, हर दम रहे खड़ा ॥ २ ॥
पाँचो बदन बली, पचबीस में सदा।
नहिं तीन में अदा, अघ अंध में अली ॥ ३ ॥

भूला भवर सुकर, लीन्ही जो राह कुफर।
मुरसिद बिना बहे, उस राह को न गहे ॥ ४ ॥
छूटे बदन मुकर, दिन चार में फना।
बिलकुल बहेल तैं, जाली जबर जिकर ॥ ५ ॥

॥ शेर ॥

मुझ को समझ परी, बहु गंदगी भरी।
नादान यह अली, फिरती गली गली ॥

॥ कड़ी ॥

गो की री गोहारी नियारी, प्यारी पलँग पै।
पर मल सुगंध जियरा हियरे, बदन हँस बन के तुलसी।
अली कर करतब कोई काज किया ॥ १ ॥

(२)

तूँ पदम खोज खाविंद खुस कर, नर घर की येही बहार ॥टेक॥
सुरत सखी सुंदर सागर सजि, द्वारे डगर सिधार।
वार तजि पिया पद पैठि निहार ॥ १ ॥
ये जतन मूल मंदर मथि के, सखो पँच रँग फूल फुहार।
लखन लगन दीदार दिलों में, देख पुरुष मत सार।
पिया पद तीन लोक से न्यार ॥ २ ॥
अली झलक झलक झलके भूमी, जहँ झिलमिल जोति अपार।
चमन चीन्ह गुल गोप गगन में, तुलसिदास गुलजार ॥
सुरख रंग सेत सबज के पार ॥ ३ ॥

तिल्लाना

(१)

ताद्रिम त्रिदिम त्रिदिम त्रिदिम, धम धिकट धिकट धुन धरना ॥
गुन गाना ये चिताय ग्राम मुझ तेरे कूँ।
तन का तरना देख अधर, मुद्दा कहूँ उधर कूँ ॥
खुद सातो ये अप झरना।
तरक तो मेरो बोल धुरदं धुरदं धम ॥ टेक ॥

और जो अड़े बैठे थे उस सतसँग में।
सब की सुरत पहुँची धमधम में॥
कोइ करतब कर पवन भवन कूँ॥ १ ॥
कोइ कोइ चितवत चमन गमन कूँ।
जब तो गाना गुलजार, बनि के बोला एक तार॥
वाह जी वाह वाह वाह जी वाह, तुलसी तरँग तक तोल बोल ले॥
गुरगम गुरगम धम धिकट धिकट धुन धरना॥ २ ॥

(२)

ताद्रिम तरना ताद्रिम तरना ताद्रिम तरना ताद्रिम तरना।
खिलवत जनाया खुस बोल उस दिल कूँ॥
आदम अलफ बीच कदम चलावै जाई।
आसिक जो रूह हूह हर दम कूँ॥
पदम के वार पार जतन जो करना॥ टेक॥
हक हकीकत सननन संध की।
धादिम धादिम धुन धध अनहद की।
कोइ कोइ त्रिदिम त्रिदिम तुम तननन।
कोइ ताद्रिम ताद्रिम गुन घननन॥
मृदंग कड़क घोर मुहचंग मजीरा सोर।
थेइ जो थेइ ताता जो थेइ॥
तुलसी त्रिपट तट धुर पद कूँ धरना।
नूर के निसाने नित प्रति स्रुत भरना॥

(३)

तत रँग रित रँग लौ लाई, कंज कँवल पर बाजत अनहद।
उठ तरंग धम धम धरना॥ टेक॥
दिस निस दिन सखी सुनि धुन लागी, भागी भवन सुधि पाई॥
संख मृदंग मधुर धुन धधकत, ताद्रिम ताद्रिम तुम तुम तरना॥१॥
करत घोर घरघोर पपिहा पिउ, पलक पलक लख माहीं।

महल्ल मरम मंदर घर तुलसी, चढ़त चार चमचम चरना ॥२॥

(४)

सत रज मन मँज नभ नाली।
भाली की भलक पर अलख बिराजत।
लखि सुदृष्टि लै लै करज ॥ टेक ॥
हरख द्वार हर द्वार कुंभ अँड, अंडा अधर कहाई।
धोवत मैल मानसरवर पर, तजि अदृष्टि आजा अरज ॥ १ ॥
पौड़ी पाव न्हाउ हर की पर, सूरत गगन चढ़ाई।
कसमल दाग काढ़ि करमन के, होय सृष्टि तुलसी तरज ॥ २ ॥

(५)

घर नहिं कीन्हा फेरा।
या बावरिया मन बंधन दीन्हा फेर फार बहुतेरा ॥ टेक ॥
जुगन जुगन जम बंधन चीन्हा, भरम भूल भटकत रहिये।
ता की तो सुरत तत मत न हरष।
अब हिये न चैन हित चित छिन छिन दुख ॥
तब नहिं पकरे सुपने खोज को, सहत जबर जम घेरा ॥ १ ॥
काम क्रोध जद मदन बिचारे, चलने चाल फीकी धरिये।
पी को री पकरि कर घर न परखि।
जब जियन जोर धक धक ढूँढत सुख ॥
ख्वाब खलक बस ललकि लोभ को, तुलसी न नीक निबेरा ॥ २ ॥

(६)

नर नर देह न पावे।
यह दुरलभ तन बिच बास बसेरा, स्वास स्वास दम जावे ॥टेक॥
चार लाख चौरासी धार में, मरन जिवन जनमत जइये।
गुरु की सरन बिन बसन गात, तन मिले न वार।
भटकत फिर फिर भव, रिषी मुनी कहें मुकत बास।
तन देव बदन को चावैं ॥ १ ॥
तप रस राज भोग भूले सब, ज्ञान गाँठि गुन में रहिये।

बिदित राग बैराग बिरह बस, कसत इंद्री इत उत भटकत मन।
त्याग तरक सोइ रोग भोग से, तुलसी तम न नसावे ॥ २ ॥

(७)

चलो री घर चेत चरन तन चाम। अली अनँद बदन चढ़ जागे।
धुर मत को सुरत कोई देख पावे। घर भृंगी भौर जुझावन चावे॥
परख प्यारी पद धाम ॥ टेक ॥
भँवर पवरिया बूझे, अली अनहद बाजे घननन घननन।
गाजे गगन मँझारी ॥
नौ से खोज करन को तजि कर काम ॥१॥
सरन सरूपी धीजे। संख सुंदर स्वासा सननन सननन।
सुखमनि बंक भरो री। तुलसी तोल तरक मिलि नाम ॥२॥

(८)

गहो री गुरु सेत बरन सुख धाम ॥ टेक ॥
अली अमल बिमल बर पावे।
गगना पर धम सम सुरत लावे॥
लखि रमक चमक रस पीवन चावे।
नील निकर तजि स्याम ॥ १ ॥
भेट भवन तन सूझे, अंदर की बतियाँ धरन सरन।
पी को परन पुकारे तुलसी, जहाँ छाँह नहिं घाम ॥ २ ॥

(९)

चल मँजिल मुसाफिर थाके हो।
जहँ से आये जाहु जहीं जब, उतनी ठौर कहावोगे।
अपना बूझो कवन गाँव घर, अजर अमर जोइ जाके हो ॥टेक॥
भरम परे जब रोके हो, जम जबर जँजीरन ठोके हो।
भज उसी नाम को याद करो, तज कुफर बाद बरबाद नरो।
मिल फजल वहीं जद वाके हो ॥ १ ॥
अबर अली की खबर तको, जब सबर सुभा दिल दूर रखो।

तुम रूह रकाने गगन चढ़ो, असमान अरस पर जाय अड़ो ।
तब गजल गाम से पाके हो ॥ २ ॥
सक सुभा बदन चक चाखे हो, जब जबर फिरिस्ते नाके हो ।
अब फहम फना तजि बाट बसो, घर घाट मुकरबे चमक चसो ॥
रबि सिजल लखो जब लाके हो ॥ ३ ॥
तुलसी कहे तलब बिना के हो, कर मुरसिद को नहिं फाके हो ।
फरक फकीरी बूझेगा, जब गुनह समझ कूँ सूझेगा ॥
हक अदल मुरीदी काके हो ॥ ४ ॥

(१०)

बिन डगर मियाँ कहँ जाते हो ।
खलक खुदी सँग भूल परे, परदेसी देस न पाते हो ॥
धक धक होता अंदर में, दिल सुभा भरम भव खाते हो ॥टेक॥
कुछ खोज खबर नहिं रखते हो, नित नयी नियामत चखते हो ।
मियाँ जेर जबर तक धीर धरो, दिल पाक बदन होय होस करो ।
भव भटकि भटकि दुख पाते हो ॥ १ ॥
इलम इबादत कूँ जानो, ये सरा समझ को पहिचानो ।
मियाँ आप खुदी खुद खूब नहीं, यह मुरसिद नाचीज कहीं ॥
बद बेवफा चित चहते हो ॥ २ ॥
हर बखत तबाही सहते हो, हुरमत लज्जा सब खोते हो ।
कर होस अदल बिच जागोगे, जब कुफर कूर से भागोगे ॥
हक इसम बिना लौ लाते हो ॥ ३ ॥
तुलसी तवक्का करले रे, यह जुलमी काफिर कर जेरे ।
पिउ अदल मुरीदी लावोगे ।
बे मझब हकीकत गाते हो ॥ ४ ॥

(११)

अली अल्ला अलफ इलाही, खिलकत मेरी जहाने ।
नूर नबी का सब खेल ॥ टेक ॥

मेहर निगाह जिन जान जहूरा, मुरसिद कामिल चसम निवाजी ।
कोई मुरीद रूह साईं ॥ १ ॥
जान वली कोइ फकर फकीरा, खाविंद की जिन खबर सुनाई ।
बन्दे वे जिन पाई ॥ २ ॥
हुकम हजूरी कफन दया का, मुसलमान ईमान कुराना ।
दरदमंद फरमाई ॥ ३ ॥
तुलसी रहम रहमान हकीकत, जो कतेब पैगम्बर गाई ।
मक्का हज्ज हिये माहीं ॥ ४ ॥

(१२)

मियाँ मौला मदद खुदाई, हर दम पैरौ हजूरी ।
बन्दे कदम दम पोस ॥ टेक ॥
पल पल दिल दुरवेस जिन्हों के, वे रोसन हाजिर बिरलाई ॥
जिन मुहब्बत मेहर जनाई ॥ १ ॥
फजल नजर जिन जान गरीबी, फरक राह मुरसिद से पाई ।
वे मुसाहिब हक माहीं ॥ २ ॥
अरस मुनारे दरस दिवाने, अंदर में जिन रूह चढ़ाई ।
लामुकाम रब साईं ॥ ३ ॥
तुलसी तकत दम नूर जहूरा, लै कलाम साहिब की राही ।
जिन मंजिल मारफत गाई ॥ ४ ॥

(१३)

अब तो सुधि समझाई, पिउ वा घर की गुरन ।
भेद दियो री वाही देस ॥ टेक ॥
गगन गिरा केरी बिरह जनाई, सबद सोर घनघोर लखाई ।
पल पर पल लौ लाई ॥ १ ॥
सुरत खड़ी दृग दीप नवल पर, कँवल कली अली याद कराई ।
ता बिच गति मति पाई ॥ २ ॥
समुँद सोत पर पोत परखिया, हरक मरक हिये मारग आई ।
दल में नल दिखलाई ॥ ३ ॥

तुलसी तरँग रँग संत सुनाई, बिरले गुरमुख सुरत लगाई ।
जिन जिन यह गति गाई ॥ ४ ॥

(१४)

अरी अब तो सत दरसानी सुरत मोरी ।
दिरगन जाय समानी वोही धाम ॥ टेक ॥
हेर लई जिन जनम सुखारी, अपने पिया को परिवा जनाई ।
सुनि धुन में लिपटानी ॥ १ ॥
फेर भई मैं तो पिया की प्यारी, सुपने पिया को न बिसरि बनाई ।
घट पट पिउ पहिचानी ॥ २ ॥
मेहर भई पिया परम सयानी, हाल हरख हिये कंठ लगाई ।
छूटी सब दुख सुख खानी ॥ ३ ॥
तुलसी परम सुख रीत जुड़ानी, सेज पिया सुख बरन सुनाई ।
ज्यों जल मिलि जल पानी ॥ ४ ॥

तिल्लाना धमार

(१)

अहो घट घुमर बहोरी पट पौरी हो ॥ टेक ॥
धुन धमार राग उठे अटारी ।
आली अचल तन तननन तान सुनाई ॥
कान पर ध्यान धरि मन पहिचान हर ।
हिये हरख चढ़ सुरत सननननन ॥
लै लौ पिया की बट पौरी ॥ १ ॥
करम भरम तक त्याग तरक सखी ।
भटक भवन सब डारि नैन निरख नीर ॥
भिर भलक फिर थिर तटक तीर भवर भननन ।
भावे भलक लखि जोती झलक पक ॥
अलख लखि पल झमक झननन ।
गगन चढ़ि अड़बड़ बिकट ॥

गढ़ गवन गिरि पर घमक घननननन ।
हिरदे हट कै लख लोरी ॥ २ ॥
पत प्रिये ज्ञान ध्यान धरि धीरज ।
निरमल बुधि बिचार गुरु पदम मूर, धुर धरन लई ॥
सुर सिमट मठ सटक सिर नाई, दृढ़ पकड़ि पद हद निकरि जाई ।
जद जतन मन मथन अपनाई, सबद सत मत पत पिय को पाई ।
हटकि खटखट खटक खननन, तुलसी अटपट फट फोड़ी ॥३॥

(२)

अहो हम हुकुम हजूरी सत सूरी हो ॥ टेक ॥
खुद पठाई जिव जाय चिताई, लावो बेहद माहीं ।
मद हद्द छोड़ाई । जद पिउ लखाई ॥
कद कहूँ सुनाई । आदि अधर आली मंदर मंज करि ॥
लखि तक ये पकर पत पिउ री ॥ १ ॥
काल जबर जम जाल बिछाई ।
माल मूल घर और गगन नख चक चढ़ि चलावो ।
सुन्न सबद तजि भज भरम उड़ाई । धुन महा सुन्न जुगन कर आई ।
आली अगम गुर धुर अरूप माहीं । चून बेचूँ नमून पुनि परख जाई ।
बासी अटल अज आट अटारी ताई । तुलसी अमरा पद मूरी ॥२॥

तिल्लाना बसंत

(१)

मंदर मीन मन अंदर चीन्हो नौ नवीन ।
मध के बाग बन बन गुलाब ।
नभ आब अबर बिच खबर खुल लौ ले यकीन ॥टेक॥
प्यारी परख लखि लील सही । करम भरम डर कील गई ॥
पील पकड़ि धकड़ि धर करि जकड़ि जड़ ।
कढ़ि कठिन बँद फंद बँधाई ॥
सुरत सजि भज गज की गैल डारी ।
कारी कदर तजि सदर सजि न्यारी ॥

तोल तरक चढ़ गगन मठ माहीं ।
थोब जतन तत बदन बोल बन बजत बीन ॥ १ ॥
गुर के बचन मन कर अमीन । डगर देत घर हो अधीन ॥
लखन लख तक पक पकर जाई । अलख तज करि भज पलक माहीं ।
खलक खोटी नर आदि अपन घर घर अमर । कर खोज कराई जाई ॥
गुन सतोरज तुलसी तम तन नसत तीन ॥ २ ॥

(२)

सुरत साध पद पुरुष आदि हो ।
भव बिबादा जात बरन तजि कुटँब कुटिलाई ।
काई करम बस भरम अस ले बहु उपाधा ॥ टेक ॥
जस माखन मथि तत में जीउ । जतन जान जिन काढ़ि घीउ ॥
पी पवन केरी भवन मत मँजाई । अज अवास केरी कहन कर काई ॥
माहीं अवन तजि गवन गफलाई । आई कँवल दल धवल धीरताई ।
चदर फट झटपट झमक जाई ।
साईं परखि पल गली में चलूँ नल निरखि नादा ॥ १ ॥
समुँद सार सजि अगम पार । सुरत जहाज चढ़ि अज अधार ।
चलि भगति भल ज्ञान केवल मंज । मीन मलाह थाह थिर कराई जाई ।
मान मन पवन सिथलाई । सर के तट घर घाट लगाई जाई ॥
बाट बिमल बस बेनी की बिमलाई ।
पाई लखन तन मन मथन तुलसी चढ़ि अगाधा ॥ २ ॥

तिल्लाना

ज्ञान गुर से पार उतरिये, सूरज सुरत आवत है ॥ टेक ॥
नैया फेरी बली बिरले, पौरी मुजरी में जहार हिये ।
जमाद काम अतूल बली, जहँ कोइ ज्ञान से बूझनहारा ॥
भवना चलत तरुनाई उछलत गुन, जहँ सार पै ध्यानी धीर धरत है ।
सत सूरत मंजन पैनत, तब देख हगन हिय रे भरिये ॥
पिउ घर घाट गगन गढ़ फोड़ा, बाट निकट तट थाह न नि

लै सुख सहर जौहर की जुगत आवे,
द्वार किनारे भगति की मुकत पावे।
धधक सुनी जा से कहिये, जब जमक उठे उलटी धरिये ॥२॥
खड़ी लहर में लगन पुकारे, गाढ़ भई है गुर को निहारे।
उनकी मेहर से सुमत छाई मो को, परम प्रिये पिउ को लखि लेऊँ।
तुलसी तरक तत मत केरो, जब पदम पार सूरत करिये ॥ ३ ॥

तिल्लाना मलार

माई गुर चरनन मन अरुझे।
तजिया भरम भंग भँवर भृंगी बन भननननन ॥
ललि ललि फल फूल सजन सजी भज।
सुरत सुधार सुधि सननननन ॥
अड़त आन धर धा परमान को।
अजर अमर घर है अरूप वे ॥
तागड़दिम तागड़दिम तादिम तननननन ॥ १ ॥
झाली की झलक लखत न तकी पल पलक
झलक घट घननननन ॥
चढ़त चैन चखे अस अनैन कूँ।
सिखर निकर तुलसी अजूब वे ॥
नागड़दिम नागड़दिम धाधीम झननननन ॥ २ ॥

तिल्लाना

(१)

दर्शन को आज आई अटा प्यारी, सुधरी सम्हारी भारी।
देसन निहारी जोरी जिधरी की, बूझ यारी नेहरा सिराई।
उमँगि उमगि केरी धुकधुक आवे,
लारे लारे धीरे धीरे धधरा को रंग लिये।
बोलवा बोलाय ओंटी कुंदन वटा ॥ १ ॥
पाइद में पिउ खोज करे, तो मो सुन में भई कहूँगी।

झम झागर दी झुनन झम झननननन।
कसरी खनाका दम दड़ाका बरी लैलियों धाम को धोई लटा ॥ २ ॥
दादिम किया बज बनरों तोले जब धुन कूँ पकरि चहूँगी।
तादिम तागड़दी तनम तुम तननननन।
दस री जमाका धाम धसा जा।
जब तोल लियो तुलसी तलाव तटा ॥ ३ ॥

(२)

सुन जौन जौन सी बात कहूँ, सुरत के तकने की अली तो से।
रूप रेख तो प्रगट मैं करूँ, लाखन लोचन में जानि परी।
कछू बरनन नहीं बन आवत है ॥ टेक ॥
गगन मगन मिलि अपी वो धरन कूँ।
अब तो देखी अब तो देखी इन अँखियन सूँ ॥
निरख परख अली अपने पुरुष को।
सुरत धुर गुर घाट अधर अली लखत रही स्रुत गावत है ॥ १ ॥

बैत

(१)

अब बंद हा गुल रावी धरी है उसी सूझे।
खुल खुल के यों कर कर लगे घोरों मीठी मुझे ॥ १ ॥
पिउ को री परन तक धरा री धरन को।
लखि सो लई लखि सो लई ॥
कही सखियन सों, अगम अली धुन भाखत हौं ॥ २ ॥
अगम निगम तजि सँग बिचरन को।
लखि सो पाई लखि सो पाई लखा री लखन को ॥
स्याम सेत दिस देख दृगन पर, चढ़त चटापट पार।
अधर अली अछत भइ रस चाखत हौं ॥ ३ ॥

(२)

अब अंद हा कुल रावी करी है खुसी बुझे।
पल पल पै लौ काकर लगे मोरी झूठी जुझे ॥ १ ॥

लै सुख सहर जौहर की जुगत आवे,
द्वार किनारे भगति की मुकत पावे।
धधक सुनी जा से कहिये, जब जमक उठे उलटी धरिये ॥२॥
खड़ी लहर में लगन पुकारे, गाढ़ भई है गुर की निहारे।
उनकी मेहर से सुमत छाई मो को, परम प्रिये पिउ को लखि लेऊ।
तुलसी तरक तत मत केरो, जब पदम पार सूरत करिये ॥ ३ ॥

तिल्लाना मलार

माई गुर चरनन मन अरुझे।
तजिया भरम भंग भंवर भृंगी बन भननननन ॥
ललि ललि फल फूल सजन सजी भज।
सुरत सुधार सुधि सननननन ॥
अस्त आन धर धा परमान को।
अजर अमर घर है अरूप वै ॥
तागड़दिम तागड़दिम तादिम तननननन ॥ १ ॥
झाली की झलक लखत न तकी पल पलक
झलक घट घननननन ॥
चढ़त चैन चखे अस अनैन कूँ।
सिखर निकर तुलसी अजूब वे ॥
नागड़दिम नागड़दिम धाधीम झननननन ॥ २ ॥

तिल्लाना

(१)

दर्शन को आज आई अटा प्यारी, सुधरी सम्हारी भारी।
देसन निहारी जोरी जिधरी की, बूझ यारी नेहरा सिराई।
उमँगि उमँगि केरी धुकधुक आवे,
लारे लारे धीरे धीरे धधरा को रंग लिये।
बोलवा बोलाय औंटी कुंदन वटा ॥ १ ॥
पाइद में पिउ खोज करे, तो मो सुन में भई कहूँगी।

झम झागर दी झुनन झम झननननन।
कसरी खनाका दम दड़ाका बरी लैलियों धाम को धोई लटा ॥ २ ॥
दादिम किया बज बनरों तोले जब धुन कूँ पकरि चहूँगी।
तादिम तागड़दी तनम तुम तननननन।
दस री जमाका धाम धसा जा।
जब तोल लियो तुलसी तलाव तटा ॥ ३ ॥

(२)

सुन जौन जौन सी बात कहूँ, सुरत के तकने की अली तो से।
रूप रेख तौ प्रगट मैं करूँ, लाखन लोचन में जानि परी।
कछू बरनन नहीं बन आवत है ॥ टेक ॥
गगन मगन मिलि अपी वो धरन कूँ।
अब तो देखी अब तो देखी इन आँखियन सूँ ॥
निरख परख अली अपने पुरुष को।
सुरत धुर गुर घाट अधर अली लखत रही स्त्रुत गावत है ॥ १ ॥

बैत

(१)

अब बंद हा गुल राबी धरी है उसी सूझे।
खुल खुल के यों कर कर लगे घोरों मींठी मुझे ॥ १ ॥
पिउ को री परन तक धरा री धरन को।
लखि सो लई लखि सो लई ॥
कही सखियन सों, अगम अली धुन भाखत हौं ॥ २ ॥
अगम निगम तजि सँग बिचरन को।
लखि सो पाई लखि सो पाई लखा री लखन को ॥
स्याम सेत दिस देख दृगन पर, चढ़त चटापट पार।
अधर अली अछत भइ रस चाखत हौं ॥ ३ ॥

(२)

अब अंद हा कुल राबी करी है खुसी बुझे।
पल पल पै लो काकर लगे मोरी भूठी जुझे ॥ १ ॥

जी को री जरन सखी तुलसी री सरन में।
अब तो भई अब तो भई गई थकी इन से।
मगन भई मन ताकत हौं ॥ २ ॥

(३)

लै लै लटी बादियाँ जनम मजनूँ तजनूँ।
मैं तो छाड़ी नादड़ी नादड़ी ॥
आँदियाँ आँदियाँ तोड़ियाँ तोड़ियाँ छोड़ियाँ छोड़ियाँ ॥ टेक ॥
नाना वे प्रिये पति तैं किये बैन। सुख सहर दी फजल रख ॥
पोहड़ पछ दै ये दान तेरा अंत दी तजनूँ ॥ १ ॥
जा जा वे सुरत सखी कै ठगनो ये। पिउ मेहर दी नजर अज।
छोड़ छल कहे तुलसी लै तेरा। संत दे भजनूँ ॥ २ ॥

तिल्लाना मलार

लाई हर से हित लाई, सबद घोर पर पावनी।
भृंग भनननननन भिन भाई ॥ टेक ॥
चमकत बीज दमक दामिनि की, सादर बरस बहाई।
उमँडि घुमँडि बदरी गगना, घन घनननननन गुन गाई ॥१॥
उलटि चलो सुंदर मंदर पै, अंदर सुरत लगाई ॥
तुलसी ताल तीर धधकत धुन, घट मनननननन मन माहीं ॥२॥

तिल्लाना बिहाग

अरे मन मंदर गुर ले गली।
गुर की गली री आली दीपक चास के अंदर मगन मिली ॥टेक॥
सुंदर समझि चली घर अपने, सुपने टेक टली ॥
सबद सार सूरत मूरत में, पिउ संग प्रीत पिली ॥ १ ॥
प्यारी प्रेम पाल प्रीतम से, रँग रस भाँति भिली ॥
सेज सँवारि पार पलँगा पर, तुलसी झमकि चढ़ी ॥ २ ॥

मलार

(१)

एरी माई पिया मुख बैन बिरह की बतियाँ।

छिन छिन छतियन हूल उठत ॥ टेक ॥
नागिनि सी डस खावे मानो जिये जूड़ी आवे ।
जहर लहर जिम हिये बिच खटके ॥ १ ॥
रोय रोय अँखियाँ बीती दिन रतियाँ ।
अली पत पीर पुरुष बिन भटकी ॥ २ ॥
भेष सब देख डारी पंथा पंथा हेरी हारी ।
खोजि खबर भारी पिया पद पट की ॥ ३ ॥
कोई लखि जाने नाहीं मोरा मन माने नाहीं ।
समझि समझि हारि हिये बुधि हटकी ॥ ४ ॥
सतसँग सुनि पाई धुर गुर गत गाई ।
संत लखाई सब घट घट की ॥ ५ ॥
सुरत सतसंग लीन्हा सत सत मत चीन्हा ।
तुलसी दुरबीन द्वारे धसि धसि अटकी ॥ ६ ॥

(२)

एरी माई सतगुर भेद दियो प्रीतमजी को ।
सैयाँ की सेज मन मथ के मिलोंगी ॥ टेक ॥
गो गुन तोरि डारूँ प्रकृति मरोरि डारूँ ।
छोड़ूँ री कुसँग सँग सुरत से पिलूँगी ॥ १ ॥
ज्ञान गली गहना पहरूँ भगति सुरत सारी हेरूँ ।
आँगिया अगम गढ़ चढ़ि के चलूँगी ॥ २ ॥
मुकता माँग सुख चैनूँ नेह की नथनी पहनूँ ।
घघरा घेरि घट नहीं हिलूँगी ॥ ३ ॥
बिछुवा बिबेक बाजे चुटकी चमक साजे ।
अनवट घट तट तजि न टलूँगी ॥ ४ ॥
सेंदुर सुबुधि साजे बिंदली लिलारी राजे ।
करुना करनफूल कंज सी खिलूँगी ॥ ५ ॥
हिये हरखि हरवा पहरूँ मेंहदी मंजल हेरूँ ।

आतुर निरासा हुई टाँके में तुलूँगी ॥ ६ ॥
नेवर नौ नैना काढ़ी जेहरी जवाहरों जड़ी ।
सभी करम तजि होरी सी जलूँगी ॥ ७ ॥
सोलह सिंगार सोहे बत्तिस भूषन मोहे ।
तुलसी तत तार धरि पिया को छलूँगी ॥ ८ ॥

(३)

एरी माई पिया के मिलन मँज समझ सुनाऊँ ।
आली री अटारी आदि अटल बखानी ॥ टेक ॥
सुरत दृग दिस लागी नौ तजि दस में भागी ।
नल की नाल तजि सुन्न समानी ॥ १ ॥
सुनि धुन सबद बूझी, आगे को अगम सूझी ।
सुनि सुनि धुनि धसि धुर की निसानी ॥ २ ॥
पाँचो तत मत नाहीं, रबि ससि थकि जाईं ।
संत लखाई खोल खिरकी दिखानी ॥ ३ ॥
द्वादस दीदा दीसे, मन गुन गन पीसे ।
चढ़ि अड़ि अंडा जब अधर कहानी ॥ ४ ॥
देखा जाइ लोकी लोका, मिट गया धोखी धोखा ।
सोक तो पलंग पास सभी है हिरानी ॥ ५ ॥
पिया की प्रेम प्यारी, सुरत लखि थकि हारी ।
प्यारे के कदम पर धरि लिपटानी ॥ ६ ॥
पिया सुख भयो भारी, रमज चिन्हाई सारी ।
धरी धार बेनी जल लहर लखानी ॥ ७ ॥
तुलसी तन मन माहीं, मिलि जल जल जाईं ।
साईं सलिता जिमि समुँद समानी ॥ ८ ॥

(४)

एरी माई प्रीतम परस पास बस बतियाँ[1] ।
केल करत रस रतियाँ बिताई ॥ टेक ॥

---

(१) एक लिपि में "बसियाँ" है ।

अली सुरत संग कीन्हा, पिया बस रस पीना।
बहियाँ पकरि पट पलंग सुलाई ॥ १ ॥
जल भरि झारी लाई, मन मथि मेवा खाई।
रहसि रहसि पिया गले से लगाई ॥ २ ॥
सखी सुख कहा गाई, पिया की मेहर पाई।
भव की भूल सब बिधि बकसाई ॥ ३ ॥
जुग जुग सँग पाऊँ, पिया की मेहर चाहूँ।
पत सतलोक में कुटी द्वै छवाई ॥ ४ ॥
कलप कलप दुख पाई, साईं की सरन आई।
महल मझब जब समझ सुनाई ॥ ५ ॥
तपन की ताप तोरी, भव की भटक मोरी।
ओढ़ी अली अगम चीर चित लाई ॥ ६ ॥
मरन जीवन छूटा, पिया संग सुख लूटा।
प्यारी को दुलार कर अंग में लगाई ॥ ७ ॥
तुलसी अब संग साईं, आदि की चिन्हारी पाई।
सुरत बुंद सिंध मिलि समुँद समाई ॥ ८ ॥

(५)

एरी माई मौज महल सुख मेहर पिया की।
तोल बोल बकसीस लखाई ॥ टेक ॥
हुकम पुरुष पाई रचा सब सुरत जाई।
अगम लखन लखि दिल में दिखाई ॥ १ ॥
सुरत सतलोक लीजे, दस्त दसो दिस कीजे।
आली री अमल सब अंड पै कराई ॥ २ ॥
करता की कूवत नाहीं, काल न अमल पाई।
निडर निडर हम हुकम चलाई ॥ ३ ॥
सब पिंड अंड नासा, ब्रह्मंड न बचे स्वासा।
अली री अमर जुग जुग में कहाई ॥ ४ ॥

हम अबिनासी दासी, होवे न हमारी नासी ।
बसी पिया पुर पद परले न जाई ॥ ५ ॥
होवें औतारी नासी, ब्रह्मा बिसुन काल फाँसी ।
सिव नास बेद कहो कैसे न नसाई ॥ ६ ॥
परलय जुग जुग आई कलप कलप माहीं ।
तुलसी सुरत तारी घर अगम लखाई ॥ ७ ॥

(६)

एरी माई परम धाम घर बजत बधाई ।
सुरत अली उमँग प्रेम छबि छाई ॥ टेक ॥
अनहद धुन गाजे, गगन नगारे बाजे ।
सुमत सहनाई मृदु मृदँग बजाई ॥ १ ॥
झमक झाँझ कीन्हा, पलक मँजीरा लीन्हा ।
बैन बिलग मानो मुरली सुनाई ॥ २ ॥
बिरह बंधनवार कीन्हा, पोहप पदम लीन्हा ।
तोरन तत हिये हिरस हिराई ॥ ३ ॥
हिये दृग दिस लीन्हा, सुन्न की समझ चीन्हा ।
सुनि धुनि धधक धीर चित लाई ॥ ४ ॥
चकि चक चौक पूरा, लीलम पन्ना पद मूरा ।
हीरा मोती थारी भरि भरि के लुटाई ॥ ५ ॥
आरत अधर कीन्हा, दीप रचि ससि लीन्हा ।
काया में कपूर लखि जोत को जराई ॥ ६ ॥
सखियाँ सकल आईं, मन्दर मंगल गाईं ।
बेनी जल भरि कर कलस धराई ॥ ७ ॥
अगम अनंद कीन्हा, सुरति पिया पद लीन्हा ।
चढ़ि चढ़ि चीन्ह चौक लोक की कहाई ॥ ८ ॥
जाचक जनाये आई, मँगता उमंग पाई ।
तीन लोक सुख सुरत संपत उड़ाई ॥ ९ ॥

नाऊ निराकार जोती, नाँव निज नाई नौती ।
ब्रह्मा बिसुन सिव सब साइस कहाई ॥१०॥
औतारी चवर ढारी, लछमी पखाना झारी ।
तैंतिस कोट देव दानी घर धाई ॥११॥
जिमीं असमानी माया, भोग सुख दुख काया ।
सब मँग मँगता निछावर पाई ॥१२॥
आली री अनंद गाई, तुलसी हिये पिया साईं ।
बिमल बधाई सुख बरनी न जाई ॥१३॥

(७)

एरी माई मनुवाँ मोहिं अरुझावे । गो गलियन नित लावे ॥टेक॥
रैन न चैन पलक दिल[1] दौड़े माई । बौरा थिर नहिं लावे ॥१॥
गन गुन गवन भवन भरमन बस । सतगुर सबद न भावे ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ लहर बस । हर दम कहर करावे ॥३॥
बिन सतसंग रंग बिन बूड़ा माई । साईं की सरन नहिं आवे ॥४॥
तुलसी ताव भाव लखि लगे बिन । जुग जुग गोता खावे ॥५॥
मन मथ खेल मेल खुल कर आ री । जब कोई समझ समावे ॥६॥

(८)

एरी माई मन थिर थोब थिरावे, मिलि दिल दरज उड़ावे ॥टेक॥
इंद्री मन रस तजि बिरह बखाने माई, माने जाने जाईं सिर नावे ।
आवे री भगति जग जगत जनावे माई, दासी दर दीन कहावे ॥१॥
साध री संत कोइ कोइ दृग देखो माई, धाय धाय चित चरनावे ।
अपनी अपनपौ धर कर लघुताई, जाय जाय सीस नवावे ॥२॥
अस अस चाल चलेरी धरि धरनाई, पाई सोई अस अस गावे ।
आदि आदि अंत संत सब सुरत गावे, यहि बिधि बरन सुनावे॥३॥
मन री चपल पल पल चक चावे माई, धावे धावे धीर धरावे ।
सत मत तार जलद जद मन केरी, फिर फिर फहम लखावे ॥४॥

(१) एक लिपि में "दिन" है ।

गगन मगन घनघन गरजावे माई, मन मृग सुनि समभावे ।
अली अस सतगुर अदल लखाई माई, तुलसी तरक बतावे ॥५॥

(९)

अरी पत पिया की पीर खटके, अरी कोई मन मलीन हटके ॥टेक॥
बिष रस बिरह फिरत फिर फिर फस ।
दर दर द्वार द्वार पटकत अस ॥
गो रस दौड़ दौड़ नित जावे माई, भरम भूल भटके ॥ १ ॥
अरी मत मूर मरम बिन गुर मत,
प्रत ब्रत रत सत करत न कहूँ पत ।
धरत न धीर सरन स्रुत माई मन, तन सब बन अटके ॥ २ ॥
यह दिल दरद गरद पल पल दुख,
मुख मठ चलत न घर घट सठ सुख ।
अधर पै पट परदा खुल खुल जाई, लगन लार लटके ॥ ३ ॥
सीप दीप द्वार दृग चिन्ह चटकट,
सहस कँवल दल पल स्रुत सटकत ।
तुलसी तरक फरक फिर आगे जाई, पाई पिउ स्रुत रट के ॥ ४ ॥

(१०)

अरी ए गगन घन गरजे ।
सुरत समुँद सुन दरजे ॥ टेक ॥
सेत सुरख कारे पीरे दृग देख पाई ।
बिगसि बिगसि मन लरजे ॥ १ ॥
एक तो उलट पट मठ उजियारी माई ।
साईं तो मगन बन बरजे ॥ २ ॥
ताही के समय में स्रुत निरताई जाई ।
हुलसि हुलसि धुन धिरजे ॥ ३ ॥
आगे तो अकेली आली चेत के चमक चाली ।
लाली लाली झाली झीन अरुझे ॥ ४ ॥

जोत की झलक लखि पक करि प्रेम प्यारी।
अलख पलक पर सरजे ॥ ५ ॥
अरी ये गुरन कर कर समझावे माई।
नाइ नाइ घन मन मरजे ॥ ६ ॥
काल ने कराल जाल भाल में बनाई।
संत सुनाय पिया परजे ॥ ७ ॥
अली अंड खंड सारी मंड है निनारी प्यारी।
अली री अछर छर छरजे ॥ ८ ॥
भान भान कोटि कोटि छबि उजियारी माई।
तुलसी करत ऐसी अरजे ॥ ६ ॥

(११)

अरी ए अधर घर दरसे, जुग जुग जम नहिं गिरसे ॥टेक॥
सागर समझ मझ कंज में कहाई माई।
पुरुष परम पद परसे।
पिया की पदर धरि प्यारे की दुलारी जाई।
काज करो री वोही घर से ॥ १ ॥
गुरन गली री आली अगम बताई गाई।
काल अछर नहिं छर से।
नेह री अछर सर सुरत समानी जानी।
मानो री पकरि दोउ कर से ॥ २ ॥
बिन सतसँग रँग रमक चमक नाहीं।
धरो री धमक दिल डर से।
लखन लगन मन मीन मरम जाई।
पल पल जल बिन तरसे ॥ ३ ॥
तुलसी तन तलफ कलप कर मन केरी।
बंद फंद छूटे आली अरसे ॥

सार से सुरत निरत नित निरखे माई।
परख पुरुष मन थिर से ॥ ४ ॥

(१२)

अरी घन गरजे री, अब ऋतु आई सुंदर ॥ टेक ॥
उमँडि घुमँडि बिजली बन तड़पे, कड़क हिये जिया लरजे री।
घोर घटा जल थल भूम बरसै[1], करम काल कृत डरते री ॥१॥
हरियल भूमि भई कंजन पर, मन गुन उतपत सरजे री।
परलय काल जाल जम जुलमी, मरन जिवन जिव अरुझे री ॥२॥
उष्मज और अस्थावर अंडज, पिंडज सुन सब नर जे री।
बिन गुर ज्ञान ध्यान भव भरमे, फरक फहम पिया बरजे री ॥३॥
तुलसी तोल सुरत सोइ समझी, गई गगन चढ़ि घर जे री।
दृढ़ करि डोर पोढ़ करि प्यारी, डारि दिलों को दरजे री ॥४॥

(१३)

अरी घन बदरा री अब घर घाट घुमर ॥ टेक ॥
बिरह बिथा बस जस हिया हुलसे, झुलस अगिनि तन कदरा री।
पिउ पिउ प्यास आस अली रटि के,
सुधि बिन घट मानो मदरा री ॥१॥
बुधि बैराग राग तजि माती, राती रँग रस सगरा री।
मन मँझ कंज कँवल दृग दौड़ी, पोहड़ पकड़ि पिउ पदरा री ॥२॥
सूरत समझ सैल दल दोय, खोय खलक गुन झगरा री।
पाँच पचीस तीस तेंतीसा, ईस बिबस मानो मगरा री ॥३॥
तुलसी तार सिहार समझ सुन, पुनि धुन चख फल गदरा री।
सोइ सोइ सार समझ स्रु त सारँग, मिलन मूल पद अजरा री ॥४॥

(१४)

घट देखो सुरत लगाई, यह तन बीता रे बिनसाई ॥ टेक ॥
पल पल घट घड़ियाल पुकारे, अरे पट मारे काल कसाई ॥१॥

(१) एक लिपि में "भरमै" है।

यह जिव जान खान बिच राता, माता मरम न पाई ॥ २ ॥
यह जम जाल काल की बाजी, पाजी फिर पछताई ॥ ३ ॥
तुलसी तोल निरख नैनन से, बहे जग नाव न पाई ॥ ४ ॥

(१५)

गुर खोजो सतगुर प्यारा रे, अरे बँद फंद से होय नियारा रे ॥टेक॥
केवल नाँव पाव तजि पोहमी, नौमी नैन निहारा रे ॥ १ ॥
अली सम धीर गँभीर समुँद में, लख स्रुत सत मत द्वारा रे॥ २ ॥
मठ पर गवन भवन मंदर में, देखो अगम पसारा रे ॥ ३ ॥
सिष गुर गवन गिरह की बानी, मानी करो निरवारा रे ॥ ४ ॥
तुलसी तरक फरक फिर नाहीं, सब जग जाल पसारा रे ॥ ५ ॥

(१६)

वोही धारे रूप अनेका री, प्रभु देख अदेख अलेखा री ॥ टेक ॥
जिन[1] तन धारी प्यारी निरख नैन पट, जुगल जोय तन एका री ।१।
गो गुन ग्राम चाम के मंदर, सेत स्याम पर ठेका री ॥२॥
छबि निरखो छिन छिन दृग माहीं, साईं धारे बहु भेषा री ॥३॥
प्रान पती पूरत तन बासी, करम कार रुचि रेखा री ॥४॥
सो तुलसी नर तन बस गावें, सकल पसारा जेका री ॥५॥

(१७)

पूरन पद आप अडोला, वोही भव बंधन बिच डोला री ॥टेक॥
पाँच तत्त तन मन बस बासी, पहिरि प्रेम का चोला री ॥१॥
प्रीत करी पर रीत न जानी, बानी रुचि बिच बोला री ॥२॥
पाँच पचीस सखी रँग राते, माते मरम न तोला री ॥३॥
इन रस बस अपने में राखा, तुलसी तंत न तोला री ॥४॥

मलार इकताला

(१)

उड़ उड़ रे बिहंग गगन चढ़ि अटारी ॥ टेक ॥
मठ बिलोकि लोक लखन, गरजत मेघ गंग घुमर ।
परख प्रीत प्रीतम अधिकारी ॥ १ ॥

(१) एक लिपि में "निज" है ।

संग सनीप द्दगन दीप, जगमगात चमचमात।
झिलिमिलि जले जोत की उजारी ॥ २ ॥
भनन भनन भँवर गुंज, मनन मनन मृदँग यंद।
घम घननन अनहद झनकारी ॥ ३ ॥
मगन मूल कँवल फूल, अंतर हूल लख अतूल।
नील नगर स्याम सिखर पारी ॥ ४ ॥
तुलसिदास पद प्रकास, अज अकास लखि हुलास।
परन पार अधर घर करारी ॥ ५ ॥

(२)

पिउ पिउ रटो रे सुरत से पपीहा प्यारे ॥ टेक ॥
स्वाँत बुंद अधर झरत, नीर आस लखि अकास।
जिउ की प्यास अमी से बुझाई रे ॥ १ ॥
झिरमिर झिरमिर बरसत मेह, बीज बदर कर बिदेह।
अज अदीद देह से निना रे ॥ २ ॥
बने रे चौखलक खेल, पावे कोइ पलक सैल।
गुरु के बचन कहत हूँ पुका रे ॥ ३ ॥
संत सरन भये अधीन, बूझे कोइ चरन चीन्ह।
सतसँग करि मरम कूँ सिहा रे ॥ ४ ॥
तुलसी सब तरक कीन्ह, सुंदर में सबद लीन्ह।
सुरत मुरत मगन ह्वै निहा रे ॥ ५ ॥

(३)

एरी आज जियरा उमँग हिये माहीं।
पिखा सतावे धिखा न आवे।
पिया रटि रहियाँ लै की लटक ॥ टेक ॥
प्रीतम लहर चढ़ै नागिन बिष बिरह उठे।
निस दिन मोरे दिल खटके ॥ १ ॥
जल बिन मीन स्वाँत बिन पपिहा।

प्यास रटत जस पिया बिन जिया भटके ॥ २ ॥
थिर केहि भाँति करूँ पिया के बिना आली ।
नहिं आड़ पकड़ि कहूँ अटके ॥ ३ ॥
तड़फत प्रान बिकल तन तुलसी ।
भँवर चक्र बिच चित धरि धरि पटके ॥ ४ ॥

(४)

एरी ये नेहरा लगाऊँ केहि से जाई ।
गाउँ न ठाउँ जानों डगर न पावों ।
अली भटकैया घर न मिलत ॥ टेक ॥
चित ब्रत बैन कहे न काहू की ।
नीकी नहिं लागे हेली पल पल जियरा जरत ॥ १ ॥
चंदा प्रीत कमोदनि कलपे ।
बिलग होत नहिं फिर खुल फूल खिलत ॥ २ ॥
ऐसे दुख पिया प्रीत मनोरथ ।
हिया महेलो रे मोरा मन कहूँ नेक न हिलत ॥ ३ ॥
तुलसी तन मन तरँग उठत है ।
पिया बिन जिया जैसे कोल्हू तिल तेल पिलत ॥ ४ ॥

(५)

वारी ए सहेली प्यारी, आली मैं तो था रे सँग वाली ॥ टेक ॥
म्हाने दो भेद दीजे ला रे लीजे, प्या रे से मिलन नित नित कीजे ।
जिवड़ो काज म्हारो सीझै, पिया के महल चेत चाली ॥ १ ॥
अगम लखासी सुरत थारी दासी, पासी अबिनासी पूरा पद बासी ।
संत लखासी काटी जम फाँसी, मिटत सरन भरम जाली ॥ २ ॥
लागो लै लारी पैहो सुख भारी,
काढ़ो करम जारी मिलो पिया प्यारी ।
निरखो नित न्यारी दृष्टि पसारी,
अली तोल पायो निरख लाली ॥ ३ ॥

गुरमुख बानी तुलसी मन मानी, अज असमानी सुरत समानी ।
अगम बखानी मूल ठिकानी, हिये[1] हित नित प्रतिपाली ॥ ४ ॥

ठुमरी

(१)

आली अटकी सुरत अटारी, मन हठ करि हारा री ॥ टेक ॥
यह अँग संग भंग लै लटकी, सूली सरग नरक भव भटकी ।
दीन्हो सतगुर घट की तारी, चटकी मत फटक फटारी ॥ १ ॥
यह लै लार पार स्रुत सटकी, निरखा अलख आद घट घट की ।
हक लखि लागी बिरह करारी, हिये खटकी कसक कटारी ॥२॥
नौ लख खेल कला ज्यों नट की, सूरत सहस कँवल झर झटकी ।
लीला सिखर निकर नित न्यारी, दधि मटकी घिरत मठा री ॥३॥
तुलसी तोल कही तिल तट की, भई धुन ररंकार रस रट की ।
यह दस रस बस सुरत सम्हारी, पिउ पट की खोलि किवारी ॥४॥

(२)

झँझरी पिया झाँकि निहारी, सखी सतगुर की बलिहारी ।
दीन्हा दृग सुरत सम्हारी, पद चीन्हा पुरुष अपारी ॥
चली गगन गुफा नभ न्यारी, जह चाँद न सुरज सिहारी ।
तुलसी पिया सेज सम्हारी, पौढ़ी पलँगा सुख भारी ॥

(३)

सलिता जिमि सिंध सिधारी, सूरत रत सबद बिचारी ।
जहँ सुन्न न सुन्न निनारी, मत मीन महासुन पारी ॥
नहिं गुन निरगुन मत भारी, निज नाम निअच्छर भारी ।
जहँ पिंड ब्रह्मंड न तारी, तुलसी जहँ सुरत हमारी ॥

(४)

ए आली आदि अंत अधिकारी, पिया प्यारी प्रीत दुलारी ।
हम कीन्हा खेल पसारी, सब रचना रीत हमारी ॥
करता नहिं काल पसारी, हम अगम पुरुष की नारी ।

(१) एक लिपि में "पिये" है ।

ठुमरी सोई संत बिचारी, तुलसी नित नीच निहारी ॥

(५)

ए गुइयाँ पिया हम हम पिया एकी, कोइ फरक न जानौं नेकी ।
कोइ बूझै संत बिबेकी, जोइ अगम निगम नहिं लेखी ॥
जिन अटल अटारी पेखी, पिय रूप न रेख अदेखी ।
कोइ कंथ न पंथ न भेखी, तुलसी सब मारग छेकी ॥

(६)

यह सानूँ साडे बिच नाल न औंदा ।
तैडी जटी दा जोर न जाओंदा ॥ १ ॥
मैडे पत पिउ परचे पाओंदा, सब संतन की सुरत भाओंदा ॥२॥
सानूँ गुर पूरा पार दिखाओंदा, मैडी आद अजर घर आओंदा ॥३॥
तुलसी तत मत चित चाओंदा, मेरी सुरत नाम गुन गाओंदा ॥४॥

(७)

ये मैडा इसक लगा तैडी नाली, बेखदा बंदी भूल बिहाली ॥१॥
ये सानूँ साइँ दे नैन निहाली,
काटी दी मैडी जम जिया जाली ॥२॥
तैडी लहर मेहर दी ख्याली, दीदा सतगुर मैडा नाली ॥३॥
टुक प्रन पिया तुलसी पाली, मैडी सुरत अधर घर चाली ॥४॥

(८)

तुम ची पिया वटकी झाली, माझा केला काज सम्हाली ॥१॥
मेटी है जग ची भरम जाली, हम चा मन मठ ले झाली ॥२॥
म्हारी ये गुर गोष्टी चाली, ताचे डोड चे बनघू प्रतपाली ॥३॥
तुलसी नाले एक बेताली, अप ले तत तुरत सम्हाली ॥४॥

(९)

अमचे पिया कूर पकेली, तक नैन सुरत नित नेली ॥१॥
अगमन बरते चढ़ि गैली, घर अपलची सुरत केली ॥२॥
डोलेचे मारग सैली, सुरतिया चढ़ि बरते खेली ॥३॥
तुलसी झुरमट झक झेली, माझा घर करि स्त्रु त भेली ॥४॥

(१०)

ये स्वामी माली म्हाने दरसन दीद, सावली ने म्हारो कारज कीद ॥१॥
घना दीढ़े दिन धाड़े सीध, म्हा रे चित चरनामृत लीध ॥२॥
मन म्हारो बिष रस बस बीध, काटो दुख भव बन्धन जीध ॥३॥
तुलसी गुर मारग दीध, ते रे आद अमर रस पीध ॥४॥

(११)

सो म्हारी सुरत निरत अनुरागी, संतन मत मारग लागी ॥१॥
ओ आली अष्ट कँवल चढ़ि जागी, वे नौ दल सम्हाल सुभागी ॥२॥
ते रे लीधु अमर पद माँगी, दीधु पिया सुख सागर सागी ॥३॥
तुलसी तजि राग बैरागी, चढ़ि मिली जे रे पत से पागी ॥४॥

(१२)

म्हारो आठो काल करही, हकीयत गुर नाम उमरही ॥१॥
माकी तकसी सुरत पिउ परही, प्या रे पट खोलि उदर रही ॥२॥
वाली कठीहु जगत जिव तरही, गुर चीन्ह काल थाने धरही ॥३॥
तुलसी गुर चीन्ह उबरही, बिन काज न कारज सरही ॥४॥

(१३)

ये मियाँ आद अलफ है अल्ला, बूझे दुरवेस जो बिरला ॥१॥
गाफिल मिल मुरसिद मिल्ला, कर होस पकड़ करि पल्ला ॥२॥
देवे रब राह सुसिल्ला, पहुँचे खुद भिस्त अकिल्ला ॥३॥
तुलसी तलास तकल्ला, दुनिया दोजख नहिं भल्ला ॥४॥

(१४)

जैनी सोई जेन बिचारी, नौकार जपे नित झारी ॥ १ ॥
अरहंत सब साध सम्हारी, अरिया उझानँग चारी ॥२॥
लोय सब साध पुकारी, पाँचो ये नाम नौकारी ॥३॥
पद पाँच पैंतीसो लारी, स्रावग कुल खेल खुवारी ॥४॥
जाने नहिं आद अनादी, तुलसी बिन तत नहिं पा री ॥५॥

(१५)

अरी बाम्हन बैराट बतावा, ता के परे भेद न पावा ॥१॥

कहैं ब्रह्मा बेद बनावा, सब जग यह बिधि समझावा ॥२॥
इन सास्त्र पुरान चलावा, सब जगत जीव भरमावा ॥३॥
भूले भागवत मुकत सुनावा, नर मरे पर भूत बनावा ॥४॥
तुलसी सब झूठ जनावा, तन छूटे चौरासी पावा ॥५॥

(१६)

अरी बाम्हन जग रीत बिगारी, सब जीव भरम बस डारी ॥१॥
पाहन जल पूजि पुकारी, सब खान परे जिव चारी ॥२॥
ठग लोभ प्रपंच पसारी, सब जगत बुड़ाया झारी ॥३॥
तुलसी तन पेट सम्हारी, बनि बैल बहे भव भारी ॥४॥

(१७)

जोगी जन पवन चढ़ावै, इड़ा पिंगला सुखमना आवै ॥१॥
सुन सहस कँवलदल जावै, जहँ जोत निरंजन पावै ॥२॥
मुदरा तत पाँच लखावै, अली आतम आदि समावै ॥३॥
तत मत जोगी गत गावै, तुलसी पुनि काल चबावै ॥४॥

(१८)

सुन संत गती अति भारी, आली जोग जुगत से न्यारी ॥१॥
जहँ सबद न सुन्न अकारी, सुन सुन्न महासुन पारी ॥२॥
नहिं गुन निरगुन मत झारी, सत नाम पिया पद पारी ॥३॥
तुलसी निज नाम निहारी, जहँ आदि अनाम अपारी ॥४॥

(१९)

जहँ जोगी जैन न जावे, मत बेद कतेब न पावे ॥१॥
आली ब्रह्मा बिसुन न आवे, सिव तारी तत्त न लावे ॥२॥
बैराट न ठठ समावे, मुहम्मद रब राह न पावे ॥३॥
तुलसी तीथंकर गावे, आदि नाथ ऋषब नहिं जावे ॥४॥

(२०)

एरी पंथी कबीर कहावा, चौका करि जनम गँवावा ॥१॥
साहिब कबीर बतावा, सोइ चौके का भेद न पावा ॥२॥
पुरइन सुन सेत बतावा, उन करि धरती पर लावा ॥३॥

तुलसी सत पंथ न पावा, यह पंथी जात कहावा ॥ ४ ॥

(२१)

एरी ईसा अँगरेज कहावे, सब में इक ब्रह्म बतावे ॥ १ ॥
इनसाफ जो साफ सुनावे, जो गुनह करे सोइ पावे ॥ २ ॥
ये मियाँ एक अनीती भावे, जीव जिबह करै सोइ खावे ॥ ३ ॥
तुलसी तन बूझ न लावे, ये बेइनसाफ कहावे ॥ ४ ॥

(२२)

एरी बेदांत ब्रह्म बतावा, आली आतम आदि कहावा ॥ १ ॥
मन जड़ इंद्रिन सँग चावा, ब्रह्म परमहंस करि गावा ॥ २ ॥
कहैं सब हम हमहिं समावा, तन रचे तत भेद न पावा ॥ ३ ॥
करतब सब साफ उड़ावा, ब्रह्म आदि भेद नहिं पावा ॥ ४ ॥
जड़ सँग जिव गाँठ गुनावा, तुलसी जड़ ब्रह्म बनावा ॥ ५ ॥

(२३)

नानक पिया नाल निहारे ॥ टेक ॥
कहुँ जोग भोग मन लाये, कहुँ तप करि करि तन जारे ॥ १ ॥
कहुँ बैराग राग अनुरागे, कहुँ सीस जटा उर धारे ॥ २ ॥
यह लौ लाय वाह गुरु पाये, हर दम लख पिउ प्यारे ॥ ३ ॥

(२४)

आलीरी इक बात कहूँ घट की ॥ टेक ॥
सुरत इक सहर समझ मन मारग,
लखि लखि नैन निरख अटकी ॥ १ ॥
चढ़ि करि महल सैल स्रुत सारँग,
तत मत जोग झलक झटकी ॥२॥
भिन भिन तत्त ताल तट मारग, अरध उरध बिच स्रुत सटकी ॥३॥
परदे पार सार सत साईं, निरगुन बेद बरन भटकी ॥४॥
सतगुर सैल सबद चित लागे, करकी कर हिये खटकी ॥५॥
तब से चेत भया भव फीका, दुख सुख छाड़ि समझ छटकी ॥६॥
चीन्हा संत चरन सतसंगा, तब कछु जान पड़ी पट की ॥७॥

सुकिरत ज्ञान दियो सतगुर ने, सूरत चाँप चली चट की ॥८॥
सिंध द्वार पै सार लै लागी, चढ़ि स्रुत लागि लगन नट की ॥९॥
कँवला फूल मूल मत मारग, रोकी न रोक रही हटकी ॥१०॥
नित नित समझ सबद स्रुत ठीका, फूटा जस अंड काच मटकी ॥११॥
सुरत मिलाप साफ पिउ पाये, मिलि गया सबद सुरत तटकी ॥१२॥
तुलसीदास पास पिया पाये, सतगुर टेर कही टटकी ॥१३॥

(२५)

बिसरी अधर घर प्यारी रे ॥ टेक ॥
मैं चित चोर मोर मन मोटा, खोट खोट धरि धारी रे ॥ १ ॥
अंजन अलख पलक नहिं दीन्हा, छाई अधम अँधियारी रे ॥ २ ॥
संगत साध आदि नहिं चीन्हा, उरझी भेष भिखारी रे ॥ ३ ॥
तुलसी तीर गुरन लखवाई, जब देखी उजियारी रे ॥ ४ ॥

राग सोरठ

(१)

धरि नर देह जगत में कछु न बनी रे ॥ टेक ॥
आप अपनपौ को नहिं चीन्हा, लीन्हा मान मनी रे ॥ १ ॥
यह जड़ जीव नीव जुग जुग की, गहिरी ठान ठनी रे ॥ २ ॥
धृग धन धाम सोन अरु चाँदी, बाँधी मोट घनी रे ॥ ३ ॥
जोड़ बटोर किया बहुतेरा, इक दिन फना फनी रे ॥ ४ ॥
ऐसा जनम पाय कर फूले, यह इनसाफ छनी रे ॥ ५ ॥
मन तन धन कोइ काम न आवे, चाम की धाम बनी रे ॥ ६ ॥
तुलसी तुच्छ तजो रँग काँचो, साँचो नाम धनी रे ॥ ७ ॥

(२)

तेरो जग जीवन बिरथा रे, काहे तैं जियो रे ॥ टेक ॥
परमारथ परपंचन खोयो, नेक न नाम लियो रे ॥१॥
करम करूर दूर ले डारे, जग बिच जहर पियो रे ॥२॥
नीक न फीक ठीक नहिं कीन्हा, दई को दोस दियो रे ॥३॥
सतसँग में मन नेक न दीन्हा, खोटे खोट कियो रे ॥४॥

मन की मौज चौज चित माहीं, प्रेम न छाड़ि छियो रे ॥५॥
सुनि सुनि सोग रोग रस बाढ़े, पायो न ठौर ठियो रे ॥६॥
सतगुर बाक आँख नहिं सूझै, तुलसी कुंद हियो रे ॥७॥

(३)

घर सुधि भूलि भँवर में आन पर्यो रे ॥ टेक ॥
गज सुभ असुभ के रँग मद मंदा, फंदा काल कर्यो रे ॥१॥
आसा नदी बहे तट नाहीं, भारी भरम भर्यो रे ॥२॥
दिन और रैन चैन नहिं पावे, तृसना माहिं मर्यो रे ॥३॥
लोभ अगिनि धरि दीन्ह पलीती, जीता जनम जर्यो रे ॥४॥
नर तन पाय परख नहिं कीन्हा, भव सिंध नाहिं तर्यो रे ॥५॥
तुलसी ताव दाव नहिं देखा, मन की चाह चर्यो रे ॥६॥

(४)

गुर बिन बाह बदन यह योंही गयो रे ॥ टेक ॥
भव सिंध कहर लहर जल धारा, बेबस बादि बह्यो रे ॥१॥
भगति न कीन्ह साध नहिं सेवा, नर को जनम लियो रे ॥२॥
जोन जोन करमन सँग काया, कूकर काग भयो रे ॥३॥
माया ममता महिं तन खोयो, आसा अंग सह्यो रे ॥४॥
जीवन मरन जनम जुग बीता, जम को डंड सह्यो रे ॥५॥
धरि धरि देह बिनासि तन तुलसी, कबहुँ न हाय कह्यो रे ॥६॥

(५)

अरी सखी सिंध तजे कहाँ आई ॥ टेक ॥
बन बैराट ठाट जब कीन्हा, पुरुष अंस आतम तन पाई ।
तजि अली आदि तत्त बस बासा, स्वासा सरन समाई ॥१॥
जिन तन साज काज सब ठाटा, सब बिधि सुचि रुचि रुचिर बनाई ।
भइ भव काल जाल जग माहीं, वाकी सुधि बिसराई ॥२॥
अब चित चेत हेत हिये मारग, लखि लखि मत सतगुर समझाई ।
बिन गुर घाट बाट नहिं पावे, फिर फिर भव भरमाई ॥३॥

तुलसी तज मन मान मनी को, आली लख आदि स्वामी सरनाई ।
यह आली सन्त पंथ सब गावें, बिधि बिधि पन्थ लखाई ॥४॥

(६)

सुन सखी सुरत सिंध बिसराई ॥ टेक ॥
पिरथम पुरुष बूझ परमातम, ता की धुन आतम उपजाई ।
वही आतम जड़ जीव जहाना, गो गुन गाँठ बँधाई ॥१॥
पाँच तत्त तन अगिनि अकासा, पृथी पवन जल जगत कहाई ।
यह बिधि बास फाँस फस खाना, चक चौरासी पाई ॥२॥
मन मग पग मारग मत माना, इच्छा रँग सँग तरँग तुलाई ।
छिन छिन लहर कहर करमन की, पल पल उठत उठाई ॥३॥
यह बिधि पार सार सब भूली, फूली फरक न फुर सत[1] पाई ।
फट फर प्यार यार नहिं चीन्हा, लीन्हा लगन लगाई ॥४॥
बेद न भेद खेद सँग साथा, बिधि बेदांत ब्रह्म बतलाई ।
आतम ज्ञान मान मन मोटा, यह सब झूठ बताई ॥५॥
सुध सरूप आतम कर गावें, अद्वैत अज भरम भुलाई ।
अस अस कहि कहि बन्ध बँधाना, सतगुर भेद न पाई ॥६॥
अब सुन समझ बूझ दरसाऊँ, सतगुर पूर सूर सरनाई ।
उनसे राह रीत रस जाने, तुलसी तब नभ पाई ॥७॥

(७)

अरी नभ निरख नैन निरवारे ॥ टेक ॥
पार परम गत पुरुष लखावे, सत सूरत गत मनमत मारे ।
कँवला केल खेल निस बासर, तब भव उतरे पारे ॥१॥
लख सत सुरत ऐन अंदर में, मंदर महल सैल लै लारे ।
कड़कड़ कड़क बीज बिन बदरा, साह दर समझ सिधारे ॥२॥
जगमग जोत होत उजियारी, ज्यों दीपक मंदर बिच बारे ।
चढ़ि कर देख नेक हिये मारग, तत रंग पाँच निहारे ॥३॥

---

(१) एक लिपि में "फुर मत" है ।

स्याह सपेद जरद जंगाली, सुरख समझ पाँचो बिस्तारे।
ता में अधर अकास दिखाई, जा मध मध के द्वारे ॥४॥
मकर तार दृढ़ डोर लगावे, भीतर सुन धुन सबद बिचारे।
यों नित तोल बोल बिधि बानी, सूरत सुन सबद सम्हारे ॥५॥
आगे गवन भवन पद मारग, तत मत जोत न निरगुन पारे।
जहँ नहिं रंग न रूप गुसाईं, गो गत गुन न पसारे ॥६॥
अरी आली सरगुन समझ जान मन मारग,
अच्छर छर छिन छिन गुन धारे।
अच्छर ब्रह्म करम करि देही, यह सब बिधि बिस्तारे ॥७॥
निःअच्छर छर अच्छर पारा, ये गुर सँग संतन के लारे।
जिन सतगुर गम गैल लखाई, तिन तिन समझ सुधारे ॥८॥
तुलसी संत सुरत सब गावें, सबद गुरू सिष सुरत पुकारे।
ये मत मीन चीन्ह जल ऊपर, उड़ि उड़ि उलटि निहारे ॥९॥

(८)

लखो री कोई कोयल सबद सम्हाल ॥ टेक ॥
अली एरी आज अम्ब पर बैठी, बोलत बचन रसाल।
काल कराल जाल जम डारी, मारी मरम बिहाल ॥ १ ॥
सूरत समझि चलो घर माहीं, साईं समुँद निहाल।
पल पल पलक पार पद पौरी, निरखो सरवर ताल ॥ २ ॥
करि असनान ध्यान धर धीरज, पिय पद परसे[1] हाल।
चाले चीन्ह चौज लखि लागे, भागे भरम भुवाल ॥ ३ ॥
सतगुर सूर मूर समझावें, गज मुकता मन माल।
सूरत पिउ पहिराऊँ प्यार से, प्रीत पुरातम पाल ॥ ४ ॥
पिय अपनाय जाय जोइ भाखे, पिउ पिउ प्रेम पियाल।
कागा कुमति सुमति मति सारी, तुलसी तजत मराल ॥ ५ ॥

(९)

अली री कोइ गगन घोर घहराई ॥ टेक ॥

(१) एक लिपि में "परचे" है।

चढ़ि कर गगन दसो दिस देखो, धमधम धमक सुनाई ।
अली री अधर घर सुरत लगावे, पावे निरत लखाई ॥ १ ॥
पार पुकार सबद धुन बाजे, धरर मगन सरसाई ।
नौ पर नैन ऐन अंदर में, सूई में सुमेर समाई ॥ २ ॥
सागर छीर मीन मारग होय, हृय दल कँवल कहाई ॥ ३ ॥
अगम अपार पार स्रुत चाले, हाल डोल थिरताई ।
जोइ मठ मकर तार दृढ़ डोरी, पौरी पकरि दिखाई ॥ ४ ॥
धस करि धाय जाय तुलसी जो, सो सब भेद बताई ।
पिय पद पीर परस सोइ सजनी, मगन प्रीत गुन गाई ॥ ५ ॥

(१०)

मन थाँ ने बात न मानी रे ॥ टेक ॥
हीनी बुद्धि बूझ मत नाहीं, बस्तु न जानी रे ।
सत सतसंग बिमल बिध बानी, मिथ्या ठानी रे ॥ १ ॥
गुर मत बात सीख सत साखी, चित्त न आनी रे ।
कीन्ह कुसंग प्रीत मन सानी, रहो लिपटानी रे ॥ २ ॥
यह जग जीव भूल भव माहीं, भरमत खानी रे ।
तत बिधि साध संत मत छाड़े, ता से यह हानी रे ॥ ३ ॥
अब तजि भूल करो सतसंगा, कहत बखानी रे ।
जैसे मराल चाल बिधि छानी, दूध और पानी रे ॥ ४ ॥
कागा कुमति छाड़ि छल खोटे, हंस हो प्रानी रे ।
तुलसी बूझ मान मन मारे, उपजत ज्ञानी रे ॥ ५ ॥

(११)

भटक सँग राजा रानी हटक रही ॥ टेक ॥
देस बिदेस बसे मन तन में, बंधन लटक लई ।

॥ दोहा ॥

राजा गो गुन रच रहा, दया न दिल में देस ।
भेष भुलाने भूम की, ता से भयो बिदेस ॥
तज तेहि देस बसे पर भूमी, यौंमी छटक दई ॥

॥ दोहा ॥

घर सुधि बुधि गम ना रही, कही न एको बात ।
साथ समझि सुधि ना लई, सही जो जम की लात ॥
बस खस बंध संत नहिं जानी, खानी खटक सही ॥

॥ दोहा ॥

कहन कही सो ना गही, लई जो टेकै टेक ।
एक अलख लख लखन में, सो सुनि भयो अनेक ॥
लख लिख लखन अनेक कहाये, आये अटक भई ॥

॥ दोहा ॥

घर जा दिन से नीसरे, बिसरे ठाम ठिकान ।
गाँव न जाने आपनो, बस कृत करम निकाम ॥
करमन काल भाल भव भूले, फूले फटक नहीं ॥

॥ दोहा ॥

गुर मारग की गैल को, सैल न समझ गँवार ।
पार परस परदेस को, खेस कबीला लार ॥
पर परदेस देस दिस भूली, थूली थटक लई ॥

॥ दोहा ॥

रानी रमज सुनाय के, कहन कहर की रीत ।
जीत गुनन गो गिर रहो, गहो जो सतगुर प्रीत ॥
रानी समझ सीख सत पति की, सतगुर सटक कही ॥

॥ दोहा ॥

मान मरम मन मूल को, सूल सुरत सरभाव ।
नाव मिली अब चढ़न को, नर तन दुरलभ दाव ॥
तन दुरलभ मन मरम बिसारे, पारे पटक दई ॥

॥ दोहा ॥

आज अमर रस रीत कूँ, जीते चतुर सुजान ।
मान मनी मद छाड़ि के, डारे डगर जहान ॥
मान मनी मन मत पहचाने, जामे झटक दई ॥

॥ दोहा ॥

मन सूरत गुर गवन की, भवन भेद दुरबीन ।

चीन्ह चले चित चमन में, बन फुलवा लौलीन ॥
पहुँच चीन्ह चढ़ि चाल चमन की, भवना घर की कही ॥

॥ दोहा ॥

सुरत सूर पद गवन की, तुलसी तोल बखान ।
जानि जमक चढ़ि जो गहे, साधे साध सुजान ॥

(१२)

एरी मोरी सुरत रँगीली रट लावरी ॥ टेक ॥
भूली फिरे पिया पट पौरी, बौरी उत अटकाव री ॥ १ ॥
अरी रे बिदेस देस दुनिया को, गो गुन भव भटकाव री ॥ २ ॥
सतगुर सोध बोध वहि मारग, नैन निरखि घट आव री ॥ ३ ॥
गगन गुलाब लाभ बन फूले, भँवर मँदर मठ छाव री ॥ ४ ॥
तुलसी मूल मनोरथ पूरन, सूर सुमन चटकाव री ॥ ५ ॥

(१३)

एरी पिया सुरत सहेली सुधि लाव री ॥ टेक ॥
कीन्हा पिंड प्रान पहिचानो, मानो हेली बुधि बावरी ॥१॥
आठ पहर लौ लगन लगावे, पावै ठिया खुद रावरी ॥२॥
भट बट पार कढ़ो करमन से, जम से जुद्ध मचाव री ॥३॥
नर तन नवल भलो बनवे को, आज उदय तेरो दाव री ॥४॥
तुलसी तोल तजो जम जंगल, मंगल मन मुद गाव री ॥५॥

(१४)

गुंजत भँवर पोहप फुलवारी, एरी आली मधुर सुगंध करारी ॥टेक॥
नव पल्लव बन सुभग सुहावे, बिरछ बेल छबि न्यारी ।
सोभा बाग बिमल मन माली, सींचत जल हरियाली ॥ १ ॥
करम कली बिरछा बहु फूले, परमल सुगंध अधिकारी ।
प्रेम मगन मधुकर रस चाखे, पीवत चढ़त खुमारी ॥ २ ॥
मन माया तन बाग लगाया, करि काया बिस्तारी ।
भले भँवर पवर मत मारग, मूल मनोरथ सारी ॥ ३ ॥
अेली रस रंग संग सब उरझे, लिपटे झारि बिकारी ।

तुलसी तुच्छ तनक सुख कारन, घर घर फिरत भिखारी ॥ ४ ॥

(१५)

गरजत गगन गिरा धुन बानी, सुन सखि सबद निसानी ॥ टेक ॥
भूमी भोग भटक जब निरमल, मल धोवे जल छानी ।
ऊजल उमँग उठे उर माहीं, जब काई अलगानी ॥ १ ॥
खैंच कमान तीर ले ठाढ़े, गाढ़े गोसा तानी ।
अरस निसाने को लखि तोड़े, यों फोड़े असमानी ॥ २ ॥
अलख पलक में खलक समाना, सो सब बरन बखानी ।
लखि ब्रह्मंड अंड पर आँखी, खुल दृग दृष्टि दिखानी ॥ ३ ॥
धुन धधकार सुन्न में सूरत, सबद भेद पहिचानी ।
तुलसी वार पार पद पूरन, परख लखा जिन जानी ॥ ४ ॥

(१६)

कछू न सुहावे मोको पिया के बियोगी ॥ टेक ॥
बिरह की बेली हेली फैली चहुँ दिस कूँ, दरद दुखी जस रोगी ॥१॥
अस री हिलोर मोर मन आवे, तन तजि अब न जियोंगी ॥२॥
हार सिंगार सखि नीको न लागे, माहुर घोर पियोंगी ॥३॥
रैन न चैन दिवस दुख बीते, आवत नींद न औंगी ॥४॥
तुलसी तलब मिटे सतगुर से, चित धर चरन छुवोंगी ॥५॥

(१७)

अरी सखि स्वासा सिमट बटोरी, सूरत बस करि राखी ॥ टेक ॥
अपना आद अमर तजि तन तिल, मन मिल कीन्ह कठोर ॥१॥
जुगन जुगन जग भव भरमावत, धावत बंधन ठौर ॥२॥
चार लाख चौरासी धार में, फिर फिर परत बहोर ॥३॥
मन का मूल सुरत से स्वासा, आसा अंग अघोर ॥४॥
तुलसी यह तन बाट बहुर नहिं, फिर छूटत नहिं छोर ॥५॥

बिहाग

(१)

हे मुसाफिर जागो, क्या सोवत बीती है रैन ॥ टेक ॥

जो सोये तिन सरबस खोये, जागे जोइ बड़ भाग रे ॥ १ ॥
सतगुर मूल मरम घर भूले, फूले फिरत अभाग रे ॥ २ ॥
माया मोह मान गसि गाढ़े, बढ़ी कुमति की लाग रे ॥ ३ ॥
नर तन सार समझ यहि औसर, अब सब बन्धन त्याग रे ॥ ४ ॥
तुलसी तीर भीर भवसागर, हंस बसो तजि काग रे ॥ ५ ॥

(२)

काँची माटी दा तेरा कोट, मुखालिफ बास रे ॥ टेक ॥
भजन से बैर कहर उपजावत, आफत इल्लत पास रे ॥ १ ॥
बारू बदन बीत छिनभंगी, उलटी उलझत फाँस रे ॥ २ ॥
अब कर चेत अचेत अयाने, छिन छिन बीतत स्वास रे ॥ ३ ॥
पैजन बाँधि बचे कोई इन से, तुलसी सतगुर दास रे ॥ ४ ॥

(३)

तेरी इक दिन निकसे जान, कुफर कुफरान में ॥ टेक ॥
काफिर जुलम जिबह जिव करते, बिसमिल हक ईमान ॥ १ ॥
परख पैगम्बर राह सरे की, यह नहिं कहत कुरान ॥ २ ॥
अल्ला हुकम महम्मद कीन्हा, दरदमंद फरमान ॥ ३ ॥
करि हलाल बेपीर कसाई, तुलसी तक तुरकान ॥ ४ ॥

(४)

मुसलम हक ईमान, हकीकत में वही ॥ टेक ॥
दिल दरवेस गरक गाफिल नहिं, बन्दे पाक जुबान ॥ १ ॥
हरदम फहम फरक काफिर से, दूर किया कुफरान ॥ २ ॥
आठ ख्वाब रूह में आसिक, बिलकुल झूठ जहान ॥ ३ ॥
वे महबूब मियाँ अपने की, तुलसी तरक बयान ॥ ४ ॥

(५)

तेरी काँची हवेली जड़ जाँच, किवाड़े काँच के ॥ टेक ॥
काठ किवाड़ हाड़ मिलि मिट्टी, निसपत काठे पाँच ॥ १ ॥
पाँच पचीस तीन मत माते, इन संग गाढ़े गाछ ॥ २ ॥
करत किलोल मूल बिसराये, नर तन नाड़े नाच ॥ ३ ॥

तुलसी हंस होय सतगुर को, आवे न आड़े आँच ॥ ४ ॥

(६)

पढ़े कहा बाँच रे, तेरे अंदर उपजी न साँच ॥ टेक॥
पढ़ि गुन सोधि भागवत गीता, फिर जिजमाने जाँच रे ॥ १ ॥
नेमी नेम प्रेम रुपयन सों, ज्यों कसबिन को नाच रे ॥ २ ॥
पूरन होत कथा जब ऐसे, सब जुड़ बैठे पाँच रे ॥ ३ ॥
करत बिचार डंड राजन ज्यों, लूटि जगत में गाछ रे ॥ ४ ॥
मोट गरीब गरज लेने से, सुथरे दरसन आँच रे ॥ ५ ॥
पंडित मुकत करैं यों तुलसी, सो जग झूठे साँच रे ॥ ६ ॥

(७)

क्रूर सँग त्यागो रे त्यागो, अरे गुन गोतम रज सत प्रीत ॥टेक॥
यह मन मरद गरद जिमि जावे, पावे करम घर नूर ।
सखियाँ पचीस पकर परपँची, सच्ची समझ न मूर ॥ १ ॥
इन भव खानि जानि जग कीन्हा, दीन्ह दृष्टि पर धूर ।
लखन बुझाय सबद समझावे, पावत बिरले सूर ॥ २ ॥
यह मन मरक तरक जिन कीन्हा, फरक ज्ञान कर चूर ।
हूर हवाल जाल से न्यारी, प्यारी पदम जहूर ॥ ३ ॥
बिन सतगुर गम भेद न पावे, भावे भरम अपूर ।
गुर पद गवन सुरत घर अपने, तुलसी ताप तन तूर ॥ ४ ॥

(८)

कहन कोइ मानो रे मानो, अरे बिष छाँड़ि कुफर सुख चैन ॥टेक॥
यह भव सूल धूल की मोटी, खोटी खुल खुल बैन ।
कहन करार धार कर मन की, पल पल बूड़त पैन ॥ १ ॥
धन और माल काल जग जाला, पाल पकर बल देन ।
जम जग देव सेव कर पूजा, लाग आप सिर लेन ॥ २ ॥
बेद पुरान खान कुल कीता, लख चौरासी सैन ।
चर और अचर जीव सब मारे, डारे डगर निरखि नैन ॥ ३ ॥
जल पृथवी तत और अकासा, लागे पवन तत रहन ।

दुख सुख पाप पुन्न पछतावे, बूझ अगम नहिं ऐन ॥ ४ ॥
तुलसी भँवर जाल भवसागर, ज्यों जल ऊपर फेन ।
मारुत मगर मीन मुख उरझी, सुरझे गुरुमत ऐन ॥ ५ ॥

(९)

सँग कोई खोजो रे खोजो, भवजल लहर उतंग ॥ टेक ॥
सिव सनकादि आदि मुनि नारद, सारद सेस कुरंग ।
ब्यास दत्त सुकदेव दिवाने, पावत फिर फिर अंग ॥ १ ॥
स्रिंगी रिख पारासर मारे, कीन्ह काम ने तंग ।
रिषी मुनी सब क्रोध कुबुद्धी, भयो तपस्या भंग ॥ २ ॥
ब्रह्मा बिस्नु दसों औतारा, खुल खुल नच्यो अपंग ।
और जगत जिव कहँ लग बरनूँ, आसा रंग तरंग ॥ ३ ॥
तुलसी ताव दाव नर देही, सुरत गगन चढ़ गंग ।
गुंजत भँवर फूल फुलवारी, कँवल अधर लख भृंग ॥ ४ ॥

(१०)

आदि घर जानो रे जानो, सुरत सिखर पर साध ॥ टेक ॥
लख घर अधर द्वार की बातें, सभी लख ऐनक आद ।
मानस भीर धीर धर खिरकी, मूल कँवल कस बाद ॥ १ ॥
खेलन पहले पोहप से निकसी, सोचित चीन समाध ।
हान लाभ कछु बूझ न बूझी, सूझ निरख नित नाद ॥ २ ॥
अब कर जोरि डोर पद पहले, अजर आद और बाद ।
खान पान सुख चौज लौज में, कीन्ह सकल बरबाद ॥ ३ ॥
तुलसी सतगुर सरन सम्हारी, न्यारी भरम उपाध ।
सार समझ सत द्वार सिधारी, प्यारी पुरुष अनाद ॥ ४ ॥

(११)

आली री अगम लखा अबिनासी ॥ टेक ॥
खोजत अगम निगम पचि हारे, प्यारी पिया पाये पासी ॥ १ ॥
बंक नाल होय सुखमन धाई, स्वास सिमट भई दासी ॥ २ ॥
जोग जुगति गुर गत बतलाई, काटी री भवजल फाँसी ॥ ३ ॥

माया मोह भरम सब टूटा, छुटी जगत की आसी ॥ ४ ॥
निज घर घाट बाट लखि पाई, सो जग रहत उदासी ॥ ५ ॥
तुलसी तार पार परमारथ, स्वारथ सँग भई नासी ॥ ६ ॥

(१२)

सखी री वा घर के हम बासी, जहँ सके न जाय अबिनासी ॥टेक॥
अमर लोक सुख सहर सुहेला, रबि ससि दीपक चासी ॥१॥
जोग न ज्ञान ध्यान नहिं पूजा, जल थल अगिनि न स्वासी ॥२॥
पाँच तत्त बिन बदन बिहूना, रूप न रेख निवासी ॥३॥
काल कराल जाल नहिं डारे, भवजल नहिं जम फाँसी ॥४॥
तुलसी तोल अबोल यकीना, चीन्हा सतगुर दासी ॥५॥

बिहाग हंसावली

(१)

गवन किये तजि काया रे हंसा ॥ टेक ॥
मात पिता परिवार कुटंब सब, छोड़ि चले धन माया ।
रंगमहल सुख सेज बिछौना, रचि रचि भवन बनाया ॥ १ ॥
प्यारे प्रीत मीत हितकारी, कोई काम न आया ।
हंसा आप अकेले चाले, जंगल बास बसाया ॥ २ ॥
पुत्र पंच सब जाति जुड़ी है, भूमी काठ बिछाया ।
चिता बनाय रची धरि काया, जल बल खाक मिलाया ॥ ३ ॥
प्रान पती जहँ डेरा कीन्हा, जो जस करम कमाया ।
हंसा हंस मिले सरवर में, कागा कुमति समाया ॥ ४ ॥
तुलसी मानसरोवर मुकता, जुग जुग हंसन पाया ।
कागा कुमति जीव करमन से, फिर भव जनम धराया ॥ ५ ॥

(२)

प्रान पवन इक संगा रे हंसा ॥ टेक ॥
पाँच तत्त तन साज बनो है, पिरथी जल पवन उतंगा ।
अगिनि अकास भास भयो भीतर, रचि कीन्हा अस अंगा ॥ १ ॥
जब लग पवन बहे काया में, तब लग चेतन चंगा ।

निकसी पवन भवन भयो सूना, उड़त भँवर तन भंगा ॥ २ ॥
तन करि नास भास चलि जैहै, जब कोइ साथ न संगा ।
जम के दूत पूत ले जावें, नहिं कोइ आस असंगा ॥ ३ ॥
यह माया त्रिभुवन पटरानी, भच्छत जीव पतंगा ।
तुलसी पवर पार को रोके, मन मत मौज तरंगा ॥ ४ ॥

(३)

इक दिन चल जैहो रे हंसा ॥ टेक ॥

यह काया बिच केल करत है, सो तन खाक मिलाया ।
खीर खाँड सुख भोग बिलासा, यह सुख सोक समैहो ॥ १ ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, जोड़ा लाख करोड़ी ।
चलत बार कछु संग न लीन्हा, हाथ झाड़ि पछतैहो ॥ २ ॥
जो कुछ पाप पुन्न करनी के, फल फीके करवैहो ।
धरमराय की रीत कठिन है, लेखा देत भुलैहो ॥ ३ ॥
तुलसी तुच्छ तजो रँग काँचो, आवा गवन बसैहो ।
जम जुलमी जूती फटकारे, जनम जनम दुख पैहो ॥ ४ ॥

परभाती

(१)

रोय खोइ रैन सारी, प्यारी परभातियाँ ॥ टेक ॥
सुरत सुहाग चावे, नहिं सेज साथियाँ ।
हिये में हिलोर आवे, कहूँ केहि बातियाँ ॥ १ ॥
आली री अकेली हेली, और कारी रातियाँ ।
नहीं तेल महल सूना, बिना दिया बातियाँ ॥ २ ॥
कोई री अधार नाहीं, धड़कत छातियाँ ।
बिरह की लहर मैंनू, करूँ अपघातियाँ ॥ ३ ॥
तन में तरंग आवे, रहूँ केहि भाँतियाँ ।
सहूँ री बिरोग पिया, होते मर जातियाँ ॥ ४ ॥
डगर नगर घर, खबर न आतियाँ ।
बिना जाने कहो, कहाँ लिखूँ पातियाँ ॥ ५ ॥

सास ननद दुख, नित उतपातियाँ ।
ठाम ठाम ठोकरन, मारें सब लातियाँ ॥ ६ ॥
प्यारे बिना प्यारे नहीं, कोई सँग साथियाँ ।
धृग दोऊ दीदा बिन, जग तन जातियाँ ॥ ७ ॥
तुलसी सखी सोच माहीं, साईं सुरत चातियाँ ।
गुरू के लखाये बिन, परत न हाथियाँ ॥ ८ ॥

(२)

गुर गवन री भवनियाँ में कैसे कैसे जाऊँ ॥ टेक ॥
चाँद नाहीं सूर नाहीं, नाहीं कोई दुनियाँ ।
पाँच तत्त अगिन नाहिं, गगन नाहिं पौनियाँ ॥ १ ॥
ब्रह्मा नाहिं बिसुन नाहीं, देव रिषी मुनियाँ ।
निरगुन सरगुन मूल नाहीं, का की देउँ लौनियाँ ॥ २ ॥
तीन लोक सोक माहिं, काल की चबनियाँ ।
कोइ संत सूर मूर माहिं, अधर के अमनियाँ ॥ ३ ॥
तुलसी तलास पास, करत है करनियाँ ।
गगन गैल फोड़ जात, तीर ले कमनियाँ ॥ ४ ॥

(३)

सतगुर बिन ज्ञान, गई खान में जहाना ॥ टेक ॥
तीरथ और बरत न्हात, फिरत है जमाना ।
कच्छ मच्छ जल जनम, आठ पहर का अन्हाना ॥ १ ॥
सास्तर नर सार, सो ब्योहार हू न जाना ।
आतम तम रूप भूप, भवन में समाना ॥ २ ॥
ब्रह्मा बैराट नाभ, कँवल है पुराना ।
सोई बैराट मनुष, देह को बखाना ॥ ३ ॥
अगिन और अकास पवन, बास में बँधाना ।
जल थल तत पाँच, तीन गुनन में रहाना ॥ ४ ॥
उत्पत बरबाद की, उपाध कूँ न जाना ।

खोजे बिना साध, आदि अंत को भुलाना ॥ ५ ॥
नरहर बेदांत ब्रह्म, देत है लखाना ।
तुलसी तत मूल छाड़ि, पूजते पषाना ॥ ६ ॥

श्लोक

खिल कृत कृत लोभं, भोग भ्रमायं मायं ।
मधुकर कृत करमं कालकं, सृष्टि बैराट बिस्वं ॥
बेदऊ बँधायं कायं, देहा मनुष्या दुरलभं ।
तीरथं बरत दानं, जाना दृढ़ायं ज्ञानं ॥
करमं फल फूलं भोगियं, पुनि जन्म मरनं ।
माता मृत पायं, धायं जमउ मुख खायकं ॥
बीतं बिनस देहं, ज्यों मन भवरालं ।
नीरं पीरं पित पायं खानकं, चेतं दृग देखं ॥
लेखं जिवा जिव जायं, आयं भरम भूमी भायकं ।
तुलसी तत तोलं बोलं बिचारवानं, जाना स्रुत साधकं ॥

यवन ख्याल

(१)

मान मरद मिलि जाय, गरद कहुँ देख दरद है ॥ टेक ॥
मान मनी ने घनी मत फेरी, काल लिखाई करम फरद है ॥१॥
देह धरी पर नेह न जाना, संत सुमन बिन सुरत सरद है ॥२॥
तुलसिदास नर घर पहिचानो, गगन चढ़े जहँ उरध अरध है ॥३॥

(२)

पोढ़ पुखत की जान जुगत, कही मान मुकत है ॥ टेक ॥
तप जप जोग करे बहुतेरे, कोट जतन नहिं पावे सुगत है ॥१॥
नाम बिना नर पचि पचि हारे, सतसंग में मन मगन रुचत है ॥२॥
तुलसिदास तत मूल गुरन से, बिन पाये भव खान भुगत है ॥३॥

(३)

तू तेरे घट में पहिचाने ॥ टेक ॥
फटक सिला पर प्रेम परम सुख, मगन मीन मंदर मठ ध्याने ॥१॥

तकत चकोर चंद्र चित चमकत, दमकत दीप द्दगन अस्थाने ॥२॥
सुरत सुधा रस पियत अधर पर, अचवत आठ पहर पट प्राने ॥३॥
समुँद सिखर पर कंज बिराजत, अंज अबर धुन धधकत काने ॥४॥
अनहद नाद गगनगढ़ गरजत, उठत अधर में अपूरब ताने ॥५॥
सुंदर सुन्न सुमन बन पावन, मन मराल मंजे असनाने ॥६॥
मुकता चोंच चुगे गत सूरत, सो तुलसी सरवर तट जाने ॥७॥

(४)

मन गुन में गोबिंद गोपाले ॥ टेक ॥
बिंद बन बास बनो बिंदाबन, कुंज बदन जो सदा मत चाले ॥१॥
गो गोपियन सँग तन बन डोलत, इंद्रिन भोग भरमत बेहाले ॥२॥
गो बानी गिरवर धारन कर, उठत अवाज गगन तन ताले ॥३॥
कर कृत करम मित्र भये ऊधो, सूधो कठिन कुलाहल काले ॥४॥
तप करने गये बद्री आस्त्रम को, मुए मुकत धौं रहे जम जाले ॥५॥
पंडो पाँच तत्त अरजुन मन, कैरो हतन जुध रचो खियाले ॥६॥
तुलसी तोल कहे करनी को, कृस्न कुबुधि दे हिवारे गाले ॥७॥

धनासरी ख्याल

(१)

एरी आली संत चरन सुख बास ॥ टेक ॥
अंत सखी सुख नेक न पैहो, सहिहो री जम की त्रास ॥ १ ॥
भाई बंद कुटँब सुत नारी, इन सँग रहो री उदास ॥ २ ॥
यह सब समझ बूझ भवसागर, लख चौरासी फाँस ॥ ३ ॥
जुग जुग जनम धरे तन तुलसी, आवागवन निवास ॥ ४ ॥

(२)

अरी आली अपन में देखो आप ॥ टेक ॥
तैं जपने में सखी जनम बिसेखा, लेखा सुपन बिलाप ॥ १ ॥
तप तपना नहिं जोग समाधा, साधो री सूरत साफ ॥ २ ॥
दे दुरबीन चीन्ह दरबारा, धारा गंग मिलाप ॥ ३ ॥
गगन गुहा तुलसी आली ऐजे, खैंचे धनुवाँ चाँप ॥ ४ ॥

हमीर ख्याल

(१)

अरी ए परस बिन पिय के, बहु दिन बीते ॥ टेक ॥
जुगन जुगन जग जनम गँवाई, साईं समझ न सुरत चलाई ।
सुख सम्पत धन धाम भुलाने, अरस दरस रहे रीते ॥१॥
कुल परिवार कुटँब बस बाँधी, बन्धन बस तन मन अस आँधी ।
चेतन चेत हेत नहिं पाई, तुलसी तरस जड़ जीते ॥२॥

(२)

गहो रे गुर सरन मगन मन मीता ॥ टेक ॥
पिया पद सुरत निरत सँग जागो, त्यागो चुगल कुटिल जड़ प्रीता ।
परनपाल प्रभु दीन-दयाला, गगन चढ़े जोइ जीता ॥१॥
भजि भ्रम जाल काल की बाजी, पाजी जनम जगत बिच बीता ।
सत मत संत अंत नहिं पैहो, लखन लगन तुलसी कीता ॥२॥

कानरा ख्याल

(१)

नाम लो री नाम लो री, ऐसी काहे सुरत सुधि भूली री ॥टेक॥
बाद बिबाद तजो बहु बाथक, नाहक दुख सहो सूली री ॥१॥
काल कराल भुलावत करमन, भ्रम तजि भज पद मूली री ॥२॥
बीतत जनम नाम बिन लानत, चालत मेट अदूली री ॥३॥
स्वास स्वास जावे तन तुलसी, क्यों भव सिंध सँग फूली री ॥४॥

(२)

नाम वोही नाम वोही, कोइ बूझे भेद भेदी जिन जाना री ॥टेक॥
राम न सके नाम गुन गाई, संतन को दरसाना री ॥१॥
ब्रह्म राम से नाम निनारा, रामायन बखाना री ॥२॥
चौदह भवन काल केरी बन्धन, पद चौथे परमाना री ॥३॥
कोइ सज्जन सतगुर से पावे, हिये दृग दृष्टि दिखाना री ॥४॥
सूरत सिखर चढ़ी दस द्वारे, पा रे पद पहिचाना री ॥५॥
तुलसी गगन गुरू धुर धामी, सूरज किरन समाना री ॥६॥

कहरवा

(१)

प्यारी पिया नाल नगरवा ॥ टेक ॥

रवि अति अस्त रैन अँधियारी, कस कस जाहुँ डगरवा ॥ १ ॥
आवत जात राह नहिं सूझी, बूझी न बाट सहरवा ॥ २ ॥
बिजली चमक चमक जल बरखा, ठग बटपार पहरवा ॥ ३ ॥
पौरी स्याम पार परे खिरकी, जाने न देत लँगरवा ॥ ४ ॥
मधु मत मोर तोर मतवाला, धक्का देत धिंगरवा ॥ ५ ॥
लै की लहर कहर गोहरावत, जग जैसे लगत जहरवा ॥ ६ ॥
देखा भेष जोई भव मारग, झूठ जगत सिख गुरवा ॥ ७ ॥
खोजत खोज रोज दिन राती, पाखँड फैल पसरवा ॥ ८ ॥
सुरत नित समझ सोच निस बासर, मारग साथ सुसरवा ॥ ९ ॥
सूरत सहर लहर पिया लागी, रहो नहिं जात नैहरवा ॥१०॥
यहि औसर कोइ सतगुर भेटैं, पाऊँ सुरत घर गुरवा ॥११॥
तुलसी तलब तड़प हिये माहीं, खोजत प्रेम पियरवा ॥१२॥

(२)

कोई चुरियाँ लोरी गँवरियाँ ॥ टेक ॥

चुरियाँ मन मनिहार पुकारे, पार अधर घर गढ़ियाँ ॥ १ ॥
छल्ला गढ़ सुन धाम सुनरियाँ, पहनो अगम अँगुरियाँ ॥ २ ॥
फूल फूल माल दइ मलियाँ, पहनो प्रेम पियरियाँ ॥ ३ ॥
सालू सुरत सजी सिंगारा, सत मत घेर घघरियाँ ॥ ४ ॥
अँगिया अंग अंग से न्यारी, गो गुन गन बस करियाँ ॥ ५ ॥
तुलसी तेज तरस से निकली, सौदा सतगुर करियाँ ॥ ६ ॥

परबंद

(१)

सुधारें गुर स्वामी सुरत बंदं ॥ टेक ॥

में अनाथ बस बन्द गवन गुन, बिष धर सागर अबूझ अंधं ।
गुर सुनिये परम सुख दायक, सम अरूप सतगुर धुर ध्यानी बानी ॥

कर अघ हानी अस जानी, नहिं मानी मत मंदं घोर फंदं ॥१॥
तक सनाथ सतसंग सुमन मन, कहें गुर आगर नेह निखंदं ।
सिष तजिये भरम बहु बायक,
लख अलोक अंदर उर धामी स्वामी अज अन्तरजामी ।
सो अनामी निज नामी चीन्ह चंदं, तुलसी करम कंदं ॥ २ ॥

(३)

उबारें अन्तरजामी चरन सरनं ॥ टेक ॥
अज अतंत अबरन सरवन सुन, सुख दयाल दुख अघोर हरनं ॥
लघु लखिये मम बुधि बायक, तुम अनादि पद पुर उर बासी पासी ।
प्रन अबिनासी अस भासी, भव निरासी ब्रह्म बरनं तत तरनं ॥१॥
अत अनन्त गति गोप गगन हद,
मद मिलाप जद जनम न मरनं ।
खुद करिये मेरी सुद्ध सहायक,
सुरत सरोज सम सुच रुचियारी प्यारी ।
दृगन दुलारी नित न्यारी नौ निनारी,
निरत करन तुलसी संत परनं ॥२॥

लटका

(१)

आलम अजब जमाना, मजहब महबूब न जाना ॥ टेक ॥
हर दम जिगर जनून जुबाँ पै, क्या कहूँ गजब गुमाना ॥ १ ॥
दिल गरूर दोजख दुनिया यह, कायम न जबर रकाना ॥ २ ॥
सब तरीक सरियत साहिब की, कर हजो हज्ज दिवाना ॥ ३ ॥
तुलसी पाक अवाज न माने, कहता रजब दिवाना ॥ ४ ॥

(२)

गगन में लगन लगावे, मगन महबूबहिं पावे ॥ टेक ॥
चौकस चीन्ह चलो मारग को, अँग अघ अगिन जुड़ावे ॥१॥
सतसँग रमज पकड़ि मन पौड़ी, डोरी डग न बचावे ॥२॥

तीनों लोक जरत सब दुनिया, को दिल दगन बुझावे ॥३॥
करि उपकार कहें सब सज्जन, मन में जग न बसावे ॥४॥
परमारथ मन मूल न राजी, पाजी पग न चलावे ॥५॥
दुरलभ जगत जनम नर देही, येही के सँग न सुझावे ॥६॥
सीतल करि तजि तरक तमासा, आसा रँग न रँगावे ॥७॥
भूत छूत मन सँग सब के री, बैरी भगन भुलावे ॥८॥
सतगुर सूरत बाँधि जकड़ि कर, नेक चुगन कहुँ जावे ॥९॥
तुलसीदास खोलि कर परदे, घट में नगन नचावे ॥१०॥

(३)

खिलकत खोज लगावे, खलक सब मिलखत जावे ॥ टेक ॥
स्याह सुपेद सुरख अलगा रे, जब लिलकत चढ़ि चावे ॥१॥
मुरसिद महरम झलक जोत की, झिलिमिलि झलकत पावे ॥२॥
जब मारग मध मूल मुकर के, भाली भलकत भावे ॥३॥
तुलसी तिल तक मरम मजहब जब, गिरजा गिलकत आवे ॥४॥

(४)

जो गिर गगन समानी, गवन गिरजा भई रानी ॥ टेक ॥
सुरत सबद गिर बानी चढ़ि के, कढ़ कर कँवल बखानी ॥१॥
मारग मुकर महल में पैठी, बैठी अधर समानी ॥२॥
भवन भूमि भीतर कह भाखे, बोले अमृत बानी ॥३॥
तुलसी सूरत समुँद सिखर पर, पहुँची परखि निसानी ॥४॥

(५)

मैं सतगुर की दासी, अमरपुर के री निवासी ॥ टेक ॥
मोरे पिया ने मोहिं पहर पठाई, बहुत दिवस रही पासी ॥१॥
अब मोहिं नैहर नीक न लागे, निस दिन रहूँ री उदासी ॥२॥
मात पिता भैया भौजाई, परी री प्रेम की फाँसी ॥३॥
माया मोह जाल बिध बाँधी, बसी पास बुध नासी ॥४॥
अब चित चैन मोर नहिं पावे, बसूँ जाय पिया पासी ॥५॥
कहार भेज कहि डोलिया पठावो, आऊँ दीपक चढ़ि चासी ॥६॥

तुलसीदास पिया बिन प्यारी, ब्याकुल बिरह अबिनासी ॥८॥

(६)

ब्याकुल बिरह दिवानी, झड़े नित नैनन पानी ॥ टेक ॥
हरदम पीर पिया की खटके, सुधि बुधि बदन हिरानी ॥ १ ॥
होस हवास नहीं कुछ तन में, बेदम जीव भुलानी ॥ २ ॥
बहु तरंग चित चेतन नाहीं, मन मुरदे की बानी ॥ ३ ॥
नाड़ी बैद बिथा नहिं जाने, क्यों औषद दे आनी ॥ ४ ॥
हिये में दाग जिगर के अन्दर, क्या कहि दरद बखानी ॥ ५ ॥
सतगुर बैद बिथा पहचानें, बूटी है उनकी जानी ॥ ६ ॥
तुलसी यह रोग रोगिया बूझे, जिनको पीर पिरानी ॥ ७ ॥

(७)

प्रीतम पीर पिरानी, दरद कोइ बिरले जानी ॥ टेक ॥
डसत भुवंग चढ़त सननननन, जहर लहर लहरानी ॥ १ ॥
घनन घनन घन्नाटी आवे, भावे अन्न न पानी ॥ २ ॥
भँवर चक्र की उठत घुमेरें, फिरें दसो दिस आनी ॥ ३ ॥
अन्दर हाल बिहाल हलावत, दुरगम प्रीत निभानी ॥ ४ ॥
आसिक इसक इसक आसिक से, करना मौत निसानी ॥ ५ ॥
मुरदा ह्वै करि खाक मिली अब, जब पट अमर लिखानी ॥ ६ ॥
पिया को रोग सोग तन मन में, सतगुर सुधि अलगानी ॥ ७ ॥
तुलसी यह मारग मुस्किल का, धड़ बिन सीस बिकानी ॥ ८ ॥

घटवारी

(१)

घटवारी सुंदर मतवारी ॥ टेक ॥
उमँग अधर घट गठ पिउ प्यारी, चाल चमक चट चारी ॥१॥
मन और मान गिरे गुन बानी, आये हाल हटक झट भारी ॥२॥
गुर के गवन भवन पद माहीं, धाई धमक पट पारी ॥३॥
गगन मगन तुलसी तन तौला, बोल बिदित लख लारी ॥४॥

(२)

अस यारी अधर घर प्यारी हो ॥ टेक ॥

प्रीत पलँग लखि लाग लगन पैकी, मगन मीन जल लारी ॥१॥
जस पय प्रीत उफन अगिनी पै, बिन जल की रहे क्यारी ॥२॥
जैसे सोन सोहागा गारे, डारत संग गरारी ॥३॥
तुलसी ताजुब रीत प्रीत की, हित कर हेत करारी ॥४॥

(३)

गंग गगन की लगन में, मगन मतवारो ॥ टेक ॥
बेली बेल फैल बन फूली, देली डगर पग डारो ॥१॥
अलख अली री पलक बिच हेरो, फेर सुरत लख प्यारो ॥२॥
पृथी जल पवन गगन और अगनी, सगुन लार तत सारो ॥३॥
तुलसी तार यार नित परखो, नैन निरख नित न्यारो ॥४॥

(४)

अंड नगर की डगर में, मंदिर एक नियारो ॥ टेक ॥
गंग जमुन बिच बहत सरसुती, सुरत समझ लख प्यारो ॥१॥
लख और अलख पलक नहिं कोई, सोई पिया घर वारो ॥२॥
अगम निगम स्रुत नेत पुकारा, पकड़ समझि सोइ धारो ॥३॥
तुलसी आद अनाद अगम की, मगन मूल पद सारो ॥४॥

हिंडोला

(१)

हिंडोला झूलें स्रुत सँग संत ॥ टेक ॥
गरजत गगन मगन मन मारग ।
गवन पवन सननन सननन सत पंथ ॥ १ ॥
डोरी डगर नगर नित नैनन ।
मान तान तननन तननन तत तंत ॥ २ ॥
जगमग जोत होत उजियारी ।
भँवर भवन भननन भननन अली अंत ॥ ३ ॥
तुलसी बैन सैन सतगुर की ।
गगन घोर घननन घननन करत कंथ ॥ ४ ॥

(२)

हिंडोला झूले मूल पद पार ॥ टेक ॥
चंद न सूर नूर नहिं तारे ।
सबद घोर घररर घररर सत सार ॥ १ ॥
धरती न गगन पवन नहिं पानी ।
सैल सुरत सररर सररर चढ़ि चार ॥ २ ॥
कार अकार जार नहिं जोती ।
पदम झार झररर झररर लै लार ॥ ३ ॥
तुलसी तोल बोल बिधि बेनी ।
बहत नीर धररर धररर जल धार ॥ ४ ॥

(३)

अडोला डोलत स्यामा धाम ॥ टेक ॥
मगन मन गगन घोर, घननन घननन घननन ॥ १ ॥
गो गुन गठन कठिन वोही कीन्हा ।
मदन मीन मननन मननन मननन ॥ २ ॥
भय भव पोहप प्रीत मधुकर ज्यों ।
गुंज उड़त भननन भननन भननन ॥ ३ ॥
अंस बिष बेल फैल फस बीधे ।
फिरत फूल बननन बननन बननन ॥ ४ ॥
गुर घर गैल गवन सूरत लखि ।
तरँग तान तननन तननन तननन ॥ ५ ॥
तुलसी तोल बोल अनहद की ।
होत सोर झननन झननन झननन ॥ ६ ॥

(४)

अबोला बोलत घोरा घोर ।
अधर घर उठत सबद धररर धररर धररर ॥ टेक ॥
सत सत सुन धुन धार मगन ह्वै ।
गगन घोर घररर घररर घररर ॥ १ ॥

माया भँवर भेद मिट जावे ।
करम खेद भररर भररर भररर ॥ २ ॥
सूरत कड़कड़ चढ़त चटक से ।
फटत गगन चररर चररर चररर ॥ ३ ॥
काग भसुंड नीलगिर मारग ।
उड़त सुरत फररर फररर फररर ॥ ४ ॥
तुलसी परम पार परयागा ।
चलत नीर सररर सररर सररर ॥ ५ ॥

हिंडोला परज

(१)

हिंडोला सोर सुरत भई सार ॥ टेक ॥
आदि अनादि अगम गढ़ घाटी, बाट बिपट गइ पार ॥ १ ॥
घट पट खोल बोल बिधि बानी, सबद निसानी लै लार ॥ २ ॥
सिंध अगाध साध स्रुत न्यारी, निरखि परखि दृग द्वार ॥ ३ ॥
तुलसीदास पास पिया पाये, संत चरन बलिहार ॥ ४ ॥

(२)

हिंडोला हाल हिये पिय हेर ॥ टेक ॥
सतगुर चीन्ह दीन्ह दिल मारग, ज्ञान खड़्ग जिये फेर ॥ १ ॥
यह तन तोर मोर मन माया, कुबुधि काल जग जेर ॥ २ ॥
यह दिन चार लार तन संगी, पंथ अंत जम घेर ॥ ३ ॥
तुलसीदास संत सत कारज, होउँ चरन चित चेर ॥ ४ ॥

परज

(१)

सहेली आली अँखियाँ लख लाल ॥ टेक ॥
सतगुर नैन चैन चित मारग, सुरत निरत नित भाल ॥ १ ॥
चेतन चेत बीत यहि औसर, तजो भूल भ्रम जाल ॥ २ ॥
यह जग जीव पीव नहिं पावे, धृग दारुन धृग काल ॥ ३ ॥
सब चर अचर चराचर खाये, कठिन कुमति भई साल ॥ ४ ॥

तुलसी चीन्ह दीन दिल पावे, संग सो सुमत दयाल ॥ ५ ॥

(२)

सहेली आज करो सतसंग ॥ टेक ॥

तन सँग साथ हाथ कछु नाहीं, सतगुर उरध उतंग ॥ १ ॥
देहैं दीन जानि सत मारग, सुरत लार चढ़ि चंग ॥ २ ॥
डोरी डगर नगर पिय पावे, जस लख परत पतंग ॥ ३ ॥
ज्यों नर सूर पूर घन साजे, सहत तेज जस जंग ॥ ४ ॥
यहि बिधि खेत हेत पिय कारज, पल पल तड़फ तरंग ॥ ५ ॥
तुलसी जान भान भिन भावे, हिये हित परम उमंग ॥ ६ ॥

(३)

मूल ठिकाना पावे सूरत ॥ टेक ॥

चीन्ह ताहि जब डोर लगावे, दिब्य दृष्टि जब आवे ।
कहा भयो जप तप ब्रत कीन्हे, बेनी मीन अन्हावे ॥ १ ॥
त्रिकुटी ध्यान धरे कहा होई, मूल गुफा मन लावे ।
कोइ कोइ काया ब्रह्मंडे सोधे, कोइ कोइ सुन्न दृढ़ावे ॥ २ ॥
यह तो बस्तु सबन तें न्यारी, जब कोइ संत लखावे ।
गुरु बिन भूल मरम नहिं जाने, भूल भरम चित चावे ॥ ३ ॥
जब लग सिंध न्यारी नहिं दरसे, फिर भवसागर आवे ।
जौहरी सतगुर भेद लखावे, औघट घाट चढ़ावे ॥ ४ ॥
सुरत सनेह सबद सहदानी, तब लखि लोक सिधावे ।
चौका इष्ट दृष्ट के पारा, न्यारा निकट समावे ॥ ५ ॥
गगन गुरू लखि सुरत समानी, सुन्न बाइस भिन भावे ।
तुलसी संत संग जिन जाना, आपहि आप कहावे ॥ ६ ॥

(४)

मूल मिलो री चढ़ि डंडा सूरत ॥ टेक ॥

निरखो सिंध सूर परे सागर, अरध उरध बिच अंडा ॥ १ ॥
सुरत रूह तोड़ि फोड़ि पट परदे, दड़री फटा री ब्रह्मंडा ॥ २ ॥
मंजन कंज कँवल बिन बेनी, चले जल जोर अखंडा ॥ ३ ॥

स्रुत ससि सूर मूर मत न्यारी, चेत चीन्हो री मत मंडा ॥ ४ ॥
तुलसी बृच्छ बने बन चंदन, तजो अली रूख अरंडा ॥ ५ ॥

(५)

लख पिय सुरत सम्हार जाल जिया ॥ टेक ॥
तजो अरंड बास बसो चंदन, बंधन करम कशाल ॥१॥
जैसे कुधात साथ पारसै, कंचन होत निहाल ॥२॥
यहि बिधि दारू लार सँग लोहा, बूड़े न सतसँग चाल ॥३॥
अस गुरु सबद सुरत सिष मारग, लखि भये अगम अकाल ॥४॥
जिमि तखान जान पाहन से, गुर रस आयन ख्याल ॥५॥
ज्यों सुख चन्द मनी ससि सनमुख, चुवत अमीं री ततकाल ॥६॥
सुरजमुखी रबि सनमुख लावे, तत छिन अगिन प्रभाल ॥७॥
यहि बिधि संत कहें तुलसी सब, भृंगी कीट हवाल ॥८॥

पालना

(१)

निज नैन नगर सत सुरत सहेली हो भूले ॥ टेक ॥
कंज करंज कँवल के ऊपर, गुंजत भँवर भिरंग ।
संग सुरत ससि रवि के मध में, मानो गज गैंद मतंग ॥ १ ॥
गगन गिरा गढ़ चढ़ि के बानी, उठे रस रंग तरंग ।
बैन मृदंग मधुर धुन बाजे, गाजत अबर अरंग ॥ २ ॥
अमी अगम गम गैल गली में, चुइ चुइ पिवत उमंग ।
मधुकर कली कँवल के संग में, बिसरत सुधि बुधि अंग ॥ ३ ॥
तुलसी तोल बोल बिर्त बेली, सेली सुरत उतंग ।
चंग चमक चित चीन्ह चमन में, गिर गिर धधकत गंग ॥ ४ ॥

(२)

दृग दीप ललित पद बेनी हो मूला ॥ टेक ॥
द्रुम द्रुम लता बेल पर लीलम, ता पर भवन भसुंड ।
चार बृच्छ सीतल घन छाया, माया बस तन डंड ॥ १ ॥
गरुड़ गवन गुन सुन के आवे, चावत अंग अखंड ।

अंड अलख में खलक समाना, दीप सात नौ खंड ॥ २ ॥
खग-पति कीन्ह संग जग जाहर, सुन गुर गवन ब्रह्मंड ।
कुसँग पहर आठो सँग सूला, मूल न मानत बंड ॥ ३ ॥
चंदन पास बसै बन बेना[1], और सँग बसै अरंड ।
चंदन मली मूर नहिं जाना, गुन उन अपने न छंड[2] ॥ ४ ॥
तुलसी करम काल भ्रम पेले, मैले कूर कुभंड ।
यह तन बिनस बिना सतगुर के, देख मूरख मतिमंद ॥ ५ ॥

कमोद

(१)

अरे तन भग भँवर मन ।
जुगन जुगन में कठिन जगत को रे रंग ॥ टेक ॥
ज्यों कपि डोर बाँधि बाजीगर ।
पकड़ि नचावे करम कलंदर संग ॥ १ ॥
भटकत कलप कलप काया सँग ।
उड़त रसन को ज्यों बिन डोर पतंग ॥ २ ॥
कंटक काल दयाल गुरन बिन ।
बिकट गजब यह नहिं बस होत अपंग ॥ ३ ॥
जनम जनम जग भोग बिषय बस ।
पलक पलक में माया ममत तरंग ॥ ४ ॥
आसा बदन बास तन धारन ।
करत करम बस फिर फिर पावत अग ॥ ५ ॥
तुलसी मुकत मानसरवर में ।
हंस रूप होय कर सतगुर सतसंग ॥ ६ ॥

(२)

एरी कोई बूझै चतुर सुजान ।
जगत में संत सिरोमन बाक ॥ टेक ॥

---

(१) बाँस । (२) छोड़ा ।

गुर के बचन बिलोक बिमल मन ।
करत परम हित सोइ सतसँग की सूझ ॥ १ ॥
सूरत सुरग नरक न्यारी तजि ।
निरमल कारज साईं सनमुख जोई जूझ ॥ २ ॥
जग की लाज अकाज समझ जब ।
उडू[1] उदित भयो नासत तिमर अबूझ ॥ ३ ॥
द्वै पट पार फरक फुलवारी ।
लेत सुगँध गँध भँवर पोहप पर गूँज ॥ ४ ॥
मधुकर कँवल केल रस पीवत ।
अधर अमी को तुलसी सबब समूझ ॥ ५ ॥

(३)

एरी हम जब जानें सइयाँ सुघड़ खिलइया ।
चौपड़ नरद बचइयाँ ॥ टेक ॥
पवन गवन को री भवन बिचारे ।
स्रुत को समोइयाँ तत रँग तत जनइयाँ ॥ १ ॥
छानो दाव चार दिस चौकस ।
चित से चिन्हइयाँ पासे पुखत डरइयाँ ॥ २ ॥
चार बरन को री चारो सार हैं ।
चतुर चलइयाँ छक पजा दृगन दिखइयाँ ॥ ३ ॥
फूटे न नरद निरख जुग जा को ।
सार पकइयाँ तुलसी पौ दाँव जितइयाँ ॥ ४ ॥

(४)

एरी रँगरेज मिले कोइ चतुर रँगइया ।
चूनर रँग चटकइयाँ ॥ टेक ॥
सुंदर सूत सुरत का धागा ।
बुनत बुनइयाँ सतगुर से हम लइयाँ ॥ १ ॥

---

(१) चाँद ।

कोरा पोत परखि कर लीन्हा।
धोवत धोवइयाँ माड़ी साफ करइयाँ ॥ २ ॥
कुंदी करम काढ़ि कर दीन्ही।
सीवत सिवइयाँ फरिया फरक बनइयाँ ॥ ३ ॥
जेठे रंग मजीठ रँगाई।
संत लखइयाँ पिया को पहिर रिझइयाँ ॥ ४ ॥
तुलसी आज मिले यहि औसर।
जतन जनइयाँ कारीगर ने बनइयाँ ॥ ५ ॥

(५)

अरे मन ममता बढ़ी है।
या जग में बंधन डारे काल ॥ टेक ॥
काहु को धरि धरि दंत करोरत।
काहु को रंग लगाय रखत जम जाल ॥ १ ॥
काहु को माया मरोर करावत।
काहु करतब करि करम लिखावत भाल ॥ २ ॥
डगर नगर कोउ पंथ न पावत।
चावत चौबँध बाँधि करत बेहाल ॥ ३ ॥
मूल मदत धुर धाम सरोही[1]।
सोइ बाँधि सुरत सतगुर दृढ़ ढाल ॥ ४ ॥
तुलसी सतगुर संत कहत हैं।
जग बन्धन जम से सब कूट निकाल ॥ ५ ॥

(६)

अरे कोइ अमर नहीं है या तन में।
काया करम अधार ॥ टेक ॥
उपजे मरे बने फिर बिनसै।
जुग जुग बन्धन दुख सुख बारम्बार ॥ १ ॥

(1) तलवार।

आसा दुख बन्धन भटकावत।
आप अपनपौ नहिं चीन्हा करतार ॥ २ ॥
केहर[1] सुत भेड़न सँग भूला।
मन गुन इंद्रिन सँग करत बिहार ॥ ३ ॥
जब बन सिंध मिले उपदेसी।
सतगुर को मिलि भव के भरम निकार ॥ ४ ॥
तुलसी जब तब मूल परखिया।
निरमल होय लखि आवे समझ बिचार ॥ ५ ॥

आरती

(१)

आरती सँग सतगुर की कीजे, अंतर जोत होत लख लीजे ॥टेक॥
पाँच तत्त तन अगिन जराई, दीपक चास प्रकास करीजे ॥१॥
गगन थाल रवि ससि फल फूला, मूल कपूर कलस धर दीजे ॥२॥
अच्छत नभ ता रे मुकताहल, पोहप माल हिये हार गुहीजे ॥३॥
सेत पान मिष्टान मिठाई, चंदन धूप दीप सब चीजें ॥४॥
झलक झाँझ मन मीन मजीरा, मधुर मधुर धुन मृदंग सुनीजे ॥५॥
सब सुगंध उड़ चली अकासा, मधुकर कँवल केल धुन धीजे ॥६॥
निरमल जोत जरत घट माहीं, देखत दृष्टि दोष सब छीजें ॥७॥
अधर धार अमृत बह आवे, सत मत द्वार अमर रस भीजें ॥८॥
पी पी होय सुरत मतवाली, चढ़ि चढ़ि उमँग अमी रस रीझै ॥९॥
कोटि भान छबि तेज उजाली,
अलख पार लखि लाग लगीजे ॥१०॥
छिन छिन सुरत अधर पर राखो,
गुर परसाद अगम रस पीजें ॥११॥
दमकत कड़क कड़क गुर धामा,
उलटि अलल[2] तुलसी तन तीजे ॥१२॥

(१) शेर, बाघ। (२) अलल पच्छ चिड़िया जो आकाश से भूमि पर कभी नहीं उतरती।

गौरी
(१)

साँझ परे घर आवे मनुवाँ, गो गुन गाय चरावै ॥ टेक ॥
बिंद बन बंस बास बेहट में, हरि गो घास निरावै ।
सिंघ काल सिर ऊपर गाजै, नेक भरम नहिं लावै ॥ १ ॥
हिरन मिरग रोज चर चारी, जीव बचन नहिं पावै ।
मोह बस मोहन बन बन डोलै, जुग जुग जम धरि खावै ॥ २ ॥
नित नित नेह निवास बिषय से, इंद्री सँग दुख पावै ।
बंधन करम काल की फाँसी, फँसि फँसि जनम गँवावै ॥ ३ ॥
तुलसी बास तजै बरतन की, मन तन मौज उड़ावै ।
गुर का संग सदा सुखदाई, सुरत चरन पर लावै ॥ ४ ॥

(२)

प्रभु दयाल सुखदाई माई री, जिन मीन मरम मति पाई ॥ टेक ॥
प्रभु प्रभुता पत परन पिया की, छिन छिन सुरत लगाई ।
नेम निवास अकास बास की, पल नहिं सुधि बिसराई ॥ १ ॥
घर गुर गवन भवन निस बासा, स्वासा पवन नसाई ।
धरती न गगन अगिन जल जोनी, कौने उत तन जाई ॥ २ ॥
बिमल प्रकास सकल पद पूरे, सूरे संत लखाई ।
जैसे बाँस चढ़े डोरी नट, घट निसंक अस आई ॥ ३ ॥
गुर की दया साध की संगत, स्रुत सब संत दृढ़ाई ।
प्रीतम प्यार यार महलों में, तब तुलसी लखि पाई ॥४॥

(३)

अस्त भान अँधियारा, रबि रथ रैन उगे सत सारा ॥ टेक ॥
जागी साँझ भई सुन सखियाँ, अँखियाँ मुख धोय डारा ।
दीपक चास चलो मन मंदर, अन्दर करि उजियारा ॥ १ ॥
भव तम कूप रूप से नासे, भास भवन गुलजारा ।
पाई अलख पलक पर थारी, प्रान पुरुष सच यारा ॥ २ ॥
लखि लखि लगन लगी यहि भाँती, साथ गुरू कढ़िहारा ।

प्यारा परख सखी सुन सैना, तन बिच तत्त निहारा ॥ ३ ॥
अली आतम घर अधर अकासा, स्वासा संग बिचारा ।
जोगी जीत रीत कोइ जाने, माने सजन सिहारा ॥ ४ ॥
तुलसी नीर तीर सरवर में, पाता जल जग सारा ।
सासतर साथ हाथ हर घर की, बरनक बरन बिहारा ॥ ५ ॥

(४)

जो पै कोइ पावे बदन बिदेही, घट अकास लख लेई ॥ टेक ॥
अन्दर सुन्न सबद पद परखै, हरष हिये निज नेही ।
सुन धुन धधक अधिक लखि लागे, जागै जग जन जेही ॥ १ ॥
मन मत माहिं पाय पहिचाने, भवन भान स्रुत सेई ।
दसो दिस देखि दुख हेरि फटक रवि, सब ब्रह्मंड लखि लेई ॥ २ ॥
गो गुन गिरा ताक तक टूटै, छूटै आपा देही ।
पद घर परा परम पद हद में, स्रुत जहाज चढ़ि खेई ॥ ३ ॥
परम तत्त आतम के पारा, न्यारा अधर अनेही ।
तुलसी तरक फरक सतगुर की, आली अरूप अज येही ॥ ४ ॥

(५)

आली री काल करत बेहाली, तासे पार परस घर चाली ॥ टेक ॥
तत कर तेल सुरत की बाती, हाथै दीपक बाली ।
ब्रह्म अगिनि परघट करि तन में, महल करो उजियाली ॥ १ ॥
ताला खोल चलो मंदर में, सतगुर से ले ताली ।
दीन दयाल नाम है उनको, बकस देत दरहाली ॥ २ ॥
अंदर जाय अलख लखि प्यारा, इसक प्रेम प्रतिपाली ।
ज्ञान बिबेक जोग धरि ध्याना, तोड़ो जम जग जाली ॥ ३ ॥
तुलसी ताल तीर चल जावे, न्हावो करम पखाली[1] ।
निरमल नेह सेह प्रीतम को, आतम दरस निहाली ॥ ४ ॥

(१) धोकर ।

सारँग

(१)

गति को लख पावे संत की ॥ टेक ॥
लखन अरूप रूप दरसावत, अगम सुनावत अंत की ॥ १ ॥
तूल मूल असथूल लखावत, खबर जनावत कंत की ॥ २ ॥
दृढ़ करि डगर डोर समझावत, सुरत सुझावत पंथ की ॥ ३ ॥
भव भुवंग तजि पार चढ़ावत, सत मत नाव अतंत की ॥ ४ ॥
भेष भये सब साध कहावत, भाखत साख जो ग्रंथ की ॥ ५ ॥
सिष्य करे गुर घाट न जाने, तुलसी नहिं गत होत महंत की॥ ६ ॥

(२)

लगत न लाज महंत को ॥ टेक ॥
गाड़ी ऊँट अटा ले चालत, लानत ऐसे पंथ को ॥ १ ॥
चेला करत फिरत घर घर पर, आसा बास दुख अन्त को ॥ २ ॥
इंद्री सुख भोजन नित खावत, जम धरि तोड़त दंत को ॥ ३ ॥
काया बस माया सँग फूले, भूलि मूल तजि कंत को ॥ ४ ॥
बदन बनाय काया जिन कीन्हा, चीन्ह चरन लखि सन्त को॥ ५ ॥
गुर घट भान जान सिष किरनी, नभ चढ़ि मिल गुर मिंत[1] को॥ ६ ॥
कनफूका सुख बाट न पैहो, गुर चेला बहे अन्त को ॥ ७ ॥
गुर अपना गुर आदि न जाना, खानी परत परंत को ॥ ८ ॥
तुलसी किरन गगन गुर भेटत, मेटे काल दयंत को ॥ ६ ॥

धुरपद

(१)

पिरथम पद परवेस मँदर हूँ में लख न पाये।
भीतर भान निहार सन्त सार सो अपार ॥ टेक ॥
धुरहूँ ध्यान चरन परसि सो समान सत सिहार।
अति अधार प्रति बिचार पंथ पार अंतर हूँ में ॥ १ ॥

---

(१) मित्र।

मनिन जोत जगमगात चमचमात मग बिलास ।
द्दगन दीप लखि समीप मुकर हूँ पै कँवल माहिं ॥ २ ॥
सुन सरोज धमक भाल सरन परत सो कृपाल ।
तुलसिदास पद प्रकास किरन भास गगन हूँ में ॥ ३ ॥

(२)

चंद बंद बादर हूँ में, छिपत तेज प्रद प्रभास ।
स्वास सो अकास बहत, नित न जात यहिन भाँत ॥टेक॥
पवन थकत चढ़त गगन, भवन माहिं उत समात ।
लखत क्रांत उड़त भ्रांत, भँवर भनन कंद्र हूँ पै ॥ १ ॥
मँदर घोर घनन घनन, मृदुल पवन चलत सनन ।
घड़ड़ घड़ड़ घड़घड़ात, छम छमात तंदर हूँ पै ॥ २ ॥
मुरली बीन बजत मधुर, मिरदँग की टकोर धमक ।
त्रिकुट ताल तुलसी हाल, सबद घोर अंदर हूँ पै ॥ ३ ॥

(३)

हेरोइ वही सरोज पदम रुच रही रुच अन्दर ।
मंदर मठ बिलास गुर प्रकास ॥ टेक ॥
कँवल चरन चेत सरन द्दगन द्दष्टि अज अद्दष्ट ।
निरत सुरत सुन पिया हिया लखि निवास ॥ १ ॥
अधर कूप अति अनूप दमक तेज रवि करोड़ ।
पद भृङ्गी मध भव अकाल संगइ समान ॥ २ ॥
तुलसिदास लख हुलास मगन जोवत जित मिलाप ।
इत हट निरख नभ उत घट समात ॥ ३ ॥

(४)

परसत पावन जाना जोई जाना जाई ॥ टेक ॥
बिकट बंक की प्रबल बिमारी, इंगल पिंगल सुखमन में जाई ।
इत गरजत उत धधक सुनावत, बिच बिच बेन बजावत भारी ॥
अनहद ताल मृदंग मुहचँग बाजे, किंगरी संख घट माहीं ।
सरसर सननन भरभर भननन, उलटत तुलसी भव हन ॥१॥

कंज कँवल मध मंज मुकर देखा, तत रँग रमता पच रँग रत धारी ।
स्याम सेत जरद सुरख, हरिया सँग कर प्रवेस ।
गगन मगन जहाँ मन गुन गवन ॥ २ ॥
जोग जुगत से मुकत बिचारी, संत मता कहूँ और पुकारी ।
बेहद बाट ब्रह्मंड न पिंड के, अधर अलख नहिं जाई ।
मन मट मननन चढ़ि घट घननन, तुलसी तुलसी को योन ॥३॥

(५)

अगम अमल मधे सुगम बिमल देखा ।
सम सत समदा बेहद बिरद काढ़ी ॥टेक॥
अमर पवन की साँस हूँ को हन ।
मंजन चीन्हिये कहूँ करता कर है ॥ १ ॥
अधर अमी में उधर नमी में ।
सहस कँवल तामें छल ले बाढ़ी ॥
बदन जाय के तत तिलों देखे ।
अद्भुत पद पावन ले गाढ़ी ॥ २ ॥
सुरत सुमन की सबज भवन कंजन ।
अंजन कीनिये तब तुलसी गाये ॥ ३ ॥

(६)

मूर जो अंस मनोरथ दृष्ट द्वारे ।
दस रस बस इंद्री भरम भान भूले ॥टेक॥
ज्ञान गो में पंच नाथ, पाँच करम कृत अनाथ ।
सुरत धनुष चूके धामा ॥ १ ॥
सूरज ब्रह्म बिसर देस, किरन क्रांत जग प्रवेस ।
सुन्न उलटि रह्यो स्यामा ॥ २ ॥
सता ब्रह्म हरन सत, सीता विनर मत सत ।
पाँच माहँ कीन्हो बिसरामा ॥ ३ ॥
संत चरन धरन ध्यान, गगना गुर गहन ज्ञान ।

त्रिकुटी चढ़ होवे पूरन कामा ॥ ४ ॥
बन असोक जहँ निवास, लंका सीता बिलास ।
सेत बाँधि गये तुलसी रामा ॥ ५ ॥

(७)

वही जन धन है भजन, भेद बिमल बास ।
निज निवास अज अरूप, ब्रह्म पूरन परन धारन ॥ टेक ॥
गगन गुंज मन अपील, हगन दीप लख समीप ।
अधर सिस्त ससि चकोर, सुरत डोर नित निवास ।
अज अकास तकत सुरज, किरन कारन ॥ १ ॥
घोर उठत पुरुष अलख, झलक होत जोत जरत ।
बाती बिन तेल खेल, धुर पद हद अगम सैल ।
सुंदर घर अधर, दीपक मन बारन ॥ २ ॥
तेज पुंज मध उजास, किरन भास रवि बिलास ।
गंग धधक सिंध समात, सुरत सबद जस मिलाप ।
परम मूल मुकत जुगत, तरन तारन ॥ ३ ॥
कृपावंत सुमिर संत, देवें घर घुमर पंथ ।
आँखी अंदर अनूप, घट में अपना सरूप ।
तुलसिदास निकर सिखर, भरम टारन ॥ ४ ॥

(८)

सोई सम किरन है, सुरत गंग सबद संग ।
धधक नीर सिंध सम्हीर, मूल मिलन प्रति पालन ॥टेक॥
सुन्न सबद स्त्रुत मिलाप, जुगल एक होत आप ।
अधर इष्ट अज अलोक, नाम नोक परम भास ।
पद प्रकास लखन ललित, चढ़ि चालन ॥ १ ॥
अकथ आदि सम समाधि, घट अदृष्ट गुहा गूप ।
पंकज खिल बन असोक, बिहँग बास बहु हुलास ।
अमित अचल सरवर जल, तट तालन ॥ २ ॥

ताल में जहाज एक, उतर पार पंथ देख।
परख पोहप मद्ध हाल, रवि उजाल कोट क्रांत।
पुरुष कंथ उदित तेज, नभ भालन ॥ ३ ॥
पिया महल में मुकाम, प्यारी मिलन मूल धाम।
प्रिये प्रसंग उधर मेल लपट खेल, गाँठ खोल अधर बोल।
सुन्दर स्रुत रस ख्यालन ॥ ४ ॥
अटक बोल अज अडोल, समर साल अमर मोल।
खड़क खोल कर प्रयास, तुलसिदास धुर निवास।
पहुँचे कोई जहाँ न जाय जम जालन ॥ ५ ॥

(६)

एरी सतगुर से पुकार, काल तन में मोर घेर घाट लीन्हो ॥टेक॥
हिये डरपात और दृढ़ता न पकड़े हाथ।
मोह कठिन घोर फंद रूप कीन्हो ॥ १ ॥
कृपा की उमेद मौज, सुरत कीजे कुमत फौज।
क्रुर कुटिल बाट बीच दुख दीन्हो ॥ २ ॥
सोचत दिन रात जात, काहू की न माने बात।
जोर जबर डगर, जिव को न चैन चीन्हो ॥ ३ ॥
जन की फरियाद दाद, दुखित जनम है बरबाद।
मोरी अरज लरज हाथ, सबै बिधि हीनो ॥ ४ ॥
सतगुर पूरन दयाल, दीन के कृपा निहाल।
कहूँ बयान बिपत टेर, बैरी गुन तीनों ॥ ५ ॥
स्वामी संगत बिलास, चाहत नहिं और आस।
दुरमति दुष्ट अंग संग, भूल भवन भीनो ॥ ६ ॥
मेहर से बिबेक ज्ञान, सुरत ध्यान की कमान।
तेज पुरुष गगन तीर, मारो चढ़ि चीन्हो ॥ ७ ॥
गुरन के प्रसाद पुंज, घेरे सब रसक गुंज।
गैल गवन रमन राह, तुलसी रस पीनो ॥८॥

(१०)

एरी संत पंथ से निरधार पार परम पद तद रूप धारे ॥टेक॥
उनकी मत गुप्त गोप, लखन रूप में अलोप।
अजर अज कंत अंत, रीत प्रीत प्यारे ॥ १ ॥
उनके मग जुगल पाट, खुले आठ पहर घाट।
दया डगर माहिं, चाहे बिस्व को निकारे ॥ २ ॥
आवे धुर गुर अधार, पावे पट पदम सार।
लेवे लगन मगन मोच्छ, लोक द्वार पारे ॥ ३ ॥
काल की बिसात कहाँ, करम हारि बैठ रहा।
राह छोड़ि अटक तोड़ि, तुलसी कीन्ह न्यारे ॥ ४ ॥

(११)

आज तो करो री काज, मन समुँद अधिकारी।
संध को सुधारी प्यारी, लख अधारी अंतर में ॥ टेक ॥
बिषय बिस्वास साथ, हारे सब जनम जात।
खोजे कहूँ परे न हाथ, बात मूल मंतर में ॥ १ ॥
भटके सब सकल जोनि, मारग बिन करत गवन।
चेतन तन भ्रमत भवन, सरब जिव जंतर में ॥ २ ॥
आप कूँ भुलान जानि, करत भोग करम खानि।
भरमे गुर बिन निदान, निरख नेह निरंतर में ॥ ३ ॥
सूरत सुन्दर निवास, कटत काल कुटिल फाँस।
आसा निरबँध बिलास, तुलसिदास तंतर में ॥ ४ ॥

(१२)

उग्र तो उदय होत गगन गगन घोर कड़का री।
कंज को सुधारि देख दृग दीदार भवन में ॥ टेक ॥
अधर ध्यान गोप ज्ञान, मरम मूल पद पहिचान।
परम तत्त स्रुत समान, कंथ गुमठ गवन में ॥ १ ॥
सरवर तरवर तड़ाग, लीलम फोड़ा फडाक।
अंदर रस अगम चाख, सुरत रूप रमन में ॥ २ ॥

मन्दर में मराल पेख, अंदर चढ़ि चौक देख।
आगे लख ये अभेद, बेद दाह दमन में ॥ ३ ॥
उनका उनमान अंत, पावे नहिं भेष पंथ।
तुलसी कहें अगम संत, ध्यान धरत कँवल में ॥ ४ ॥

(१३)

यह आली औसर पायो पिया के लखने को।
सुरत सुधारो नूर अपनो ॥ टेक ॥
नर निरमल तन बिपत बिनासन।
सखी पिया बिन जग सुपनो ॥ १ ॥
मिल प्यारी पलटि उलटि चलो घर को।
प्यारे बिन धृग तप जपनो ॥ २ ॥
कर लो लगन मगन प्यारे सों।
हर दम नेह निरपनो ॥ ३ ॥
सुलभ लखन मन मारग पावे।
लखि मघ मेघ घुमरनो ॥ ४ ॥
स्याम सिहार सेत रवि चंदा।
तुलसी यह भेद परखनो ॥ ५ ॥

(१४)

ए सखी सोचत कहा औसर आनँद को।
गुर सँग सँध लखन लो री ॥ टेक ॥
ऊँचे री महल सैल सुख अंदर।
मंदर मूल मिलन को री ॥ १ ॥
पिया अज पोहप परम पद सूरत।
चढ़ि चल अधर दिखन को री ॥ २ ॥
सेज सँवार पार दीदन के।
हिलि मिलि अंग अगम हो री ॥ ३ ॥
तुलसी यह रैन रमन स्वामी सँग।
रँग रस चौज चखन को री ॥ ४ ॥

(१५)

अभय पद पुंज पदारथ मूल भुलाने ।
धुरपद हद परम नेम स्वामी ॥ टेक ॥
चख यह कंद लख परबन्द ।
मग में प्रेम अगम संध अपर परस निरग्रन्थ नामी ॥ १ ॥
अकह अगर निरख नगर नेह निरंतर अमर कंथ ।
अजर छेत्र भूमि भवन गवनामी ॥ २ ॥
अटल दीप सम समीप अजर आद सदर साद ।
उरध लोक मद्द एक अन्तरजामी ॥ ३ ॥
सनँद सैन अनन्द ऐन, लेख लखन में निरूप ।
अचल अन्त अज अरूप पंथ धामी ॥ ४ ॥
अमित धीर गज गम्हीर, तुलसी हरत परन पीर ।
लिपट चरन सरन गुर नमानी ॥ ५ ॥

(१६)

काया छर[१] किमाम छर मेध माया छर ।
तारे तिरगुन छर लैलो लख संत घर ॥ टेक ॥
गुपत परगट छार धरती छार गगन छार पवन छार ।
अगिनि छार नीर छार नार नर ॥ १ ॥
अंग अछर ओंकार कीन्ह सबद सृष्ट कार ।
उभै आस बदन डगर चेतन जड़ बँधि अकार ॥ २ ॥
अछर छर जगत रूप रचना रच रंक भूप ।
सागर भव कूप लहर कहर बहत अति अपार ॥ ३ ॥
निरंकार जोत संग उतपत यों कीन्ह अंग ।
आतम बस बिस्वधार बूँद भूल सिंध सार ॥ ४ ॥
पद निःअच्छर अगम अन्त बूझैं कोइ बिरले सन्त ।
तुलसी तत सुरत पँथ पावे निरख नेह निरधार ॥ ५ ॥

(१) नाशमान ।

(१७)

सेत श्याम वारो री धामन पर ॥ टेक ॥
सिमट सिमट[1] घट लावन पर, अलख अनंजन प्रेम सो मंजन ।
सुरत सुंदर मघ आवन पर ॥ १ ॥
एक देख सुन्न ख्याल अचरज अज अतीत ।
लखि लखि भास समावन पर ॥ २ ॥
अगम घोर सबद सोर तुलसी धाम धारे ।
धुन धुन काका बप बनावन पर ॥ ३ ॥

(१८)

ए भौंरा तोकूँ मैं हटकत तू नहिं मानत कहन मोर ॥ टेक ॥
पोहप बास फूलन पर राजी, रस बस तन सँग करम घोर ॥१॥
बीत गई वाकी बिसरानी, थाको है दस इंद्रिन को जोर ॥२॥
जुग जुग जनम गयो रस पीते, बीते नर घर कियो न ठौर ॥३॥
तुलसी यह तोर मोर की बूटी, छूटत नहिं तन मन को छोर ॥४॥

संगीत

सुन समता लख लोजिये, सुंदर मूल मशल मधुर धुन ।
सबद सिंध स्रुत नाद बिंद से, हारी हाहा पापा जानी ।
आनी आपा थापा गा ॥ टेक ॥
ज्ञानी बानी नीथापा, धीधा धानी आपा ये ।
भरमत भूप भननननन, झा किड़कत झुम किड़कत ।
झाझुम किड़कत, झुमकिड़ से तलमता ॥ १ ॥
लै लइ साथ लै लइ साथ लै लइ साथ सननननननन ।
होतक हग होतक हग हग हग हारी हूहूताका ।
सुन अरूप तुलसी की संध से, पद परबंद उर लाय लीजिये ।
साकिड़तक कुमकिड़तक काकुमकिड़तक ।
कुमकिड़ हे तलामता ॥ २ ॥

---

(१) एक लिपि में दूसरे "सिमट" की जगह "सृष्टि" है ।

फुटकल

सोहागिन सुन्दरी, तुम बसहु पिया के देस ॥ १ ॥
नैहर नेह छाँड़ि देवो री, सुन सतगुर उपदेस ॥ २ ॥
कोटि करो इहाँ रहन न पैहो, क्या धनि रंक नरेस ॥ ३ ॥
प्रभु के देस परम सुख पूरन, निरभय सुनत सँदेस ॥ ४ ॥
जरा मरन तन एक न ब्यापै, सोक मोह नहिं लेस ॥ ५ ॥
सब से हिल मिल बैर बिसन[1] तज, परम प्रतीत प्रबेस ॥ ६ ॥
दम पर दम हर दम प्रीतम सँग, तुलसी मिटा कलेस ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

पद्मसागर

तुलसी साहिब का

—:०:—

॥ दोहा ॥

प्रथम करूँ गुर बन्दना, सतगुर धुर अस्थान ।
बिध बखान तुलसी कहो, चरन कँवल को ध्यान ॥
कर प्रनाम हिरदे कहे, तन मन तोल बिचार ।
मोहिं अधार तुम चरन को, तुलसी बारम्बार ॥

॥ सोरठा ॥

परन मोर प्रति प्रति यही, सुख हिये हरख बयान ॥
बचन सुने निरधार मुख, उर अधार गुर नाम ॥

॥ चौपाई ॥

गुर कृपाल तुम्हरा जस गावों । अस हिरदे को दास बनावो ॥
दयासिंध सागर सुखधामी । मैं सेवक तुम चरन नमामी ॥
तुम स्वामी मैं किंकर चेरो । मोहिं पर कृपा सुरत मुख हेरो ॥
मैं अति दीन दयाल तुम्हारो । स्वामी सब निज काज सँवारो ॥
बिनय करों तुम समरथ दाता । पावे नहिं गति बरन बिधाता ॥

(१) मनोकामना, बुराई ।

तुम्हरे मरम बेद नहिं पावे। फिर आगे को नेत सुनावे ॥
एक बयान बचन सहदानी। पूछौं कहो संधि सब छानी ॥
पुरुष लोक सब संत बतावें। जहँ की राह मुकत नहिं पावें ॥

॥ दोहा ॥

सतसँग में सतगुर कही, बरन सुनाये बैन।
देस अगमपुर धाम की, संत लखावें सैन ॥

॥ छंद ॥

पद पुरुष लोक अलोक में, जहाँ मोच्छ मारग नहीं ॥
ऐसी कहें सब संत मिल, सुन मोहिं बड़ी अचरज भई ॥
स्वामी कहो वहि लोक सूरत, संत मत मारग गई ॥
उनको कहो बरतंत पूरन, परम सुख उपजे सही ॥
बरनन करो वहि देस निज के, निधि निरख सूरत रही ॥
घर घाट बाट बिलास तुलसी, येही हरख हिरदे कही ॥

॥ दोहा ॥

पंथ राह वहि देस की, स्वामी कहो बरनाव।
मँजल महल चढ़ कस गई, सूरत संध प्रभाव ॥
सुन हिरदे तुलसी कहे, सन्त सुरत की राह।
हिये अकास मध कँवल में, सहजे आवे जाय ॥

॥ सोरठा ॥

पद सरोज तट मूल, घट प्रफूल पंकज खुले।
तजिहो हंस अस्थूल, दल अतूल गुर कंज में ॥
जिन जो सतगुर संध, पद प्रबन्द पूरन दियो।
रह्यो पदम गुर छाय, धुर अकाय सतगुर मिलें ॥

॥ दोहा ॥

सतगुर सन्त अतंत है, मिले न उनका अंत।
लखै तंत तुलसी कहें, पदम पार पर पंथ ॥

(हिरदे वाच)

॥ चौपाई ॥

यह स्वामी मोरि समझ न आई। खुल कर कहो भेद अरथाई ॥

पद सरोज पर बाट बताई। घट पंकज फूले केहि ठाईं ॥
कैसे तज्यो हंस असथूला। गुरू कंज कस मिले अतूला ॥
पदम कहाँ कहो सतगुर बासा। निरबन्धन कहो भेद खुलासा ॥

(तुलसीदास बाच)

तुलसी हिरदे समझ यह झीनी। पावे कोइ लख परख प्रबीनी ॥
यह सुन समझ सहज में नाहीं। सतगुर कृपा संत के माहीं ॥
जब वह सुरत संध लखवावें। तब कुछ बात समझ में आवे ॥
बिना दृष्टि सतगुर की भाई। नहिं कोइ नेक समझ में आई ॥

॥ दोहा ॥

पदम् सार सागर सुनो, बेहद बचन बयान।
ज्ञान उदै हिये में उठे, सुन हिरदे निज कान ॥

(हिरदे बाच)

॥ दोहा ॥

हिरदे उमंग उर में भई, स्वामी तुलसीदास।
निज निवास घट में कहे, सो कहो बरन बिलास ॥
चरन बंद गुर सरन में, हिरदे बारम्बार।
पदम सार सागर कहो, निज निरनै निरधार ॥
अंत तंत तुलसी सभी, बेहद लोक लखाव।
संत धाम निज नाम का, भिन भिन अज अरथाव ॥

॥ दोहा ॥

हद हद सब मत में कहे, बेहद कहे न कोय।
बेहद बाक अतंत कूँ, बरन सुनावो मोहिं ॥

॥ दोहा ॥

आदि अजर अदभुत कथा, जथा संत के बैन।
कहन कहो समझाय के, स्वामी सुनत सुचैन ॥

॥ छंद ॥

हिरदे कहे सुख-धाम स्वामी, बरन बेहद की कहो ॥
कहो आद अकथ अनाद अदभुत, बचन सुन सरवन गहों ॥
मो को कहो पद लोक मारग, पुरुष बिन दुख सुख सहों ॥

वहि पुरुष का कहो नाम निजके, सरन ह्वै किंकर रहों ॥
कहें संत वह बेअंत स्वामी, कंथ सोइ तुलसी चहों ॥
हिरदे हिये जब हरख उपजे, पिव परख छूटे अहों ॥

॥ चौपाई ॥

सुन हिरदे वह पुरुष निनारा । जो कहें संत निरंजन पारा ॥
निरगुन निराकार नहिं जोती । जब नहिं बेद कतेब न पोथी ॥
है अकाल जहँ काल न जावे । सो घर संत बिना नहिं पावे ॥
सतगुरु की जब बानी बूझे । जब कछु रमक नैन से सूझे ॥
सबद ब्रह्म अच्छर है भाई । सोइ निरगुन निज ब्रह्म कहाई ॥
अज अचिंत यहि को बतलावा । सत्त पुरुष इन पार कहावा ॥
जहँ निरगुन सरगुन नहिं कोई । सो पद संतन सरन समोई ॥
अज निरभय कोइ कहे अचिंता । इनके पार कहें सोइ सन्ता ॥

॥ सोरठा ॥

अज अचिंत गुन निरगुन से, न्यारा मूल मुकाम ।
स्याम सुरत चढ़के चली, अली अजर अस्थान ॥

॥ दोहा ॥

गगन मँडल मूरत तजी, सूरत सिखर समान ।
पान निरख निज नैन से, पहुँची अधर अमान ॥

॥ चौपाई ॥

यह निरगुन मत मारग गावा । त्रिकुटी चढ़े भेद जिन पावा ॥
प्रानायाम जोग को साधे । सो जोगी यह पद आराधे ॥
ओअंकार सबद के माहीं । जहँ जोगी सुर्त पवंन चढ़ाई ॥
मन इंद्री गुन तीन पचीसा । इनको पकड़ कीन्ह बस ईसा ॥
जब हिरदे बोले सुन स्वामी । मन की कला अगम कहे बानी ॥
सूरत नेक टिकन नहिं पावे । मन को थिर कर पौन चढ़ावे ॥
सुरत गैल गइ कहो प्रसंगा । मन खेले रस बस बहु रंगा ॥
तुलसी स्वामी अचरज आवे । मन की कला कहो कस पावे ॥

॥ दोहा ॥

पवन सुरत गइ भवन कर, निरगुन भवन समाय ।
कहन कहो वहि पार की, कौन सुनावे आय ॥

॥ छंद ॥

स्वामी स्रुत गैल गई गवनं, सो भई भिन भाख कहो जवनं ॥
मन की तत गाँठ खुली कवनं, सो डुली नहिं जान भली भवनं ॥
मन चंचल चातर[1] है मवनं, सो बहे बहु भाँत फिरे धवनं[2] ॥
रस रँग में अंग करे दवनं, सो डरे नहिं नेक जरे नवनं ॥
जोगी सब हार चढ़ा पवनं, सो निहार बिचार थके तवनं ॥
सत के सँग नेक बसे लवनं, तुलसी फिर भास बिषे खवनं ॥

॥ दोहा ॥

बिष मलीन बस पग रह्यो, आठ पहर रस चाहि ।
पल मन मंदर ना थिरे, फिरे जो गोगुन माहिं ॥
मन अपंग हूए बिना, केहि बिध सूरत जाय ।
अज अकाय कैसे मिले, तुलसी कहो सुनाय ॥

॥ चौपाई ॥

मन थिर होय न कोट उपाई । संत कृपा थिर सुरत लखाई ॥
बिना संत नहिं अंत थिरावे । कोटिन जोग समाध लगावे ॥
ब्रह्म ज्ञान ज्ञानी करि थाके । उनहूँ मन थिर करि नहिं राखे ॥
बाच ज्ञान कहि ब्रह्म बतावें । पढ़ बेदांत बचन समझावें ॥
ब्रह्म गती कोइ साधन पाई । सूरत चढ़ दस द्वारे आई ॥
फोड़ ब्रह्मंड जब गगन समाने । यह वह एक बिदेह कहाने ॥
उलटि चढ़े सोइ ब्रह्म कहाई । बिन उलटे यह मान बड़ाई ॥
जग पूजन को बड़े कहावें । फिर बन्धन कृत करम समावें ॥

॥ दोहा ॥

मन थिर कर जाने नहीं, ब्रह्म कहें गुहराय ।
चौरासी के बन्द में, फेर पड़ेंगे आय ॥

---

(१) चतुर । (२) दौड़ता ।

ब्रह्म अकाय जाने बिना, काया मन गुन माहिं ।
संत चरन बिन बाद यह, भँवर सिंध रस खाय ॥

॥ चौपाई ॥

जड़ चेतन की गाँठ न छूटी । जोगी पवन चढ़ावें झूठी ॥
दीप नगर सूरत रहि बाँधी । सो बिन सुरत पवन को साधी ॥
मन थिर रहे न स्रुत बिन डोरी । यह मन थिर बिन सुरत बहोरी ॥
काया करम बन्ध बस आया । यों नहिं पाये देस अकाया ॥
गाँठ खुले पर ब्रह्म निहारे । मन जब थिर है सुरत सम्हारे ॥
छूट सुरत जब मन थिर पावे । जब जोगी मन पवन चढ़ावे ॥
सन्त दया बिन सुरत न छूटे । जोगी पकड़ पकड़ जम लूटे ॥
सुरत संध संतन के पासा । संत संध से करे खुलासा ॥

॥ दोहा ॥

जड़ चेतन में स्रुत बँधी, सतगुर हाथ उपाय ॥
चरन गहे पंकज खुलें, सूरत सदर समाय ॥
सुरत पवन मन ले चढ़ी, गई गगन के माहिं ॥
निरगुन भवन निहारि के, मुक्त पदारथ पाय ॥
मुक्त सिरोमन पाइ के, छूटे तन मन धाम ॥
बहुर भरम काया धरे, मन अरिष्ट के काम ॥
ज्ञानी ध्यानी जोग तप, ब्रह्मचार बैराग ॥
परमहंस ब्रह्म कर कहें, गुन इंद्री मन लाग ॥
मन मलीन जड़ गाँठ में, चेतन बेबस माहिं ॥
कहो ब्रह्म कैसे भया, झूठी कहत सुनाय ॥
यह सब मन मारग गये, संतन कही बिचार ॥
निज निरधार की राह को, कोई न सुरत सिहार ॥
ब्रह्म राम से नाम बढ़, रामायन के बाक ॥
सोई नाम संतन कहा, तुलसी सूरत ताक ॥

॥ चौपाई ॥

जब हिरदे बोले सुन स्वामी । नाम भेद कहो अंतरजामी ॥

ब्रह्म राम से नाम निनारा । अस भाखो तुम बचन बिचारा ॥
कहो वह पुरष नाम निरधारा । बिध बिध सुनो वार और पारा ॥
राम नाम सब जगत पसारा । तुम कहे ब्रह्म राम से न्यारा ॥

(तुलसीदास वाच)

सुन अस्थूल राम मन माया । वह पद नाम बिदेह अकाया ॥
तीन लोक से नाम निनारा । सो जाने सतगुर का प्यारा ॥
लोक तीन तज चौथे माहीं । सो सतगुर पद नाम लखाई ॥
जपने में कोइ भेद न पावे । सतगुर सूरत संध लखावे ॥

॥ दोहा ॥

नाम नोक गुपते कही, नहिं कोइ जाना भेद ।
सन्त परख परबीन कोइ, उन लख नाम अभेद ॥
नाम बिदेही जब मिले, अंदर खुलें कपाट ।
दया सन्त सतगुर बिना, को बतलावे बाट ॥

॥ चौपाई ॥

अब बिदेह का सुनो बिचारा । वह है नाम रूप से न्यारा ॥
तीन लोक चौथे पद पारा । सो अनाम बेहद्द अपारा ॥
अदभुत आद अनाद न कोई । जब वह पुरुष नाम नहिं होई ॥
अब कहूँ मंजिल मूल दरसाई । सो सुन हिरदे चित्त लगाई ॥
बाट घाट बरतत बताऊँ । पंकज फूल राह जेहि ठाऊँ ॥
हंसा तजे देह अस्थूला । जीवत मिले कंज गुर मूला ॥
यह पहले पूछा बरतंता । सुनो बयान कहूँ अरथंता ॥
सत सिरोमन बोलें बानी । सो अब हिरदे कहों सब छानी ॥

॥ दोहा ॥

अकथ अलौकिक लोक कूँ, बरन बतावें सत ।
और अंत पावें नहीं, सतगुर धुर पुर पंथ ॥
पिरथम परमट घाट पै, नाव लगावे जाय ।
जीव जगात चुकाइ के, सूरत देयँ पठाय ॥

॥ चौपाई ॥

नाली नगर कगर इक भारी । जहँ चढ़ सके कोइ सूर करारी ॥
बज्र किवाड़ बाट में लागे । सूरत खड़ी जाय नहिं आगे ॥
व्हाँ बैठी नटखट इक नारी । आठ पहर चौकस अधिकारी ॥
नगर माहिं कोइ धसन न पावे । जो कोइ जाय उलट बगदावे[1] ॥
सतगुर की कोइ छाप बतावे । सो वोहि पार निकर के जावे ॥
संत मोहर मारग में देखे । जाय सुरत सोइ निरख बिबेके ॥
सूरत सिखर पार चढ़ जाई । वहँ पंकज फूले सुन भाई ॥
हंस देह तज होय निनारा । मिले कंज गुर पदम अधारा ॥

॥ दोहा ॥

सेत कँवल ऊपर चढ़ी, छूटी चेतन गाँठ ।
जड़ जूड़ी अलगाय के, चढ़ी अगम की बाट ॥
तैं पूछा बरतंत सोइ, बिध बिध कही जनाय ।
अब आगे की गैल को, बरनन कहौं सुनाय ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहे समझ समझाई । अब आगे कहो बरन बताई ॥
तुलसी कहे सुनो सुख बैना । हिरदे समझ लखो यह कहना ॥
जब धस कर गइ सूरत आगे । परबत एक देख वहि जागे[2] ॥
चढ़ना बिषम बाट वहि ऊपर । देखा जहाँ रहे इक सूकर ॥
मोहिं को देख झपट कर दौड़ा । भागेउँ पुरुष एक जहँ पौढ़ा ॥
पुन धधिकार दई फटकारी । चढ़ परबत पर गई अगाड़ी ॥
ऊपर सिखर गुफा इक देखी । भीतर धस कहा कहौं अलेखी ॥
अति दृग सुंदर सैल बिसाला । निपुन पुनीत जहाँ इक ताला ॥

॥ दोहा ॥

अचवन जल कर तुर्त में, चली तट पार किनार ।
भीतर देखी अजब गति, बाग बनी फुलवार ॥
भीतर देखी अजब गति, बाग बनी फुलवार ॥
बाग सैल कीन्ही सभी, बहुर कहा कहौं बात ।

(१) भुलावे, धोखा दे । (२) जगह ।

सुत लुभाय रहि पोहप पर, रस सुगंध के साथ ॥

॥ चौपाई ॥

पोहप माहिं से उठी अवाजा । आये कहा कौन केहि काजा ॥
कौन देस नृप के सुत होई । भाखो बरनि सुनाओ सोई ॥

(कुरमसैन बाच)

उदेनगर निज धाम कहाई । रानी कँवला पती सोहाई ॥
अब आगे भाखौं सुन माहीं । भानप्रताप पिता मम आहीं ॥
पोहप नगर के आद निवासी । सत्त सलीप रानी नृप दासी ॥
ता सुत आद चरन निज दासा । पिता दरस उपजी अभिलाषा ॥
खोज किया पित दरसन पाया । पुनि मैं बाग सैल चलि आया ॥
पोहप सुगंध जो अधिक सुहाई । लपट रह्यो स्वामी यहि माहीं ॥

॥ दोहा ॥

जब अध्यानी पुरुष सुन, कुरमसैन के बैन ॥
उठी अवाज मधि पोहप से, आजा लखो अनैन ॥

॥ सोरठा ॥

कुरमसैन कहे पुरुष से, आजा अजर निवास ॥
कहो बास वहि धाम को, मारग अभय अवास ॥

॥ इति ॥

—: o :—

तुलसी साहब का जीवन चरित्र शब्दावली भाग १ में छपा है या संत महात्माओं के जीवन चरित्र संग्रह नामक ग्रंथ में पढ़ें ।

यह ग्रंथ हर एक लिपि में इतना ही दिया हुआ है जिससे जान पड़ता है कि महाराज तुलसी साहिब ने इसे पूरा नहीं किया ।